इलाहाबाद का शैक्षिक विकास

(1947-1997)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

की

डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

UNIVERSITY OF ALLAHABAD
QUOT RAMI TOT ARBORES

शोधार्थी
शशांक पाण्डेय

शोध निर्देशक
प्रो० चन्द्रप्रकाश झा

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

१९९९

विषय - सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना		
पृष्ठ भूमि-उत्तर प्रदेश एवं भारत में बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में ।क्षिक विकास	-	1-24
प्राथामेक शिक्षा	-	25-44
माध्यमिक शिक्षा भाग-1	-	45-74
माध्यमिक शिक्षा भाग-2	-	75-103
उच्च शिक्षा	-	104-145
संस्कृत, ईसाई व मुस्लिम शिक्षा	-	146-176
उपसंहार	-	177-186
ग्रन्थ-सूची	-	1-6

प्रस्तावना

महर्षिभारद्वाज की तपोभूमि, महाराज हर्ष की दान भूमि, महामना प मदनमोहन मालवीय जी महाराज की जन्मभूमि और गगा यमुना की पावन-सगम-स्थली प्रयाग नगरी, माँ सरस्वती का वरदान, भारतीय सस्कृति के जीवन्त प्रतीक और विद्या के वट वृक्ष की तरह प्रयाग ज्ञान की अमर ज्योति स्वरुप स्थित है। यहाँ सदियों से शिक्षा व ज्ञान की पीयूष धारा बह रही है, जिसका पान अनगिनत ऋषियों, मनीषियों व विद्वानों ने किया है।

अपने शोध प्रबन्ध मे मैंने इलाहाबाद में चल रही विभिन्न प्रकार की उन सभी शिक्षाओं के बारे में चर्चा की है, जिनसे शहर व समाज का भविष्य में सही दिशा में विकास सम्भव है। इसी प्रकार मैंने प्राइमरी व माध्यमिक विद्यालयों में भी उन्हीं की चर्चा की है, जिससे शहर के अवसतन सभी विद्यालयों की वस्तु स्थिति के बारे में जानकारी मिल सके।

यद्यपि यह एक बहुत बडा कार्य था और मेरे लिए सर्वथा असम्भव था। किन्तु इस कार्य के समापन पर मैं अपने शोध निर्देशक परम पूजनीय, सदाकल्याण कारी महामना प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश झा का अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके कुशल निर्देशन में यह कार्य सम्पन्न हुआ। मैं आभारी हूँ अपने विभागाध्यक्ष तथा विभाग के उन सदस्यों का जिन्होंने मुझे उत्साहित किया।

शोधकार्य चूँकि अत्यन्त जटिल एव श्रम-साध्य कार्य होता है और इसे अकेले कर पाना असम्भव होता है। अपने शोध कार्य के समापन पर मैं अपने बाबा चिर स्मरणीय स्वाधीनता सेनानी स्व0 श्री शिवनाथ पाण्डेय व अपनी दादी स्वर्गीया श्रीमती जयराजा देवी के आशीर्वाद का पात्र हूँ। मेरे जीवन में सदा प्रेरणा के श्रोत रहे मेरे पिता डा0 खेमराज पाण्डेय व माता श्रीमती सुशीला देवी का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे दैवी प्रेरणा प्रदान की तथा मेरे सभी भाइयो एव बहनों का सहयोग मिला। एक शोध प्रबन्ध के पीछे प्रत्यक्ष्य तत्वो के साथ अनेक अप्रत्यक्ष सहयोगी भी

होते है। इसलिए अपने इस कार्य के सफलता पूर्वक समापन पर मैं प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अनेक लोगों का आभारी हूँ।

शोधकार्य जैसे कार्य मे पुस्तकालयों की अहम भूमिका होती है। मैं इस सम्बन्ध में अनेक पुस्तकालयो, सस्थानों तथा इलाहाबाद के लगभग सभी शिक्षण सस्थाओं, का आभारी हूँ। इनमे से प्रमुख हैं, इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय, केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय, इलाहाबाद, गोविन्द वल्लभ पत सामाजिक शोध संस्थान, झूँसी, तथा इलाहाबाद के सभी पुस्तकालयो का मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

अन्त में जैसा कि मैंने पहले कहा कि यह कार्य मेरे लिए अकेले पर पाना सम्भव नहीं था, किन्तु मेरी गुरुमाता, श्रीमती जगदम्बा झा व श्रीमती सविता झा तथा शिक्षा के वटवृक्ष के प्रतिरूप परम पूजनीय गुरुदेव प्रो० सी० पी० झा का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया।

दिनाक अगस्त 1999

शशांक पाण्डेय

अध्याय : 1

पृष्ठभूमि-उत्तर प्रदेश एवं भारत में बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में शैक्षिक विकास

मानव सभ्यता के विकास मे शिक्षा का बडा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत वर्ष में प्रारम्भिक काल से गुरूकुल की परम्परा चली आ रही है[1]। व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में शिक्षा का महत्व उच्च वर्ग मे सबसे अधिक समझा गया, जिसके कारण राजपरिवार के बालको को शिक्षित करने के लिए योग्य अध्यापक चुने जाते थे। अपने जीवन काल में जितने प्रकार के कार्य किसी राजपुत्र को करने होते थे, उन सभी का शिक्षण अनुभवी अध्यापको के द्वारा उन्हे प्रदान किया जाता था।[2] उच्च वर्ग में भी शिक्षा के महत्व को समझा जाता था और बालको के गुरूकुलो में अपेक्षित ज्ञान अर्जन हेतु रखा जाता था। सामान्य वर्ग के लोग कालान्तर मे शिक्षा का महत्व समझने लगे और अपने बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करने लगे। धीरे-धीरे विद्यालयों का विकास हुआ और विश्वविद्यालय भी स्थापित हुए, जिनमें तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला इत्यादि अत्यधिक विख्यात हुए।[3] विश्व स्तर पर भी शिक्षा के महत्व को पहचाना गया और इसे सामाजिक विकास का अभिन्न अंग समझा गया। ऐसे कई दृष्टान्त मिलते हैं, जिसमे किसी शासक ने अपने देश के विकास के लिए शिक्षा को महत्व दिया।[4] पीटर, कैथरीन, फ्रेडरिफ, नेपोलियन इत्यादि का नाम ऐसे शासकों में विशिष्ट स्थान रखता है। 17वीं व 18वीं शताब्दी में कुछ यूरोपीय देशों और अमेरिका में शिक्षा के महत्व को पहचाना गया और कई पुस्तकालय, विद्यालय, शोध-शालाएँ, एवं सोसाइटियों की स्थापना की 19वीं शताब्दी मे औद्योगिक प्रगति का विशेष स्थान है।[5] औद्योगीकरण के लिए तकनीकी शिक्षा का कितना महत्व है यह एहसास किया गया। साथ ही शिक्षित समाज ही सही दिशा मे आर्थिक और औद्योगिक विकास कर सकता है। इस प्रकार की विचारधारा का विकास हुआ। विश्व में पाँच देश ऐसे थे जहाँ 1870 से 1880 के दसक में एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया और प्राथमिक शिक्षा को हर बच्चे के लिए अनिवार्य कर दिया गया। ये देश थे इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, जापान एवं अमेरिका अगले 100 वर्षो में इन चारों देशों का इतिहास साक्षी है कि इन सभी ने विभिन्न क्षेत्रों में कितनी प्रगति की।[6]

---

1 मेह्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ 12
2 मार्शमैन जे0 सी0-फैरी मार्शमैन एण्ड वर्ल्ड पृष्ठ 25
3 मेह्यू आर्थर-द एजूकेशन इन इण्डिया पृष्ठ 13
4 वही पृष्ठ 14
5 दयाल बी0-द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन-पृष्ठ-7
6 एलफिन्सटन एम0-हिस्ट्री आफ इण्डिया पृष्ठ 17

आधुनिककाल में विभिन्न यूरोपीय देशों ने विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों में अपना प्रभाव स्थापित किया और अतत अपना साम्राज्य फैला लिया। भारत में 18वीं शताब्दी में धीरे-धीरे ब्रिटिश शासन का विकास होने लगा और 19वीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश तक देश मे ब्रिटिश शासन की स्थापना हो गयी।[1] धीरे-धीरे प्रशासन शैक्षिक नीति का विकास करने लगा और अपनी प्रशासकीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शैक्षिक विस्तार की योजना बनाई। 1813 का चार्टर एक्ट और 1835 का निर्णय इस दिशा के महत्वपूर्ण निर्णय हैं।[2] सन् 1854 में चार्ल्सवुड की शिक्षा योजना भारत सरकार को भेजी गयी और डलहौनी ने इसे लागू किया।[3] सन् 1857 में कलकत्ता बम्बई व मद्रास में विश्व विद्यालय स्थापित किये गये। वुड की योजना के अन्तर्गत प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित होते रहे। समय-2 पर कई शिक्षा आयोग गणित हुए, जिनमें हण्टर आयोग, रैले आयोग, और सैडलर आयोग विशेष महत्व रखते हैं।[4]

जब अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के विभिन्न भागों में प्रदेशों को हस्तगत किया तब उसे पता चला कि हिन्दुओं तथा मुसलमानों-दोनों की अपनी-अपनी शिक्षण-सस्थाएँ थीं, जो उनके धर्म के साथ सम्बन्धित थी। पण्डित अपनी पाठशालाओं में हिन्दुओं को संस्कृत पढाते थे तथा मौलवी मस्जिदोंमें मुसलमानों को तालीम देते थे। आरम्भ में कम्पनी ने भारतीय पद्धति को निर्बाध रूप से चलने दिया तथा भारतीय नरेशों के द्वारा दिये गये धर्मस्व का समादर किया।[5] तथा वारेन हेस्टिग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की, जिससे मुसलमान नवाबजादो के लडकों को राज्य में उत्तरदायित्वपूर्ण तथा अच्छे पदों के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।[6] आरम्भ किये गये विषयों में धर्म-शिक्षा, तर्क, छन्द, व्याकरण, कानून, सास्कृतिक-दर्शनशास्त्र, ज्योतिष, रेखा गणित तथा गणित थे। कुछ वर्षो के पश्चात् जान ओवन ने जो बगाल प्रेसीडैन्सी का चैपलिन था, सरकार से प्रार्थना की कि वह उन प्रान्तों के निवासियों को अग्रेजी पढाने के लिए स्कूल स्थापित करे।[7] उसकी प्रार्थना की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। तथापि कुछ

---

1 वही-पृष्ठ 12
2 वही-पृष्ठ 13
3 देसमुख सी0 डी0-इन द पोर्टल्स आफ इण्डियन यूनिवर्सीटीज पृष्ठ-18
4 मेह्यू आर्थर-द एजूकेशन इन इण्डिया पृष्ठ-22
5 मुकर्जी एस0 एन0-हिस्ट्री आफ एजुकेशनइन इण्डिया पृष्ठ 17
6 नूरूला एण्डनायक-हिस्ट्रीआफ एजुकेशनइन इण्डिया इयूरिंमद ब्रिटिश पीरियद- पृष्ठ 17
7 एनीबेसेन्ट-हायर एजुकेशन इन इण्डिया-पृष्ठ 17

वर्षो के पश्चात् एक अन्य शिक्षण सस्था बनारस में स्थापित की गयी, "जिसमें हिन्दुओ को कानून, साहित्य तथा धर्म की रक्षा तथा वृद्धि के लिए उसी प्रकार प्रशिक्षित किया जा सके, जिस प्रकार मुसलमानो के लिए पूर्वोक्त मदरसा खोला गया था। विशेष रूप से इसका उद्देश्य यूरोपीय न्यायाधीशों के लिए हिन्दू सहायकों का प्रबन्ध करना था।"[2]

जब 1772-73 मे हाउस आफ-कामन्स में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आज्ञा को पुन जारी करने के सम्बन्ध मे वाद-विवाद हुआ, तब विल्बरफोर्स ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमे ऐसे पग उठाने पर बल दिया गया था, जिनसे भारतीयों में उपयोगी ज्ञान की वृद्धि के लिए कुछ किया जा सके। उसने सुझाव दिया कि स्कूल के अध्यापकों तथा मिशनरियो को भारत मे भेजा जाए। विल्बरफोर्स के प्रस्ताव का विरोध किया गया। तथा इस बात को पुष्ट कर दिया गया कि हिन्दुओं की भी अन्य लोगों के समान विश्वास तथा आचार की अच्छी पद्धति है।"[3] यह बात भी हो गयी कि उन्हें अपने अधिकृत ज्ञान के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार का ज्ञान देना भ्रमपूर्ण है।[4]

कम्पनी के एक डायरेक्टर चार्ल्स ग्राण्ट ने कुछ वर्षो पश्चात् एक स्मृति पत्र प्रस्तुत किया, जिसमे उसने भारतीय लोगों की निम्न स्तर की आचारिक अवस्थाओं पर शोक प्रकट किया।[5] उसने कम्पनी से उनकी अवस्था सुधारने के लिए उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान देने का परामर्श दिया, जिसके सम्बन्ध में उनका विचार था कि वह एक ऐसी चाबी है, जो उनके लिए नये विचारों का संसार खोल देगी। जिस प्रकार मुश्लिम शासकों ने भारतीयो को फारसी सिखायी, उसी प्रकार अंग्रेजों को भारतीयों को अग्रेजी सिखानी चाहिए।[6] उसके अपने ही शब्दों में, "सरकार के लिए यह बहुत आसान होगा कि वह सामान्य व्यय पर प्रान्तो के विभिन्न स्थानो पर ऐसे शिक्षण-केन्द्र

---

1 ट्रेवेलियन सी0 एफ0-आन द एजुकेशन आफ द पीपुल्स आफ इण्डिया-पृष्ठ 22
2 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्रीआफ एजुकेशनइन इण्डिया ड्यूरिंग द बिट्रिश पीरियड-पृष्ठ 25
3 वही-पृष्ठ 26
4 वही-पृष्ठ 27
5 मुकर्जी एस0 एन0-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया-पृष्ठ 25
6 वही-पृष्ठ 26

स्थापित करे जहाँ अग्रेजी पढने-लिखने की व्यवस्था हो।[1] अनेक व्यक्ति, विशेष रूप से नवयुवक उससे लाभ उठायेगे। तथा अध्यापन कार्य मे प्रयुक्त आसान पुस्तको से विभिन्न विषयो पर कुछ सामान्य सच्चाई की बाते प्राप्त हो सकेगी। हिन्दू कुछ ही समय मे, स्वय अंग्रेजी के अध्यापक बन जाएँगे तथा सार्वजनिक कार्य-व्यवहार मे हमारी भाषा, जो राजनैतिक कारणो मे जरूरी है, अगली पीढी तक सम्पूर्ण देश मे फैल जाएगी। इस योजना की सफलता के लिए किसी बात की कमी नहीं है। कमी है तो केवल हार्दिक सरक्षण की।''

1811 मे, लार्ड मिण्टो ने भारत में साहित्य तथा विज्ञान की उपेक्षा के सम्बन्ध मे दु ख प्रकट किया तथा विद्यमान कालेजो मे सुधार तथा नये कालेजो की स्थापना के सम्बन्ध मे कुछ सुझाव दिए। 1813 के चार्टर अधिनियम म एक धारा डाल दी गयी, जिसमे यह कहा गया कि ''कम से कम एक लाख रूपये की राशि अलग रख दी जायगी तथा भारत के ब्रिटिश प्रदेशो मे साहित्य के पुनरूद्धार तथा सुधार में तथा वैज्ञानिक ज्ञान के प्रारम्भ तथा वृद्धि के लिए व्यय की जायगी।''

राजाराम मोहन राय ने एक ऐसी सस्था की स्थापना करने के लिए एक संगठन बनाया, जहाँ हिन्दू यूरोपीय भाषाओं तथा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। हिन्दू कालेज की स्थापना 1817 मे हुयी। 1818 मे कलकत्ता के मुख्य पादरी ने एक सस्था की स्थापना की, जिसके द्वारा नवयुवक ईसाइयो को प्रचार बनाने तथा हिन्दुओ तथा मुसलमानो की अग्रेजी भाषा का ज्ञान देने के लिए व्यवस्था की जाए।

राजाराम मोहन राय ने कलकत्ता मे एक संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना का विरोध किया तथा किसी भी व्यक्ति ने इस विरोध के विषय में कुछ भी चिन्ता नहीं की। कम्पनी, के डायरेक्टर इस बात पर प्रशन्न थे कि उन्हें प्रशासन कार्य मे सहायता के लिए प्रशिक्षित भारतीयो के प्राप्त होने की आशा थी।[2]

---

1 बेसेण्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ-22
2 वही पृष्ठ-23

उनके अपने ही शब्दो मे,'' इस अत्यन्त अभीष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने के साधन स्वरूप हम मुख्य रूप से उनपर निर्भर करते है कि वे यूरोपीय सहित्य तथा विज्ञान से परिचय प्राप्त कर ले जो सुसभ्ययूरोप के विचारों तथा भावनाओं से भरा हुआ है। उनकी ग्रहण शक्ति वन्य कृषि के समान है तथा विशेष रूप से उन्हें आचारिक तथा सामान्य धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों मे शिक्षण प्राप्त हुआ है।[1]

एल फिन्स्टन ने अपने 1823 के कार्य विवरण में इस बात की प्रेरणा दी कि अग्रेजी तथा यूरोपीय विज्ञानो के अध्यायन के लिए स्कूल खोले जाऐं। भारतीय मामलों के कमिश्नर को भेजे हुए एक पत्र में एलफिस्टन ने लिखा, ''मैं उच्च वर्ग के लोगों को ऊँची शिक्षा देना सामान्य जनता को घटिया प्रकार की शिक्षा देने की अपेक्षा अच्छा समझता हूँ।[2] शिक्षा की सबसे आवश्यक शाखा वह है जो यहाँ के निवासियो को सार्वजनिक नौकरी के लिए तैयार करे।[3] यदि किसी प्रकार अंग्रेजी का ज्ञान उनके लिए विस्तृत किया जा सकता है, जिन्हें विचार के लिए कम से कम समय है तो ऐसी स्थिति मे ज्ञान की वृद्धि दस गुना अधिक हो जाने की आशा है क्यों कि प्रत्येक व्यक्ति, जिसने अग्रेजी के द्वारा विज्ञान से परिचय प्राप्त कर लिया है।[4] वह अपनी भाषा के माध्यम से अपने देश वासियों में उस ज्ञान का संचार कर सकेगा।'' उसने बम्बई में एक स्कूल की स्थापना करने का सुझाव दिया, जहाँ अंग्रेजी का ''साहित्यिक रूप से'' अध्ययन करने की अवस्था हो तथा साथ ही उसी भाषा में इतिहास, भूगोल, विज्ञान में शिक्षा दी जा सके। एलफिंस्टन ने इन्हीं पद्धतियों पर एक स्कूल की पहले स्थापना कर ली थी। 1833 में उसने पूना में भी ऐसा ही स्कूल स्थापित किया। 1834 में बम्बई में एकफिन्स्टन कालेज आरम्भ किया गया।[5] इस बात की आशा की गयी कि, ''बुद्धि तथा आचार की दृष्टि से सुयोग्य व्यक्तियों का वर्ग भारत के सरकारी प्रशासन में ऊँची नौकरी के लिए प्रशिक्षित किया जा सकेगा।''

---

1 वही पृ0 19
2 वही पृ0 19
3 दयाल बी0- द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0-28
4 वही-पृ0 29
5 दयाल बी0- द डेबलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0 31

इस समय तक अग्रेजी के अध्ययन की मॉग काफी बढ़ चुकी थी। अंग्रेजी पुस्तकें सहस्त्रो की संख्या मे बिक रही थी।[1] संस्कृत तथाा अरबी की पुस्तकों की वास्तव में कुछ भी मॉग नहीं थी। लोकप्रिय मॉग को सन्तुष्ट करने के लिए कलकत्ता मदरसा तथा कलकत्ता के सस्कृत कालेज मे अंग्रेजी की कक्षाएँ आरम्भ कर दी गयीं। आगरा कालेज में भी, जो 1823 मे स्थापित हुआ था, ऐसा ही किया गया। इतना सब होने पर भी ओरिएण्टल कालेज लोकप्रिय न हो सकता वहाँ वाद-विवाद उठ खडा हुआ कि शिक्षा का माध्यम अग्रेजी होनी चाहिए कि अरबी। अग्रेजी के पक्ष पातियों का कहना था कि समस्त शिक्षा अग्रेजी में देनी चाहिए। प्राच्य भाषाओं के पक्षपाती कहते थे। कि शिक्षण प्राच्य भाषाओं के द्वारा होना चाहिए।[2] इस वाद विवाद की समाप्ति के लिए सरकार में एक कमेटी की नियुक्ति कर दी। प्राच्य भाषा के पक्षपातियों में सरकार के बहुत से बडे अधिकारी थे तथा कुछ समय तक उनके विचार का प्रभुत्व रहा।[3] जब 1835 में लार्ड मैकाले को समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया, तब उस समय दोनों पक्ष इतने बराबर बंटे हुए थे कि संकटपूर्ण स्थिति प्रस्तुत हो गयी। लार्ड मैकाले ने एक टिप्पणी लिखी, जिससे प्राच्यवादियों की स्थिति कमजोर पड गयी।[4] उसने 1813 के चार्टर के सम्बन्ध में विचार विनिमय किया, जिसके द्वारा साहित्य के पुररूद्धार तथा प्रगति के लिए कुछ धनराशि की व्यवस्था की गयी थी, जिससे भारतीयों मे विज्ञान के ज्ञान को प्रारम्भ किया जा सके, उसका कहना था कि साहित्य शब्द का अभिप्राय केवल अरबी तथा सस्कृत साहित्य ही नहीं है, क्यों कि वह अब तक किसी ऐसे प्राच्यवादी से नहीं मिला था, "जो इसबात से इनकार कर सके कि किसी एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय का एक कक्ष भारतवर्ष तथा अरब के सम्पूर्ण देशी साहित्य के समान मूल्यवान है।" उसका तर्क यह था कि अग्रेजी भाषा शासक वर्ग के द्वारा बोली जाती है।[5] ऐसी आशा है कि वह सम्पूर्ण पूर्व के समुद्रों तक वाणिज्य की भाषा बन जाए।[6] वह इस परिणाम पर पहुँचा कि सरकार

1 वही पृ0-32
2 वही पृ0 37
3 महेव आर्थन-एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-27
4 नूरूला एण्ड नायक-हिस्ट्रह आफ एजुकेशन इन इण्डिया इयूरिंग द ब्रिटिश वीरियड-पृ0 28
5 वही-पृ0-38
6 वही-पृ0-37

इस सम्बन्ध में स्वतत्र है कि वह अपनी धनराशि को सस्कृत तथा अरबी की अपेक्षा जानने योग्य अच्छे ज्ञान मे व्यय करे। न तो कानून की भाषाओं के रूप में सस्कृत अथवा अरबी का कोई ऐसा विशेष दावा है, जिससे हमें प्रोत्साहन प्राप्त हो सके" तथा "यह सम्भव है कि देशवासियो को पूर्ण रूप से अग्रेजी का अच्छा विद्वान बनाया जा सके।"[1] हमें इस उद्देश्य के लिए प्रयत्न करना चाहिए। लार्ड मैकाले भारत आने से पूर्व हाउस आफ कामन्स मे ऐसे विचार प्रकट किये थे। उसके अपने ही शब्दों में," क्या हमें भारतीयो को अपने अधीन बनाये रखने के लिए अज्ञानी बनाए रखना हैं? अथवा क्या हम यह विचार करते हैं कि हम बिना महत्वाकांक्षा को जाग्रत किए ज्ञान दे सकते हैं? अथवा क्या हम महत्वकांक्षा जागृत करना चाहते हैं तथा उसके लिए कोयी अधिकृत साधन नहीं जुटा सकते? यह भी सम्भव है कि भारतवर्ष की जनता का मन हमारी पद्धति के अधीन विशाल हो जाए, जब तक यह उस पद्धति को अत्यन्त पुराना नहीं कर देता, अच्छी सरकार से हम अपने प्रजाजनों को अच्छी सरकार की योग्यता में शिक्षित कर सके तथा यूरोपीय ज्ञान में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे कभी भविष्य मे यूरोपीय सस्थाओं की माग उपस्थित करें। क्या ऐसा दिन कभी आएगा यह मैं नहीं जानता जब भी यह दिन आये यह अंग्रेजी इतिहास के लिए सबसे अधिक गर्व वाला दिन होगा। राजदण्ड हमसे छिन जाए। सफलता हमारे शास्त्रो के लिए अस्थायी सिद्ध हो सकती है, किन्तु कुछ विजयें ऐसी हैं, जिनके पश्चात् किसी प्रकार की विपरीत भावना की सम्भावना नहीं। यह एक ऐसा साम्राज्य है, जिसमें नाश के सभी स्वाभाविक कारणों का अभाव है। यहाँ शान्तिपूर्ण युक्ति की बर्बरता पर विजय है। यह साम्राज्य हमारी कलाओं तथा हमारे आचार का तथा साहित्य और कानूनों का नष्ट न होने वाला साम्राज्य है।

लार्ड विलियम बैंटिंग ने जो तत् कालीन गवर्नर जनरल था, लार्ड मैकाले के परामर्श को स्वीकार कर लिया। 7 मार्च 1835 के दिन एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, जिनमे निम्नलिखित बातों पर बल दिया गया।

---

1 ट्रेवेलियन सी0 एफ0-आन द एजुकेशन आफ द पीपुल्स आफ इण्डिया पृष्ठ-27

1 ब्रिटिश सरकार का बडा उद्देश्य भारतीयों में अग्रेजी साहित्य तथा विज्ञान की वृद्धि होना चाहिए तथा शिक्षा के लिए, जितनी धनराशि की व्यवस्था है उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग केवल अग्रेजी शिक्षा पर ही किया जा सकता है।

2 प्राच्य विद्याओ के कालेज तोडे न जायँ किन्तु शिक्षा प्राप्ति के समय उनके विद्यार्थियो के पालन. पोषण का भार खत्म कर देना चाहिए।[1]

3 सरकार का पैसा प्राच्य पुस्तको के मुद्रण पर व्यय नहीं होना चाहिए।

4 इसके पश्चात् सरकार का सारा रूपया भारतीयों को अग्रेजी साहित्य तथा विज्ञान के ज्ञान देने मे ही व्यय होना चाहिए।

एच0 एच0 विल्सन के अनुसार, शिक्षा के लिए प्राप्य समस्त धन को अंग्रेजी शिक्षा पर व्यय करने के सम्बन्ध मे कलकत्ता के मुसलमनों की ओर से एक प्रार्थना पत्र दिया गया, जिस पर 8000 के लगभग व्यक्तियों के हस्ताक्षर थे तथा, जिनमें नगर के सभी प्रतिष्ठित मौलवियो तथा अन्य देशी लोगों के हस्ताक्षर थे।[2] इस प्रार्थना पत्र में सामान्य सिद्धान्तों पर आपत्ति की गयी थी तथा यह कहा गया था कि सरकार का स्पष्ट उद्देश्य भारत निवासियो का धर्म परिवर्तन है तथा वे एक मात्र अग्रेजी को प्रोत्साहन देते हैं। मुस्लिम तथा हिन्दू अध्ययन पद्धति को निरुत्साहित करते हैं क्यो कि वे लोगो को ईसाई होने के लिए प्रेरित करते हैं।[3] मुसलमानो के भ्रम का निवारण करने के लिए लार्ड वैंटिंग ने पूर्ण निष्पक्षता की नीति की घोषण की।[4] सब स्कूलों तथा कालेजो के विद्यार्थियों के धार्मिक विश्वासों में हस्तक्षेप तथा अन्यायपूर्ण गुप्त व्यवहार शिक्षा पद्धति के साथ ईसाईयत की स्पष्ट तथा अस्पष्ट शिक्षा को निश्चित रूप से रोक देना चाहिए।

यहाँ प्रसगवश शिक्षा के क्षेत्र में ईसाई मिशनों के द्वारा किये गये कार्य का वर्णन करना अभीष्ट प्रतीत होता है।[5] 1716 में डैनिश मिशनरियों ने अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक सस्था खोली। 1717 में उन्होंने अन्य स्थानों पर भी अग्रेजी

---

1 महमूद सैयद-हिस्ट्री आफ इग्लिश एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 23
2 मैथू अर थुर-द एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 37
3 वही- पृ0-38
4 मिश्रा किशोरी चन्द्र-एजुकेशन इन इण्डिया-27
5 नूरुला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियेय-26

स्कूल खोले। कारे, मार्शमैन तथा वार्ड जैसे मिशनरियों ने 1793 में सिरामपुर में अपना कार्य आरम्भ किया। 1820 तक मिशनरी सस्थाएँ इस क्षेत्र में बहुत कार्य कर रही थी।[1] किन्तु उनका मुख्य उद्देश्य लोगों को शिक्षित करना न था अपितु उनमें ईसाईयत का प्रचार करना था मिशनरियो ने अनुभव कर लिया कि अग्रेजी भाषा का विस्तार देश में ईसाईयत के विस्तार में सहायक होगा। बम्वई में विल्सन कालेज तथा मद्रास मे क्रिश्चियन कालेज आरम्भ किये गये। 1853 में आगरा में सेण्ट जान्स कालेज स्थापित हुआ।[2] मसूलीपट्टम तथा नागपुर मे भी मिशनरी कालेज स्थापित किये गये। इन संस्थाओं में बाइबल श्रेणी को आवश्यक कर दिया गया।[3] डा0 एफ0 के कथनानुसार," एक बडा उद्देश्य तो यह था कि नवयुवकों को यथा सम्भव हमारे सामान्य विकसित साहित्य तथा विज्ञान का ज्ञान दिया जाय किन्तु एक अन्य तथा अधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह था कि ईसाईयत का पूर्ण ज्ञान उनके प्रमाणों तथा सिद्धान्तों के साथ प्रदान किये जायें।[4] इसलिए हमारा उद्देश्य था एक उपयोगी धर्म निरपेक्ष शिक्षा तथा निश्चित धार्मिक शिक्षा को अविभाज्य तथा एकरसतापूर्ण पद्धति से परस्पर मिला दिया जाय।[5]

1884 के एक सरकारी प्रस्ताव के द्वारा इस बात की व्यवस्था की गयी कि सार्वजनिक नौकरियों के सम्बन्ध में उन लोगों को प्राथमिकता दी जायगी, जिन्हें पश्चिमी विज्ञान की शिक्षा से शिक्षित किया गया है तथा जो अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखते हैं। लार्ड आकलैंड के कथनानुसार, "मैं इसे अपना मुख्य उद्देश्य बनाऊंगा कि मैं अग्रेजी भाषा के माध्यम से उन अधिकाधिक विद्यार्थियों को यूरोपीय साहित्य, दर्शनशास्त्र तथा विज्ञान में पूर्ण शिक्षा दूँगा, जो उसे ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत हों।"[6] 1854 का वुड का प्रेषित-पत्र कम्पनी के डायरेक्टरों को भेजे गये। सर चार्ल्स वुड के प्रेषित-पत्र को भारत में अंग्रेजी शिक्षा का महत्वपूर्ण राजकीय आज्ञापत्र वर्णित किया गया है।[7] इसके द्वारा शिक्षा की एक पूर्ण पद्धति प्रस्तुत की गयी। जो

1 वही पृ0-28
2 मेथू आर्थर- द एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-23
3 मिश्रा किशोरी चन्द्र-एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-28
4 नूरुला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियेय-पृ0 38
5 दयाल बी0- द डेबलयमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0-28
6 वही-पृष्ठ 19
7 वही-पृष्ठ 22

अब तक की प्रस्तावित शिक्षा पद्धतियों की अपेक्षा यूरोप की कलाओं विज्ञान, दर्शन शास्त्र तथा साहित्य का एकीकरण था।[1] इसके द्वारा भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित किये जाने की व्यवस्था का सुझाव था। जहाँ कहीं भी इसके लिए माँग प्रस्तुत हो वहाँ अग्रेजी भाषा के शिक्षण का प्रबन्ध किया जाना था। अंग्रेजी भाषा तथा भारतीय भाषाओ इन दोनो को यूरोपीय ज्ञान के एकीकरण का माध्यम मान लिए जाने की व्यवस्था थी।[2] ऐसा अनुभव किया गया कि भारत में विश्व विद्यालयों की स्थापना का समय आ गया है, जिससे विविध तथा उदार शिक्षा के पाठ्यक्रम को शैक्षणिक उपाधियाँ देने के द्वारा जो इस बात का प्रमाण थी कि विज्ञान तथा कलाओं की विभिन्न शाखाओं में योग्यता प्राप्त कर ली गयी है, प्रारम्भ किया जाय। यह निश्चय किया गया कि लण्दन विश्व विद्यालय के आदर्श पर विश्व विद्यालय स्थापित किये जायँ, प्रत्येक विश्व विद्यालय के लिए एक कुलपति, एक उपकुलपति तथा सीनेट की व्यवस्था किये जाने का प्रस्ताव किया गया।[3] सीनेट का कार्य विश्व विद्यालय विधियों का प्रबन्ध करना तथा परीक्षाओं की व्यवस्था करने के लिए नियमादि बनाना था। विभिन्न विषयों के लिए अध्यापक रखने की व्यवस्था की गयी।[4] इन विषयों में कानून, नागरिक, इन्जिनियरिंग तथा प्राच्य भारतीय भाषाएँ उल्लेखनीय हैं।[5] सबसे पूर्व कलकत्ता तथा बम्बई के विश्व विद्यालयों को देश के प्रथम विश्वविद्यालयों के रूप में स्थापित करने की योजना बनाई गयी। मद्रास में भी, अथवा किसी अन्य स्थान पर विश्व विद्यालय खोलने की योजना रखी गयी, जहाँ पर अनेक संस्थाएँ विद्यमान थीं, जिनमे से उपाधियो के लिए, 'ठीक प्रकार से प्रशिक्षित प्रार्थी प्राप्त हो सके।[6] ऐसा नियम बनाया गया कि स्वीकृत सस्थाओं के सरकारी निरीक्षक समय-समय पर निरीक्षण करते रहेंगे ऐसी आशा की गयी कि शिक्षण संस्थाओं में परस्पर स्वस्थ स्पर्धा की भावना विकसित होगी तथा विश्व विद्यालयों की उपाधियों की विभिन्न शाखाओं तथा विषयो में श्रेणियाँ तथा उच्च स्थान प्राप्ति, उच्च शिक्षित नवयुवकों के प्रयत्नों को ऐसे

---

1 दयाल बी0-द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0-31
2 वही-पृष्ठ 32
3 वही-पृष्ठ 37
4 मेह्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-27
5 वही-पृष्ठ 35
6 नूरूल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 28

अध्ययन मे अग्रसर करेगे जो जीवन के विभिन्न प्रगतिशील व्यवशायों की सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक है।[1]

इसे प्रेषित-पत्र में ऐसी सस्थाओ की स्थापना की भी सिफारिशें की गयी, जिनमे सब प्रकार के स्कूलों के लिए आध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सके।[2] विद्यमान सरकारी स्कूल तथा कालेज जारी किये जाने का तथा आवश्यकता पडने पर उनकी सस्था में वृद्धि करने का निश्चय किया गया। नये मिडिल स्कूल खोलने के लिए योजना बनी।[3] प्रारम्भिक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिये जाने का निश्चय किया गया।[4] निजी प्रयत्नो की सहायता करने के लिए सहायता में अनुदान की पद्धति चलाए जाने का भी सुझाव प्रस्तुत किया गया। तथापि ये अनुदान तभी प्राप्त हो सकते थे जब धार्मिक तटस्थता के सिद्धान्त का पालन किया जाय।[5] छात्र वृत्तियों की व्यापक पद्धति प्रारम्भ किये जाने की व्यापक व्यवस्था की गयी। सरकार के द्वारा स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहित किये जाने का प्रस्ताव किया गया। प्रत्येक प्रान्त में सार्वजनिक शिक्षा के निदेशक की नियुक्ति किये जाने का भी निश्चय किया गया, उसकी सहायता के लिए निरीक्षक, सहायक निरीक्षक तथा उपनिरीक्षकों की नियुक्ति पर विचार किया गया।[6] प्रो0 डाडवैल के अनुसार, "विभाग के अधिकारी मुख्य रूप से प्रशासक होते थे तथा परिणाम स्वरूप शिक्षा एक नित्य प्रशासन का विषय बन गया।[7]

हण्टर आयोग (1882) में लार्ड रिपन ने 1854 में प्रेषित-पत्र के सिद्धान्तो के कार्यान्वित किये जाने की जॉच करने के सम्बन्ध में तथा उनमें निर्धारित की गयी नीति को बल देने के लिए आवश्यक सुझाव देने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गयी। हण्टर आयोग ने बहुत सी उपयोगी सूचनाओं को इकट्ठा किया तथा निम्न लिखित सिफारिशें की-

1 उच्च शिक्षा की सस्थाओं के प्रबन्ध तथा सीधे समर्थन से राज्य के क्रमिक हाथ खींचने के सम्बम्ब में तर्क देते हुये आयोग ने अनुभव किया कि इस प्रकार

---

1 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 29
2 वही-पृ0 28
3 ट्रेवेलियन सी0 एफ0-आन द एजुकेशन आफ द पीपुल्स आफ इण्डिया पृष्ठ-27
4 वही-पृ0 40
5 बेसेण्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-57
6 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 30
7 वही-पृ0 55

धीरे-धीरे तथा सावधानी से पीछे हटना चाहिए। कालेज अथवा माध्यमिक स्कूल को भारतीयों को सौंप दिये जाने की व्यवस्था की गयी। यदि इस प्रकार के हस्तान्तरण से शिक्षा के हित के सम्बन्ध में इस प्रकार से उचित उज्ज्वल भविष्य की आशा हो तथा किसी प्रकार की हानि की आशंका न हो।[1]

2 कालेजों को सामान्य तथा विशेष अनुदानों के लिए व्यवस्था किये जाने का प्रस्ताव किया गया।[2]

3. बडे कालेजों में वैफप्रिक पाठ्यक्रम का प्रस्ताव किया गया।[3]

4. कालेजों की फीसों तथा फीसो से छुटकारा मिलने के सम्बन्ध में कुछ सामान्य सिद्धान्तों पर चलने के लिए व्यवस्था की गयी।

5 छात्रवृत्तियों के लिए नियम बनाने का प्रस्ताव किया गया।

6 इस प्रकार के प्रयत्न करने का सुझाव दिया गया कि एक आदर्श पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया जाए, जिसमें स्वाभाविक धर्म के मौलिक सिद्धान्तों, का आधार लिया गया हो तथा उसे सभी सरकारी तथा गैर-सरकारी कालेजों में पढ़ाया जाए।

7 प्रत्येक सरकारी तथा सहायता-प्राप्त कालेज में प्रिंसिपल अथवा किसी एक प्राध्यापक पर इस बात का उत्तरदायित्व डालने का सुझाव दिया गया कि वह कालेज की प्रत्येक श्रेणी को प्रत्येक सत्र में मनुष्य तथा नागरिक के कर्तव्यों पर कई व्याख्यान दे।

8 मुसलमानों में शिक्षा के प्रोत्साहन के सम्बन्ध में विशेष प्रयत्न किये जाने की सिफारिश की गयी।[4]

9 सरकार के शिक्षाधिकारियों के द्वारा सभी प्रारम्भिक स्कूलों के निरीक्षण तथा पथ प्रदर्शन के लिए व्यवस्था किये जाने का सुझाव दिया गया।[5]

10 आयोग ने छात्रों की शारीरिक तथा मानसिक शिक्षा पर बल दिया।[6]

---

1 महमूद सैयद-हिस्ट्री आफ इंग्लिश एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 23
2 मैथ्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 38
3 वही-पृष्ठ 37
4 मिश्रा किशोरी चन्द्र-द एजुकेशन इन इण्डिया-27
5 मैथ्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 40
6 वही-पृष्ठ 45

11 आयोग के अनुसार प्राइमरी शिक्षा के लिए सुरक्षित किया जाना चाहिए। प्राइमरी शिक्षा राज्य, जिला बोर्डो तथा नगरपालिकाओं के द्वारा दी जानी चाहिए।[1] माध्यमिक शिक्षा को स्थानीय अथवा निजी सस्थाओं के माध्यम से प्रोत्साहन मिलना चाहिए। सभी माध्यमिक स्कूल यथा सम्भव निजी प्रबन्ध को सौंप दिये जाने चाहिए।

भारत सरकार ने आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया तथा देश में शिक्षा की प्रगति की समीक्षा के रूप में एक वार्षिक विवरण की तैयारी के लिए निर्देश दिया गया। आगामी कुछ दशाब्दियो में उच्च दिशा ने तीव्र गति से प्रगति की।[2]

जनवरी 1902 मे लार्ड कर्जन ने सर जॉन रैले की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया जिसका कार्य ब्रिटिश भारत में स्थापित विश्वविद्यालयों की अवस्थाओं तथा भविष्य की गतिविधि के सम्बन्ध में जॉच करना, विश्वविद्यालय के शिक्षण के स्तर को ऊँचा करने के लिए यथोचित उपायों की सिफारिश करना तथा ज्ञान की प्रगति के लिए प्रयत्न करना था। आयोग ने निम्न सिफारिशें कीं।[3]

1 पुराने विश्वविद्यालयों के कानूनी अधिकारों को विस्तृत कर दिया जाए। प्रत्येक विश्वविद्यालय की स्थानीय सीमाओं को और अधिक भली प्रकार निश्चित किया जाए तथा ऐसे पग उठाये जायँ कि सी0 पी0 तथा यू0 पी0 में सम्बद्ध कालेजों को कलकत्ता सूची में हटा दिया जाए।

2 सीनेट, सिंडीकेट तथा फैकल्टियों को पुन सगठित किया जाए तथा पहले की अपेक्षा अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण बना दिया जाए।[4]

3 सम्बद्धता नियम इस प्रकार के बनाये जाएँ कि किसी संस्था को सम्बन्ध प्रदान न किया जाय तब तक कि पूर्ण सूचना प्राप्त न हो, तथा एक बार प्रविष्ट संस्था को सम्बद्धता के लिए अभीष्ट योग्यता के स्तरों से नीचे न गिरने दिया जाए।[5] सिंडीकेट को समय-समय पर अपने आपको इस सम्बन्ध में संतुष्ट कर लेना चाहिए।[6]

---

1 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 46
2 वही-पृष्ठ 48
3 मैथ्यू आर्थर- द एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ 44
4 मिश्रा किशोरी चन्द्र-द एजुकेशन इन इण्डिया पृ0-28
5 बेसेण्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0-39
6 वही-पृष्ठ 40

4 प्रत्येक कालेज के लिए विधिवत सगठित प्रबन्धकर्त्री समिति होनी चाहिए।

5 छात्रों के निवास तथा अनुशासन के सम्बन्ध में ध्यान दिया जाए।

6 सभी विषयों में परीक्षाओ के पाठ्यक्रम तथा प्रणाली के सम्बन्ध में रिपोर्ट के अनुसार परिवर्तन किया जाए।[1]

1904 का विश्वविद्यालय अधिनियमः- लार्ड कर्जन की सरकार ने रैले आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कर लिया तथा उन्हें 1904 के विश्वविद्यालय अधिनियम में कार्यान्वित कर दिया। अधिनियम के अनुसार विश्वविद्यालयों की प्रबन्धकर्त्री सभाओं का पुन सगठन किया गया। विश्वविद्यालयों की सीनेट में कम से कम 50 तथा अधिक से अधिक 100 सदस्यों की व्यवस्था की गयी। निर्वाचित हुए फैलो की संख्या, कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास के लिए 20 तथा शेष दो के लिए 15, 15 निश्चित की गयी।[2] सिंडी केटों को अधिकृत रूप से स्वीकृति प्रदान की गयी तथा उनमें विश्वविद्यालय के अध्यापकों को समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के साथ सम्बद्धता की शर्तो को स्पष्ट रूप से अंकित किया गया तथा उन्हें दृढता पूर्वक अपनाये जाने पर बल दिया गया।[3] विश्वविद्यालय को अधिकार दिये गये कि छात्रों की शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों तथा अध्यापकों की नियुक्ति की जा सके तथा इस प्रकार के सब कार्य किये जाएँ जिनसे अध्ययन तथा अनुसन्धान को प्रगति प्राप्त हो सके।[4] सरकार को भी कुछ अधिकार प्रदान किये गये, जिनमें सीनेटों के द्वारा बनाये जाने वाले नियमो के सम्बन्ध में कुछ निर्देश दिये गये थे तथा गवर्नर जनरल को अधिकार था कि वह विश्वविद्यालयों की प्रादेशिक सीमा का निश्चय कर दे।[5]

शिरोल के कथनानुसार, "जैसा कि एक वायसराय के अधीन सम्भावना थी, जो एक महान निरंकुशवादी था तथा, जिसे सरकारी मशीन में अत्यधिक विश्वास था, 1904 के अधिनियम का मुख्य उद्देश्य विश्व विद्यालयों पर सरकार के नियंत्रण को

---

1 बेसेन्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया-पृष्ठ 45
2 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 50
3 कूपलैण्ड सर आर0-बिल्वरफोर्स ए नेटिव आक्सफोर्ड 1923 पृ0-17
4 वही-पृष्ठ 18
5 बेसेन्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ 49

कठोर करना तथा प्रथम तथा उनकी सीनेटो पर नियंत्रण करना था, जो अब भी प्रशासक सस्थाओ के रूप मे कार्य कर रही थीं। इस सम्बन्ध में उनके सदस्यों की सख्या के योग में कमी की गयी तथा कुलपति के द्वारा मनोनीत किये जाने वाले सदस्यों की संख्या में बहुत सी वृद्धि की गयी तथा उनमें प्रान्तीय शिक्षा-संचालकों को पदेन स्थान दिया गया।[1] सिण्डीकेटों में, जो व्यवस्था-सस्थाएँ थीं इस बात की उपरी व्यवस्था की गयी कि कालेजों के अध्यापकों की पर्याप्त सख्या उनमे आ सके, किन्तु ऐसा कोई अध्यापक इसके लिये अधिकारी न हो सकता था, जब तक कि वह सीनेट का सदस्य न हो।[2] विद्यमान कालेजों में देखरेख सम्बन्धी अधिक अधिकार तथा नये कालेजों की सम्बद्धता के लिए अधिक कठोर शर्तो को लगाया जाना-ये ऐसे पग थे, जो ठीक दिशा की ओर उठाये गये थे।[3] किन्तु उन्हें बहुत देर से लागू किया गया, इसमे बढ्ते हुए स्कूलों की सख्या के सम्बन्ध मे कोयी नियंत्रण नहीं लगाया गया, जिनके कारण वे नींवे सड रही थीं, जिनपर एक गम्भीर कालेज शिक्षा का निर्माण किया जा सकता था। विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम तथा विश्व विद्यालय की परीक्षाओं की प्रणालियों के सम्बन्ध में कार्यवाड़ी करने के लिए नई कमेटियाँ बनाई गई। किन्तु यह सब भी केवल सीनेंट से ही उत्पन्न था। वस्तुत सरकार के अनुमोदन के बिना इसके पश्चात् कुछ भी नहीं किया जा सकता था।[4]

भारत में इस अधिनियम के सम्बन्ध में सार्वजनिक सम्मति अत्यन्त आलोचनापूर्ण थी, क्योंकि सीनेंट में निर्वाचित होने वाले सदस्यों की संख्या बहुत कम थी, तथा संख्या को सीमित करने के कारण इस बात की सम्भावना रहती थी कि यूरोपीयनों का बहुमत रखा जाए।[5] विश्वविद्यालय के द्वारा शैक्षणिक कार्यो की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में प्राप्त अधिकार महत्वपूर्ण नहीं समझे गये, क्यों कि इस प्रकार की व्यवस्था का पहले अधिनियमों में प्रयोग नहीं किया गया था। कालेजों को सम्बद्ध करने के विषय में विश्वविद्यालय के नये नियमों को शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय निजी प्रयत्नों के लिए बाधक समझा गया।[6]

---

1. कूपलैण्ड सर आर0-विल्वरफोर्स ए नेटिव आक्सफोर्ड 1923 पृ0 19
2. दयाब बी0- द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0 43
3. वही-पृष्ठ 45
4. वही-पृष्ठ 46
5. मेह्यू आर्थर द एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ 37
6. मुकर्जी एस0 एन0-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया पृष्ठ-38

यद्यपि लार्ड कर्जन ने विश्वविद्यालयों को राज्य के विभागों में परिवर्तित करने अथवा "कालेजों तथा स्कूलों को नौकरशाही जजीरों से बॉधने" की सब इच्छाओं का उत्तरदायित्व लेने से इन्कार कर दिया, तथापि अधिनियम के स्वीकृत करने का मुख्य परिणाम यह हुआ कि विश्वविद्यालयों की सीनेंटों तथा सिण्डीकेटों पर यूरोपीयनों का अधिकार हो गया तथा उन्हें, "ससार के पूर्णतम सरकारी विश्वविद्यालयो का रूप दे दिया गया।" इसको कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग ने स्वीकार किया।[1] लार्ड कर्जन की इच्छा थी कि वे विश्वविद्यालय शिक्षा के सम्बन्ध में राज्य के उत्तरदायित्व तथा नियत्रण का प्रयोग करें।[2]

भारतीय विरोध का कारण बढता हुआ यह विश्वास था कि कार्ड कर्जन इस पर तुला हुआ था कि नवयुवक भारतीयों के लिए उच्च शिक्षा के लिए प्राप्त अवसरों को सीमित किया जाए। शिक्षित भारतीयों का यह विचार था कि वायसराय विश्वविद्यालय की पद्धति पर चोट करना चाहते थे।[3] लार्ड कर्जन के वायसराय-कार्यकाल का सबसे बडा मतभेद, जिसने भारतीय विचारधारा के नेताओं में कटुता उत्पन्न की तथा जिसके कारण वायसराय भारतीय शिक्षित वर्ग में सर्वाधिक अप्रिय हो गया, 1904 का अधिनियम था।[4]

1913 का संकल्पः- 1913 में एक सरकारी संकल्प प्रकाशित हुआ तथा इससे उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में नीति का स्पष्टीकरण हुआ। भारत के लिए सम्बद्ध विश्व विद्यालयों से अधिक देर तक सम्बन्ध विच्छेद करना युक्तिसंगत न होने के कारण, यह आवश्यक था कि ऐसे क्षेत्र को सीमित कर दिया जाए, जिसपर ऐसे विश्वविद्यालयों का नियत्रण होगा।[5] प्रत्येक प्रान्त में नये शैक्षणिक तथा आवास विश्व विद्यालय स्थापित करने का निश्चय किया गया।[6] ढाका, अलीगढ़ तथा बनारस में शैक्षणिक विश्वविद्यालय स्थापित किये जाने का निश्चय किया गया। रंगून, पटना तथा नागपुर में सम्बद्ध विश्वविद्यालय स्थापित किये जाने का निर्णय लिया गया। महायुद्ध

---

1 दयाब बी0 द डेवलपमेण्ट आफ मार्डर्न इण्डियन एजुकेशन-पृष्ठ 77
2 जे0 पी0 नायक-एलिमेण्टरी एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 27
3 पाउला सिल्वर-एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन-पृ0 47
4 मैथ्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 23
5 मिश्रा किशोरी चन्द्र-एजुकेशन इन इण्डिया कलकत्ता-पृ0 52
6 महमूद सैयद-हिस्ट्री आफ इग्लिश एजुकेशन इन इण्डिया-पृ0 53

के छिड जाने के कारण इस प्रस्ताव के कार्यान्वित किये जाने में देर हो गयी, किन्तु बनारस तथा पटना में क्रमश 1916 तथा 1917 में विश्वविद्यालय आरम्भ हो गये।[1]

कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोगः- भारत सरकार ने लार्ड चैम्सफोर्ड के समय में सैडलर आयोग की नियुक्ति की जिसका कार्य कलकत्ता विश्वविद्यालय की समस्याओं की सुविस्तृत जॉच करना था। विचारणीय विषयों में कालेज तथा विश्वविद्यालय-शिक्षा के सभी पक्ष सम्मिलित थे। माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं को भी आयोग के कार्यक्षेत्र से अलग नहीं किया गया था।[2] आयोग से यह आशा की गयी थी कि वह कलकत्ता विश्वविद्यालय की नीति निर्माण में सहायता के लिए अन्य भारतीय विश्वविद्यालयों के संगठन तथा कार्य का अध्ययन करे।[3] आयोग ने 1919 में एक वृहत् विवरण प्रस्तुत किया, जिसमें माध्यमिक शिक्षा तथा विश्वविद्यालय की प्रत्येक समस्या पर विचार किया जा सके। सैडलर' आयोग की मुख्य सिफारिशो इस प्रकार थीं-

1 विश्वविद्यालय की इण्टरमीडिएट श्रेणियॉ माध्यमिक सस्थाओं को हस्तान्तरित की जानी थीं तथा विश्वविद्यालय में प्रवेश का समय विद्यमान इण्टरमीडिएट था।

2 माध्यमिक तथा इण्टरमीडिएट शिक्षा का नियन्त्रय माध्यमिक शिक्षा के बोर्ड को करना था, विश्वविद्यालय को नहीं।[4]

3 भारत सरकार को कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ अपने विशेष सम्बन्ध को समाप्त करना था तथा बगाल सरकार को उसका स्थान लेना था।[5]

4 उपाधि पाठ्यक्रम की अवधि इण्टरमीडिएट के पश्चात् तीनवर्ष चाहिए। आनर्स कोर्स तथा पासकोर्स की व्यवस्था की गयी।[6]

5 कलकत्ता नगर के शैक्षणिक साधनों को संगठित किया जाना था, जिससे वास्तविक शैक्षणिक विश्वविद्यालय की भावना उत्पन्न की जाए तथा ढाका विश्वविद्यालय का कार्य शीघ्रतिशीघ्र पूरा किये जाने का सुझाव दिया गया।[7]

---

1 नूरुल्ला एण्ड नायक-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड-पृ0 77
2 मुकर्जी एस0 एन0-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया-पृष्ट 52
3 राधा कृष्णन-रिपोर्ट आफ द यूनिवर्सीटी कमीशन-पृ0 70
4 वही-पृष्ठ0 73
5 वही-पृष्ठ0 78
6 बसु बी0 डी0-हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 67
7. वही-पृष्ठ0 68

फुटकर कालेजों को इस प्रकार सगठित किये जाने का परामर्श दिया गया, जिससे नये विश्वविद्यालय केन्द्रों के क्रमिक विकास को उच्च शिक्षण को कुछ स्थानों पर केन्द्रित करने के द्वारा प्रोत्साहन दिया जाए।[1]

6 स्त्री-शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाना निश्चित हुआ तथा इस उद्देश्य के लिए एक बोर्ड की स्थापना करने का प्रस्ताव किया गया।

7 विश्वविद्यालय के लिए सरकारी नौकरी की पद्धति अनुकूल होने के कारण विश्वविद्यालयों में अध्यापन सेवा का सगठन आवश्यक था।[2]

8 औद्योगिक तथा व्यावसायिक प्रशिक्षक की समस्याओं को जिनमें, अध्यापकों, वकीलों, डाक्टरों, इजिनियरों, स्थापत्यकला-विशारद में तथा जमींदारों की समस्याएँ सम्मिलित थीं, विश्वविद्यालय द्वारा हाथ में लिए जाने का निश्चय हुआ तथा इस सम्बन्ध में अनेक सुधार प्रस्तावित किये गये।

9 शिक्षा का माध्यम अधिकतर विषयों के लिए हाईस्कूल तक भारतीय भाषा ही रखने का ही निश्चय किया गया, किन्तु वाद के वर्षो के लिए ही अंग्रेजी माध्यम की सिफारिश की गयी।[3]

10 परीक्षा प्रणाली में पूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता थी। भारत सरकार ने एक बिल का मसविदा तैयार किया, जिसमे कमीशन की सिफारिशों को लागू करने का निश्चय किया गया।[4] तथापि आर्थिक कठिनाइयां मार्ग में थीं। 1920 में आयोग की सिफारिशें भारत सरकार के द्वारा प्रान्तीय सरकार को भेजी गयीं। ढाका तथा लखनऊ विश्वविद्यालय 1920 में एकात्मक अध्यापन आदर्शो पर प्रारम्भ किए गये। इलाहाबाद विश्वविद्यालय 1921 में तथा दिल्ली विश्वविद्यालय 1922 में उक्त आदर्शो पर आरम्भ किए गये।[5]

1919 के भारत सरकार अधिनियम के अनुसार शिक्षा का विभाग प्रान्तीय विधान- मण्डलों के प्रति उत्तरदायी भारतीय मन्त्रियों को सौंप दिया गया। तथापि भारत सरकार उच्च शिक्षा की सामान्य नीति का नियंत्रण तथा पथ-प्रदर्शन करती रही।

---

1 बेसेण्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 67
2 वही-पृष्ठ0 69
3 बेवन ई0-थाट्स आन इण्डियन डिस्कटेन्ट्स लदन पृ0 63
4 जे0 पी0 नायक-एलिमेण्टरी एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 70
5 वही-पृष्ठ0 72

1935 के भारत सरकार अधिनियम के अधीन सम्पूर्ण विश्वविद्यालसय शिक्षा प्रान्तीय सरकारों के नियत्रण में कर दी गयी। इसका एकमात्र अपवाद ऐसे विश्वविद्यालय थे, जिनका कार्यक्षेत्र दो प्रान्तो में था।[1]

शिक्षा के लिए सार्जेंट योजनाः- यह योजना भारत के शिक्षा-परामर्शदाता सरजान सार्जेण्ट ने तैयार की इसके द्वारा 6 से 14 वर्ष के बालकों के लिए देशद्वापी नि शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा को आरम्भ करने का निश्चय किया गया। इस योजना पर 200 करोण रूपये वार्षिक व्यय का अनुमान लगाया गया। बेसिक शिक्षा को दो भागों में बाँट दिया गया-निम्न स्तर जिसमें पहले पाँच वर्ष तथा, उच्च स्तर, जिसमें तीन वर्ष का समय रखा गया। प्राइमरी स्तर के बाद सभी बालकों के लिए हाईस्कूल में जाने की अनुमति नहीं भी।[2] केवल उन्हीं विद्यार्थियों को आगे पढने की अनुमति मिलने का प्रस्ताव था, जो उच्च शिक्षा से कुछ लाभ उठा सकें। लगभग प्रत्येक पाँच बालकों से एक के सम्बन्ध में हाई स्कूल में प्रवेश की आशा की गयी थी। स्कूलों को चलाने की व्यवस्था यथा सम्भव सार्वजनिक धनराशि से प्रस्तावित की गयी। कालेज में प्रवेश के सम्बन्ध में भी पाबन्दियाँ लगाने का प्रस्ताव रखा गया।[3] इण्टरमीडिएट पाठ्य क्रम को हाईस्कूल पाठ्यक्रम में मिला देने का निश्चय किया गया। कालेज शिक्षण की अवधि तीन वर्ष के लिए प्रस्तावित की गयी। सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीय युवक आन्दोलन आरम्भ किये जाने का सुझाव दिया गया। उस आन्दोलन का उद्देश्य नवयुवकों को अपने शरीर बनाने तथा अपने देश की सेवा करने की शिक्षा देना था।[4]

1949, राधाकृष्णन आयोगः- भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने 1948 में एक विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति की, जिसके सभापति सर राधाकृष्णन थे।[5]

---

1 दयाल बी0-द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन पृ0 79
2 मेहृयू आर्थर- द एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 87
3 वही-पृष्ठ0 88
4 गुड सी0 बी0-इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्च, 1963-पृ0 87
5 टक मैन, बी0 डब्ल्यू0 कण्डक्टिग एजुकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क, 1972 पृ0 36

सम्पूर्ण देश का भ्रमण करने, लोगों से भेंट करने, विभिन्न क्षेत्रों से स्मृति-पत्र प्राप्त करने तथा उन पर विचार करने के पश्चात् आयोग ने 1949 में निम्नलिखित सिफारिशें कीं-आयोग ने सिफारिश की कि शान्ति निकेतन तथा जामिया मिलिया को आदर्श मानकर ग्रामीण विश्वविद्यालयो की स्थापना की जाए। विवरण में शिक्षा के लिए कम धनराशि देने के सम्बन्ध में आलोचना की गयी। उसके अनुमान में यह धनराधि सम्पूर्ण राजस्व के 5 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। आयोग ने छात्र वृत्तियों तथा सहायता के सम्बन्ध में भी धनराशि की मात्रा काफी बढाने पर बल दिया, जिससे निर्धन छात्रों को हानि न उठानी पडें।[1] कालेजों को 1000 छात्रों से अधिक का प्रवेश करने से रोक दिया गया। जिन क्षेत्रो में संघीय भाषा मातृभाषा न हो, वहाँ सघीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की सिफारिश की गयी। यदि संघीय मातृभाषा एक ही हो, उस दशा में छात्रों को कोई अन्य भारतीय, प्राच्य अथवा भारतीय भाषा लेने की सिफारिश की गयी। शैक्षणिक स्तरों के लिए, शिक्षा-माध्यम के रूप में अंग्रेजी को शीघ्र हटाये जाने के लिए, शीघ्रता न किये जाने की भी सिफारिश की गयी।[2] आयोग ने इस सम्बन्ध मे कोई अवधि निश्चित नहीं की किन्हीं जातिगत अथवा वर्गगत धार्मिक विचारों पर बल नहीं दिया गया। सहशिक्षा के सम्बन्ध में कहा गया कि माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर तथा पुन कालेज स्तर पर अपनाई जा सकती है। आयोग ने अध्यापकों का स्तर उन्नत करने के सम्बन्ध में पर्याप्त बल दिया। अध्यापकों के चार वर्गों का उल्लेख किया गया-प्राध्यापक, रीडर, अध्यापक तथा शिक्षक। एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में पदोन्नति के लिए योग्यता को एकमात्र आधार स्वीकार किया गया।[3]

विश्वविद्यालय अनुदान आयोगः- 1956 में भारतीय संसद ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम पास किया। उस अधिनियम के आधार पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना की गयी।[4] उसके नौ सदस्य केन्द्रीय सरकार मनोनीत करती है। प्रत्येक 6 वर्ष के लिए रहता है। आयोग का अध्यक्ष भी केन्द्रीय सरकार

1 पाउला सिल्सर-एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन पृ0 87
2 वही-पृष्ठ0 88
3 जे0 पी0 नायक-एलिमेण्टरी एजुकेशन इन इण्डियन पृ0 82
4. बैसेण्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 103

मनोनीत करती है। आयोग का कर्तव्य है कि वह भारत के विश्वविद्यालयों और अन्य शिक्षा-सम्बन्धी सस्थाओं से बातचीत करे और विश्वविद्यालयों की शिक्षा का स्तर ऊँचा करने का सब प्रकार से प्रयत्न करे। विश्वविद्यालयों मे पठन-पाठन, परीक्षाओ और अनुसधान पर भी जोर दे।[1] इस काम के लिए आयोग का कर्तव्य है कि वह विश्वविद्यालयो की आर्थिक आवश्यकताओं की जाँच करे और उनको पर्याप्त धन दे और यह भी देखे कि क्या वह धन ठीक तरीके से खर्च किया गया है अथवा नहीं आयोग का यह भी कर्तव्य है कि वह अपना विचार सरकार को दे कि किसी नये विश्वविद्यालयो की आवश्यकताओं की जॉच करने के लिए आयोग उनका मुआयना भी कर सकता है। यदि कोई विश्वविद्यालय आयोग की सिफारिश को नहीं मानता तो आयोग आर्थिक सहायता बन्द कर सकता है। आयोग केन्द्रीय सरकार द्वारा प्राप्त निधियो का विभिन्न विश्वविद्यालयों के रूप मे वितरण करता है, और अनुसंधान और प्रशिक्षण के विकास में सहायता देता है।[2]

माध्यमिक शिक्षा आयोगः- 1952 में डा0 मुदलियर की अध्यक्षता में एक माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की गयी। अगले वर्ष आयोग ने अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश की।[3] आयोग की मुख्य सिफारिशें इस प्रकार हैं :-

1. विद्यालय पाठ्यक्रम की अवधि 12 वर्ष से घटा कर 11 वर्ष कर दी जाये।
2 विद्यालय स्तर पर तीन भाषाएँ पढ़ाई जायें मातृभाषा, संघीय भाषा और अग्रेजी। जिन छात्रों की मातृ-भाषा हिन्दी हो उन्हें एक आधुनिक भारतीय भाषा पढ़ाई जाये।
3 बहुउद्देशीय विद्यालयों की स्थापना की जाये।
4 परीक्षा-पद्धति में सुधार किया जाये।
5 अध्यापकों की सेवा-शर्तो में सुधार किया जाये।
6 पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं को अच्छा बनाया जाये।[4]

---

1 हावेल, ए0-एजुकेशन इन ब्रिटिश इण्डिया प्रायर टू 1854 एण्ड इन 1870-71, कलकत्ता, 1872 पृ0 162
2 वही-पृष्ठ 167
3 वही-पृष्ठ 170
4 चैपमैन, पी0-हिन्दू फीमेल एजुकेशन लदन 1839 पृ0 87

कोठारी शिक्षा-आयोगः- जुलाई 1964 में एक आयोग डा0 कोठारी की अध्यक्षता में नियुक्त किया गया, जिसे सरकार को शिक्षा के सभी कक्षों तथा पाठ्यक्रमों के विषय में राष्ट्रीय नमूने की रूपरेखा, साधारण सिद्धान्त तथा नीतियों को रूपरेखा बनाने का आदेश दिया गया। ससार के प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों और वैज्ञानिकों की सहायता भी ली गयी।[1] आयोग ने यह स्वीकार किया कि शिक्षा और अनुसन्धान दोनों ही देश की समस्त आर्थिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति के निर्णयक हैं। आयोग की प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार थीं।[2]

1 विज्ञान की शिक्षा को महत्व दिया जाये और विद्यालय शिक्षा का अभिन्न अग बना दिया जाए। पठन-पाठन और अनुसंधान पर जोर दिया जाये।

2 सामान्य शिक्षा को शिक्षा के सभी स्तरों पर दिया जाये।[3]

3 व्यावसायिक शिक्षा पर, विशेषकर माध्यमिक चरण में, अधिक जोर दिया जाये।[4]

4 सभी आधुनिक भाषाओं का शिक्षा माध्यम के रूप में और उस राज्य में प्रशासन की भाषा के रूप में विकास किया जाये। हिन्दी में संम्पूर्ण देश की सम्पूर्ण भाषा के रूप में विकसित किया जाये। अंग्रेजी की पढाई भी जारी रखी जाए।[5]

5 त्रि-भाषा के फार्मूले में संशोधन किया जाये।

6. शिक्षा में सामाजिक, नौतिक और आध्यामिक शिक्षा के विकास पर जोर दिया जाये।[6]

7 शिक्षकों की कार्य और सेवा के शर्तो में सुधार किया जाये। सभी प्रकार के विद्यालयों में एक जैसा काम करने वाले शिक्षकों का वेतन समान होना चाहिए और पद में उन्नति के अवसर होने चाहिए।

8. शिक्षा सुविधाओं का विस्तार किया जाए। सभी बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की जायें। बूढे लोगों को पढाने के विशेष प्रयास किये जायें।

---

1 थामस एफ0 डब्ल्यू0-द हिस्ट्री एण्ड प्रास्पेक्ट आफ ब्रिटिश एजुकेशन इन इण्डिया, लदन, 1891 पृ0 87
2 ट्रेवेलियन, सी0 ई0-आन द एजुकेशन आफ द पीपुल आफ इण्डिया पृ0 122
3 वही-पृष्ठ 125
4 एफ0 टी0 विले-एजुकेशन टूडे एण्ड टूमारो पृ0 87
5 वही-पृष्ठ 180

जब राजीव गाँधी प्रधान मत्री बने, उन्होंने शिक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए एक कमेटी बनाई और उसकी सिफारिशो को पूरा करने के लिए भारतीय सरकार बहुत कोशिश कर रही है। नई शिक्षा-नीति का बोलबाला है और उसके लिए शिक्षकों को ट्रेनिग दी जा रही है।[1]

शिक्षा जगत में इलाहाबाद का विशेष महत्व रहा है। इसका मूल कारण यह था कि आधुनिक युग मे इलाहाबाद का महत्व क्रमश बढता ही गया। बक्सर के युद्ध के बाद जो शान्ति वार्ता हुयी। उसका पटाक्षेप इसी नगर मे हुआ। शाहआलम द्वितीय ने बंगाल, बिहार, उडीसा की दीवनी इस्ट इण्डिया कम्पनी को इलाहाबाद में ही प्रदान की।[2] सुजाउद्दौला के साथ 1765 की संधि भी इलाहाबाद में ही हुयी। गंगा-यमुना का सगम होने के कारण जल मार्ग से व्यापार का भी यह केन्द्र था। संयुक्त प्रांत की राजधानी भी आगरा से इलाहाबाद स्थानान्तरित हुयी। शिक्षण संस्थाओं मे पहले म्योर सेंट्रल कालेज की स्थापना 1872 और विश्वविद्यालय की स्थापना 1887 में हुयी।[3] इलाहाबाद विश्वविद्यालय देश का पाँचवाँ विश्वविद्यालय था और प्रान्त का पहला। ब्रिटिश शासन काल मे प्राइमरी, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा का केन्द्र प्रादेशिक राजधानी होने के कारण बना रहा। स्वतत्रता प्राप्ति के समय राजधानी लखनऊ थी। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद का मुख्यालय इलाहाबाद बना रहा। नगर मे कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट मिशनरियों द्वारा संचालित अनेक विद्यालय विकसित हुए।[4]

नैनी का कृषि महाविद्यालय अपनी श्रेणी का संम्पूर्ण देश में एक विशिष्ट विद्यालय है। इस नगर में बडी सख्या में संस्कृत पाठशालाओं का भी विकास हुआ और मुश्लिम सम्प्रदाय के मकतब और मदरसे भी बडी सख्या में मेरे अध्ययन काल में विकसित हुए। सन् 1961 ई0 में एक मेडिकल कालेज और एक इन्जीनियरिंग कालेज की स्थापना नगर में हुयी।[5]

---

1 एफ0 टी0 विले-एजुकेशन टूडे एण्ड टूमारो पृ0 70
2 ट्रेवेलियन सी0 ई0-आन द एजुकेशन आफ द पीपुल आफ इण्डिया पृ0 105
3 वही-पृष्ठ 117
4 सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी के अनुसार
5 वही

अध्यापकों के पशिक्षण हेतु बी0 एड0 एव, एल0 टी0 इत्यादि के कोर्स चलते हैं। सेण्ट्रल पैडागोजीकल इन्स्टीट्यूट, मनोविज्ञानशाला, राजकीय अभिलेखागार एव गृह विज्ञान महाविद्यालय नगर की शिक्षण सुविधा को विविधता प्रदान करते हैं।[1] नगर की एक और विशेषता है कि खेलो के प्रशिक्षण की सुविधा यहाॅ उपलब्ध है और उसके लिए छात्रावास भी है।[2]

---

1 शहर के विद्यालयों से प्राप्त सुचना के अनुसार।

2 शिक्षण सस्थानों के प्रचार्यो से प्राप्त सुचना के अनुसार।

अध्याय- 2

प्राथमिक शिक्षा

सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति की आधार शिला प्राथमिक शिक्षा है। किसी भी देश में शिक्षा प्रणाली के विकास मे अधिकतम महत्व इसी का है। यदि विद्यालयो को विभिन्न श्रेणियों मे बॉटा जाय तो प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय एव उच्च शिक्षा के केन्द्र विशेष स्थान प्राप्त करेंगे। विश्व के अधिकतर देशों में सामान्य व्यक्ति के लिए उच्च शिक्षा को आवश्यक नहीं माना गया हैं। केवल भारत ही ऐसा देश है जहॉ स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् उच्च शिक्षा की ओर हर सामान्य व्यक्ति अग्रसर होने लगा। अन्यत्र केवल प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा एकआम आदमी के लिए आवश्यक समझी गयी है। सामान्य जीवन यापन के लिए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति कहीं भी नौकरी प्राप्त कर लेता है। स्वतत्र भारत में यह स्थिति बदली हुयी थी। वस्तुत प्राथमिकशिक्षा को विश्व भर में वरीयता दी गयी है। यह स्वीकार किया गया है कि आशिक्षा का अन्धकार मनुष्य का सबसे बडा शत्रु है।[1] समाज के सम्पूर्ण विकास में शिक्षा को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। यहीं कारण है कि विश्व के पॉच प्रगतिशील देशों ने 1870 के दशक में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य घोषित किया। इन देशों के नाम क्रमश इस प्रकार हैं- इग्लैंड, फ्रास, जर्मनी, जापान एव सयुक्तराज्य अमेरिका।[2]

पिछले 130 वर्षो मे इन पॉच देशों ने विकास के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सफलता प्राप्त की है। जब इग्लैण्ड ने प्राथमिक शिक्षा के कानून बनाकर अनिवार्य घोषित किया, उस समय भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन का ठीक प्रकार से विकास नहीं हो सका था।[3] उन्नींवर्सी शताब्दी में राजा राम मोहन राय, लार्डविलयम बैंटिंग, लार्ड मैकाले, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, चार्ल्स वुड एव लार्ड डलहौजी के प्रयासों से अंग्रेजी शिक्षा का विकास तो हुआ था, किन्तु इसका विस्तार न हो पाया था। विद्यालयों की सख्या बहुत कम थी और सरकार सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए प्राथमिक स्तर पर विद्यालय खोलने में अक्षम थी। बहुत बडी संख्या में विद्यालय खोलना अत्यधिक खर्चीला भी था और देश में ससाधनो की कमी थी। सरकार ने इस कारण से निजी स्कूलो को शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित किया और 'ग्राण्ट इन एण्ड' प्रणाली

---

1 एलफिसटन्ज एम0-हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ0 14
2 वही-पृष्ठ 15
3 वही-पृष्ठ 16

विकसित हुयी। जिस वर्ष भारत में चौथे विश्व विद्यालय की स्थापना लाहौर में हुयी उस समय हण्टर आयोग ने यह प्रमुख सिफारिश की कि देश में प्राथमिक शिक्षा की प्रगति की विशेष आवश्यकता थी।[1] इसके पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो गयी और राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथमचरण आरम्भ हुआ। समाज और देश में जागरूकता का नया दौर आया। गोपाल कृष्ण गोखले ने सन् 1911 में वायसराय की कौंसिल में एक बिल प्रस्तुत किया, जिसमें प्राथमिक शिक्षा को आवश्यक करने का प्रावधान था। यह बिल चूँकि सरकार द्वारा समर्थित न था इसलिए अस्वीकार हो गया। अब यह कहा जा सकता है कि इस देश में शैक्षिक विकास पर विदेशी सरकार न तो आवश्यक ध्यान ही दे पा रही थी न उपयुक्त धनराशि ही उपलब्ध करा पा रही थी। पूरे ब्रिटिश शासनकाल में निरक्षर बच्चों की सख्या एक समस्या बनी रही। विद्यालय तो खुलते थे किन्तु शिक्षा प्राप्त करने योग्य बच्चों की संख्या उससे कई गुना होती थी। पूरे संयुक्त प्रांत का यही हाल था। इलाहाबाद इससे अलग कैसे रह सकता था।[2] यह सत्य है कि इलाहाबाद संयुक्त प्रात की राजधानी होने के कारण एक अलग स्थान रखता था।[3] किन्तु शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो सका और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिक ससाधन जुटाने और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता थी। प्राथमिक शिक्षा में कई प्रकार के विद्यालय योगदान करते थे। ईसाई और मुसलमानों द्वारा चलाये गये विद्यालय एक अलग श्रेणी में आते हैं। इसी प्रकार संस्कृत पाठशालाएँ भी अपना स्थान रखती हैं। इन तीन प्रकार के विद्यालयों से अलग सामान्य प्राथमिक स्कूल जहाँ हिन्दी माध्यम से शिक्षा दी जाती है, एक अलग श्रेणी में आते हैं।[4]

इलाहाबाद नगर 1930 तक संयुक्त प्रात की राजधानी था। इसके पूर्व राजधानी आगरा में थी। आगरा से इलाहाबाद राजधानी परिवर्तन के अवश्य ही सशक्त कारण रहे होंगे। ईसाई मिशनरी विशेष तौर से मद्रास और बगाल में शिक्षण संस्थाओं के विकास में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से सलग्न थे। इसका प्रमाण इन क्षेत्रों के

---

1 देसमुख सी0 डी0- इन द पोर्टल्स आफ इण्डियन यूनिवर्सीटीज पृ0 18
2 वही-पृष्ठ 19
3 मेत्यू आर्थर-द एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 23
4 वही-पृष्ठ 24

विद्यालय हैं। मिशनरियों का शैक्षिक कार्यक्रम, जिसे आज उत्तर प्रदेश कहा जाता है। और स्वतत्रता से पूर्व, जिसे सयुक्त प्रात कहते थे। उस क्षेत्र में भी चलता रहा।[1] आगरा मे इस प्रात का सबसे पुराना महाविद्यालय सन् 1823 में स्थापित हुआ। यह आगरा कालेज के नाम से विख्यात है। छोटे स्तर के विद्यालय प्रांत भर में समय-समय पर स्थापित होते रहे। इलाहाबाद संयुक्त प्रात की राजधानी बनने के बाद ईसाईयों का शैक्षिक गढ बन गया।

यहाँ पर रोमन कैथोलिक व प्रोटेस्टेण्ट दोनों समुदायों के विद्यालय खुले। नगर का सर्वेक्षण करने पर यह पता चलता है कि ईसाई मिशनरियों के पास वर्तमान समय में सैकडों एकड भूमि है, जहाँ उनके चर्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय, अस्पताल और अन्य धार्मिक स्थल विद्यमान हैं।

जमुना पार के इलाके में नैनी क्षेत्र में इलाहाबाद एग्रीकचरल इन्स्टीट्यूट का बडा विशाल प्रागण है। यह कहा जा सकता है कि नगर में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के लिए मिशनरियों ने बडी संख्या में विद्यालय खोले, जिसमें गर्ल्स हाईस्कूल, ब्यायज हाईस्कूल, सेण्ट मेरीज कानवेण्ट, सेण्टजोसेफ, विशप जान्सन, मेरी लुकस और बेंथनी कानवेण्ट इत्यादि हैं। की विशेष चर्चा की जा सकती है। इन्हीं के द्वारा संचालित हिन्दी माध्यम के विद्यालय हैं, जिसमे विशेष, मेरीवानामेकर गर्ल्स इण्टर कालेज, सेण्ट एन्थनी कालेज व क्रास्थवेट गर्ल्स इण्टर कालेज आदि प्रमुख हैं।

अधिकतर अंग्रेजी माध्यम के प्राथमिक स्कूलों के द्वारा सरकारी अनुदान नहीं लिया जाता। जबकि इन्हीं के हिन्दी माध्यम वाले विद्यालय राजकीय सहायता प्राप्त हैं। ईसाई मिशनरियों द्वारा सचालित स्कूलों में यह विशेषता पायी जाती है कि वहाँ अनुशासन अन्य विद्यालयों से अच्छा रहता है। और सामान्य तौर से शिक्षण कार्य में भी व्यवधान नहीं होता, किन्तु इनके प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार से प्रयास करना पडता है और दबाव डलवाने पड़ते हैं। इन विद्यालयों में ट्यूशन और कोचिंग का भी बोलबाला है। अधिकतर विद्यार्थियों को उसी विद्यालय के अध्यापक के पास ट्यूशन के लिए जाना पड़ता है। चाहे वह कक्षा प्रथम का ही

1 बेसेन्ट एनी-हायर एजुकेशन इन इण्डिया पृ0 52

विद्यार्थी क्यों न हो। यह एक विडम्बना है कि जो विद्यालय एक ओर अनुशासन के लिए जाना जाता है। वहॉ ट्यूशन के माध्यम से धन अर्जित करना सामान्य बात हो गयी है और शिक्षण का स्तर गिर गया है।

इलाहाबाद से अधिक संस्कृत शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनारस को माना जाता था, किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इलाहाबाद नगर में बहुत से सस्कृत विद्यालय थे, जिसमें सामान्य स्तर से कुछ उच्च स्तर की भी शिक्षा दी जाती थी। प0 मदन मोहन मालवीय ने प्रारम्भ मे एक ऐसे ही विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की, जिसे हरदेव-गुरू की पाठ्शाला कहते थे। सामान्य हिन्दू परिवार के बच्चे इसी प्रकार की पाठ्शाला मे पारम्परिक शिक्षा प्राप्त करते थे। समय के साथ सस्कृत पाठशालाओं की हालत बिगडती गयी और बीसवीं शताब्दी में ये विद्यालय चलते तो रहे किन्तु वित्तीय सकट यहॉ पर बना रहता था। यह बात केवल इलाहाबाद की संस्कृत पाठशालाओं पर लागू नहीं होती वरन् अन्य क्षेत्रों एवं अन्य प्रांतों पर भी लागू होती है। जहॉ हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम की पाठशालाओं की संख्या में वृद्धि होती गयी। वहॉं पर यह देखने में आता है कि उर्दू और सस्कृत माध्यम की पाठशालाएँ संख्या में घटीं और उनकी आर्थिक स्थिति भी बिगडी। ब्रिटिश शासन के समय अग्रेजी भाषा का महत्व अधिक था। इसलिए अंग्रेजी पाठशालाएँ अधिक महत्वपूर्ण होती थीं।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी माध्यम के स्कूलों का महत्व काफी बढ गया। किन्तु संस्कृत पाठशाला दूसरे दर्जे के नागरिक की श्रेणी में पहुॅच गयी। बीसवीं शताब्दी के अन्त में इन पाठशालाओ की स्थिति दयनीय ही है।[1]

हिन्दी माध्यम से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की संख्या सबसे अधिक है। वास्तव में सामान्य वर्ग के नागरिकों के लिए बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा का आधार यहीं विद्यालय है। प्रारम्भिक शिक्षा यदि अच्छे ढग से प्राप्त हो तो विद्यार्थी माध्यमिक शिक्षा के लिए भली प्रकार तैयार होता है और क्रमश उच्च शिक्षा के लिए भारतीय शिक्षा के इतिहास में बार-बार प्रारम्भिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया गया है। इसी बात को इस अध्याय में पहले भी बताया जा चुका है। इन सब के बावजूद

---

1 विद्यालयों के सर्वेक्षण से प्राप्त के अनुसार।

शैक्षिक विकास का यह एक दुखद सत्य है कि प्राथमिक शिक्षा पर पिछले दो सौ वर्षों मे समुचित ध्यान नहीं दिया गया। यह विचार एक प्रकार की गहरी चिन्ता उत्पन्न करता है कि इतने आयोगों की सिफारिशों के बाद भी शिक्षा का यह पक्ष तिरस्कृत क्यो है। इलाहाबाद में प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय बड़ी संख्या में विद्यमान हैं। हिन्दी माध्यम के विद्यालयों मे जहाँ कक्षा प्रथम से पाँच तक शिक्षा दी जाती है। कई प्रकार के हैं। बहुत से विद्यालय केवल प्राइमरी स्कूल होते हैं। अन्य बहुत से ऐसे विद्यालय हैं, जहाँ कक्षा प्रथम से आठ तक शिक्षा दी जाती है। ऐसे भी विद्यालय हैं जहाँ कक्षा प्रथम से कक्षा दस तक अथवा कक्षा बारह तक शिक्षा दी जाती है। जो विद्यालय मान्यत प्राप्त हैं। वह एक श्रेणी में हैं। जिसे मान्यता प्राप्त नहीं है वह एक दूसरी श्रेणी में हैं। इसी प्रकार अधिकतर विद्यालय प्राइवेट हैं, जब कि बहुत से विद्यालय सरकारी भी हैं। 'ग्राण्ट इन एड', प्रणाली से आच्छादित प्राइवेट विद्यालयों को सरकारी मानक स्वीकार करने पडते हैं। इन सब बातों से प्राथमिक विद्यालयों की जो तस्वीर उभरती है वह अत्यन्त स्पष्ट नहीं होती। प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के वेतन मान सतोष जनक नहीं हैं। इससे प्राइवेट कोचिंग और ट्यूशन का जन्म होता है। वैसे यह कथन पूर्ण सत्य नहीं माना जा सकता कि, जिस अध्यापक का वेतन कम है वही ट्यूशन करेगा। प्राइवेट ट्यूशन प्राइवेट डाक्टरी प्रैक्टिस के समान एक विवादास्वद और राष्ट्रव्यापी समस्या बन चुका है। जैसे सरकारी अस्पताल अथवा मेडिकल कालेज का डाकटर पूरे देश में प्राइवेट प्रैक्टिस करता है। उसी प्रकार विद्यालय मे कार्यरत अध्यापक प्राइवेट ट्यूशन कर सकता है। अथवा करता है। दोनों प्रकार के कार्यो के पक्ष और विपक्ष में तर्क दिये जाते हैं। अभी तक इन प्रश्नों का कोई संतोष जनक हल नहीं निकला है। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की आय कम होने से उसका जीवन स्तर अच्छा नहीं है। ऐसा शिक्षक विद्यालय में इमानदारी से काम भी नहीं करता। सामान्य तौर पर उसकी शैक्षिक योग्यता भी मामूली होती है। यदि कागज पर शैक्षिक योग्यता दिखाई भी पडती है तो वास्तविकता कुछ और होती है। कम योग्यता वाला शिक्षक प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान करने के लिए उपयुक्त नहीं है। वास्तव में जो शिक्षक शिक्षा की बुनियाद डाले। उसको हर प्रकार से मजबूत होना चाहिए। उसकी आमदनी भी ठीक हो उसका जीवन स्तर भी ठीक हो

और शैक्षिक योग्यता भी अच्छी हो। ऐसा होने पर ही वह पाँच से दस, ग्यारह वर्ष के बच्चो के साथ न्याय करने की स्थिति में होगा।

इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा की जो संस्थाएं हैं वह सरकारी अर्ध सरकारी, प्राइवेट या जैसी भी हो उनमें शिक्षक और शिक्षा की स्थिति संतोष जनक नहीं है। इसी के साथ एक अन्य श्रेणी के विद्यालय भी जुडे हैं। ये ऐसे विद्यालय हैं, जो आमतौर से मान्यता प्राप्त नहीं हैं, किन्तु पूरे शहर में फैले हुए है। ये हैं हर मोहल्ले में स्थापित नर्सरी स्कूल जहॉ तीन वर्ष का बच्चा लिया जाता है और सुविधानुसार जब तक वह कक्षा पॉच पास न कर ले उसे शिक्षा दी जाती है। किसी-2 विद्यालय में दो ही वर्ष तक बच्चा रहता है। ये विद्यालय आते तो प्राथमिक शिक्षा की श्रेणी में ही हैं किन्तु ये मान्यता प्राप्त नहीं होते। इन विद्यालयों में फीस बहुत होती है। अर्ध सरकारी एवं सरकारी विद्यालयों में फीस बहुत कम होती है। नर्सरी स्कूल में शिक्षक के वेतन का कोयी आधार नहीं होता। प्रबन्धक मनमाने ढंग से शिक्षक को वेतन के नाम पर कुछ राशि देते हैं। नर्शरी स्कूल का कार्यकाल भी तीन-चार घण्टे का होता है। और विद्यालय प्रबन्धक इसे पार्टटाइम कार्य मानते हैं। आमतौर पर शिक्षक के रूप में यहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएँ कार्य करती हैं। जिन्हें बीसवीं शताब्दी के अंत में भी मासिक वेतन दो सौ से पॉच सौ रूपया मिलता है। कभी-कभी विद्यालय से प्राप्त धनराशि रिक्शे भाडे के लिए भी पर्याप्त नहीं होती। यहाँ शिक्षक कुछ समय के लिए ही कार्य करते हैं और प्रतिवर्ष शिक्षक बदल जाते हैं। यह कहा जा सकता है कि नर्सरी और प्राथमिक शिक्षण सस्थाओं की स्थिति अच्छी नहीं है और इसके गहन चिन्तन पर आधारित सुधार अपेक्षित है।

शहर में सरकारी प्राथमिक शिक्षण सस्थान अत्यधिक हैं, जो प्राथमिक शिक्षण कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं उनकी सख्या लगभग 200 हैं, वहीं क्या व्यवस्था इसकी किसी को परवाह नहीं है। वहॉ स्थिति ये है कि छात्र अधिक व अध्यापक कम। जो हैं वो भी कभी आते हैं कभी नहीं। सुविधा जनक विद्यालयों में अपने चहेते अध्यापकों को सिफारिश करके जन प्रतिनिधि तमाम सवालों के घेरे में हैं।----वास्तव में प्राथमिक शिक्षा की दुर्गति के लिए राजनीतिक हस्तक्षेप जिम्मेदार

रहा है दूरस्थ इलाकों के प्राथमिक विद्यालयों की हालत दयनीय है। शहर के दर्जनों विद्यालयों के भवन हैं ही नहीं यदि हैं भी तो बहुत अपर्याप्त और सैकडों विद्यालयों के भवन है तो इतने छूट-फूट चुके हैं कि वर्षा होने पर खुले आसमान जैसी स्थिति कमरों की हो जाती है। अध्यापकों पर सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी का ठीक प्रकार से नियत्रण नहीं होता। भवनों की मरम्मत व रख रखाव के लिए धन नहीं मिलता।[1]

इस चक्कर में निर्धन नौनिहालों की बुनियाद कमजोर हो रही है। भवन व अध्यापक तो दूर इन नौनिहालो की टाट-पट्टी पर बैठना पडता है, जिसमें से कुछ विद्यालयो में छात्रों व छात्राओ को बैठने के लिए आसन घर से ले कर जाना पडता हैं बच्चे पढाई से ज्यादा खेलकूद मे समय व्यतीत करते हैं। नौनिहाल इसी तरह कक्षा पॉच पास कर लेता है। उन्हें फेल भी नहीं किया जाता क्यों कि अध्यापकों को अच्छा परिणाम दिखाना होता है। कच्ची बुनियाद से उठकर जब नहीं नौनिहाल छात्र बनकर नवीं कक्षा में प्रवेश करता है, तब उस की ऑखे खुलती है। नवीं के बाद जब वह उसे बुनियाद कच्ची होने पर आत्मलानि होती है। यही सिलसिला पचास वर्षो से आजतक जारी है लेकिन हमारे जन प्रतिनिधि बुनियादी शिक्षा को मजबूत करने के लिए गभीर नहीं हुए हैं। बल्कि उल्टी-2 सिफारिशें करके बुनियादी शिक्षा के ढाँचे को और बदतर बना रहे हैं।

मकतब और मदरसे मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में धार्मिक शिक्षा के केन्द्र होते हैं। मुस्लिम शिक्षा प्रणाली मे मदरसे उच्च शिक्षा के केन्द्र होते हैं। मकतब में प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। मकतब अधिकांशत मस्जिदों से सम्बद्ध रहते हैं। साधारणतया सभी मुस्लिम बालक मकतब में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। बालिकाऍ बहुत ही कम मकतब में पढती हैं। बालिकाओं को या तो घर पर माता व पिता ही शिक्षा देते हैं अथवा किसी अध्यापिका को घर पर ही शिक्षा प्रदान करने हेतु वेतन पर रख लिया जाता है।

मुस्लिम बालक, बालिका की शिक्षा का प्रारम्भ तब होता है, जब उसकी उम्र 4 वर्ष 4 महीने 4 दिन के पश्चात् विस्मिल्लाह की रस्म के साथ होता है। इस रस्म में कुरान की कुछ आयत (वाक्य) शिक्षक पढते हैं। और बालक उसका अनुशरण करता है

1 दैनिक जागरण समाचार पत्र के अनुसार।

और यहीं से बालक की शिक्षा प्रारम्भ होती है। प्रारम्भिक कक्षाओं में बालक को कुरान की शिक्षा दी जाती है।

मकतब व मदरसो की वार्षिक शैक्षिक रूप रेखा अरबी कैलेण्डर के अनुसार निश्चित की जाती है। वर्ष के 365 दिन का कार्यक्रम अवसतन 130 से 160 दिन तक ही चल पाता है। स्कूलों की भाँति यहाँ वार्षिक छुट्टी शव्वाल के महीनों में होती है। शव्वाल ईद के महीने को कहते हैं। ईद से पूर्व के महीने को रमजान कहते है और रमजान से पूर्व का महीना शाबान, शाबान से पूर्व के महीने को रजब कहते हैं। जिसमें वार्षिक परीक्षा एवं परीक्षा की तैयारी की छुट्टी रहती है। इसी प्रकार साप्ताहिक अवकाश रविवार न हो कर शुक्रवार को होता है।

मकतबों को कोई सरकारी अनुदान नहीं मिलता और न ही मकतब के मुदर्रिश प्रयल ही करते है। यहाँ का खर्च ईद, रमजान, आदि त्योहारों के चढावे तथा दानी मुसलमानों के द्वारा दान दिये गये पैसे से चलता है। इस प्रकार मुस्लिम प्रारम्भिक शिक्षा में मकतबों का अति विशिष्ट योगदान है, जिसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता, तथा अति विषम आर्थिक परिस्थितियों से जूझते हुए भी मकतबों में शिक्षण कार्य चल रहा है यह आश्चर्य का विषय है।[1]

जब हम प्राथमिक शिक्षा की चर्चा कर रहे हैं तब हमें महिला प्राथमिक शिक्षा पर एक दृष्टि डाल लेना परम आवश्यक है। शिक्षा महिलाओं के स्तर में सुधार लाने और उन्हें पूर्ण प्रोत्साहन देने का आधार हैं। यह वह मौलिक अधिकार है जो समाज के पूर्ण सदस्य के रूप में उनकी भूमिका को पूरा करने के लिए महिलाओं को दिया जाना चाहिए। भारत में औपनिवेशीकरण के काल में शिक्षा को पूरे तौर पर उपेक्षित रखा गया। इस लिए महिला शिक्षा के प्रोत्साहन और विकास की प्रक्रिया का चित्र आजादी के बाद भी स्पष्ट नहीं होता। इसलिए आजादी के पश्चात् उत्तर प्रदेश में महिला शिक्षा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण रूप से शिक्षा के विकास पर बल देना अति आवश्यक था।

---

1 गयासुद्दीन साहब से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

शिक्षा प्रणाली मे लडकियो की अनुपस्थिति और उनके द्वारा पढाई छोड़े जाने की ऊँची दरे, एक समस्या थी। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में तो बालिकाओं की शिक्षा दरें अत्यन्त नीची थीं। इसके कई सामजिक और आर्थिक कारण थे। शहरी और ग्रामीण स्तर पर स्थितियाँ आजादी से लेकर आज तक अलग-अलग रही हैं। उ0 प्र0 व इलाहाबाद की स्थितियाँ सम्पूर्ण राष्ट्रीय परिदृष्य का ही एक अंग थीं। आजादी के समय सम्पूर्ण भारत की 80 प्रतिशत आबादी जो ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्रों में रहती थी निरक्षर थी। यह स्थिति भारत के लिए सबसे बडी चुनौती थी। इस चुनौती का सामना इलाहाबाद को ही नहीं बल्कि उ0 प्र0 के लगभगग सभी क्षेत्रों को करना था।

1991 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण भारत में आज भी 20 करोड से ज्यादा महिलाएँ निरक्षर हैं। 1991 की जन गणना के अनुसार पुरूषों की साक्षरता दर 64 13 प्रतिशत है और महिला साक्षरता 39 27 प्रतिशत हैं। महिलाओं की इस प्रतिशतता में शहरी क्षेत्रों की महिलाओं में यह दर 64 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 30 62 प्रतिशत है। उ0 प्र0 मे महिला साक्षरता सिर्फ 19 02 प्रतिशत है। 1991 की इस रिपोर्ट में महिलाओं की साक्षरता दर 1946 की स्थितियों को और हमारे शिक्षा विकास कार्यक्रमों की स्थिति स्पष्ट कर देती है। आज भी उ0 प्र0, म0 प्र0, राजस्थान तथा बिहार में भारत के आधे से अधिक निरक्षर रहते हैं, जिनमें महिलाएँ सबसे अधिक हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रथम दशक में राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के विकास से सम्बन्धित प्रश्नों पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाने लगा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तो 1938 में ही राष्ट्रीय योजना समिति का गठ्न किया था, जिसके अध्यक्ष पण्डित जवाहर लाल रेहरू थे। इस समिति ने अपना कार्य सुचारू रूप से करना प्रारम्भ कर दिया। स्वतत्रता प्राप्ति के प्रथम चार वर्ष शिक्षा के विकास की दृष्टि से अत्यन्त प्रभावी रहे।

प्रथम पंच वर्षीय योजना वस्तुत शिक्षा के समस्त विकास के प्रश्न पर गम्भीरता से विचार कर रही थी इसलिए इसमे तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा के विकास की

भी योजनाओ को महत्व दिया गया। साथ ही महिला शिक्षा को विशेष रूप से प्रभावी बनाने के लिए कार्ययोजना तैयार की गयी।

प्रथम पच वर्षीय योजना के तहत राज्य तथा केन्द्र सरकारो का वार्षिक खर्च जो 1950-51 मे 65 करोड रूपये था से बढकर 1955-56 मे 116 करोड रूपये हो गया। योजना के अन्तर्गत शिक्षा पर प्रतिवर्ष केन्द्र तथा राज्यो के खर्चे इस प्रकार बढ रहे थे-

	1951-52	(रूपये करोड में) 1952-53	1953-54	1954-55	1955-56
केन्द्र · राज्य	2 4 17 6	3 0 19 4	3 2 23 4	9 9 27 4	13 6 33 7

शिक्षा के विकास पर खर्च तथा क्रमशः वृद्धि भविष्य में देश के सर्वागीण विकास का सूचक था। किन्तु यह बजट कालान्तर में तुलनीय दृष्टि से कम होता गया। उ0 प्र0 विभिन्न परीक्षाओ मे पास होने वाले विद्यार्थियों की सख्या-

वर्ष	हाईस्कूल तथा समकक्ष परीक्षा मे उत्तीर्ण विद्यार्थियो की संख्या		स्नातक परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या	
	पुरूष	स्त्री	पु0	स्त्री
1946-47	19,366	2 010	4,183	481
1947-48	22,486	-	3458	-

तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा को ध्यान में रखकर प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्रदेश के अन्दर महाविद्यालयो की स्थापना की गयी।

	महाविद्यालय तकनीकी तथा व्यवसायिक शिक्षा
1951-52	20
1952-53	20
1954-55	37
1955-56	40

इन महाविद्यालय के छात्र छात्राओं के बीच संख्या की दृष्टि से न केवल अंतर है बल्कि यह बहुत बडा अन्तर है।

वर्ष	लडके	लडकियाँ	कुल	खर्च
1951-52	16819	1219	18038	5556831
1952-53	20243	1519	21762	5827769
1954-55	21417	1214	22631	5304515
1955-56	23069	1292	24361	5477715

इन आकडों को देखने से स्पष्ट होता है कि लडकियों की संख्या में वृद्धि न के बराबर है। 1952-53 मे जो सख्या 1519 पहुँच गयी थी। वह 1954-55 में घटकर पुन 1214 हो गयी। पुन इनकी सख्या में वृद्धि हुयी। वर्ष 1956 में, किन्तु यह वृद्धि बालकों की तुलना में बहुत ही खराब रही, किन्तु तकनीकी शिक्षा में स्वतत्रता के प्रथम दशक मे महिलाओं की भागीदारी महिला शिक्षा के विकास तथा समाज के विकास में शुभ सकेत था।[1]

वर्ष 1951-1956 के मध्य उ0 प्र0 में मेडिकल कालेजों की संख्या-

वर्ष	संस्थाओं की सख्या	छात्रों की संख्या	छात्राओं की संख्या	कुल	कुलखर्च
1951-52	1	1427	226	1653	373041
1952-53	1	1686	232	1918	657528
1954-55	-	-	-	-	-
1955-56	12	3,25	329	3581	1166921

प्रथम पंचवर्षीय योजना शिक्षा के विकास की दृष्टि से संतोष जनक इस लिए कहा जा सकता है क्योंकि इन वर्षो में सरकार ने शिक्षा पर खर्च तथा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तार पर ध्यान देते हुए उसे कार्यान्वित किया। प्रदेश में एग्रीकल्चर, इन्जीनियरिंग, टीचर्स ट्रेनिंग कालेजों के साथ अन्य शिक्षा पर ध्यान दिया गया। सरकार की ओर से प्रयास सराहनीय रहा, किन्तु समाज के विभिन्न वर्गो की भागीदारी उत्साह जनक नहीं रही।[2]

विशेषकर महिला शिक्षा के क्षेत्र में हॉ इतना अवश्य था कि महिला साक्षरता तथा प्राइमरी शिक्षा में विकास अवश्य दिखाई देता है। जो ऑकडे हमें तकनीकी शिक्षा तथा अन्य शिक्षा में महिलाओं से सम्बन्धित दिखते हैं, वो बाद के वर्षो में थोड़े बहु

1 समाचार पत्रों के विश्तृत अध्ययन से प्राप्त जानकारी के अनुसार।
2 एक सर्वेक्षण के अनुसार।

अन्तर के साथ यथावत बने रहे। स्त्री शिक्षा की गति धीमी होने का कारण समाज के आर्थिक क्रिया कलापों से उसके न जुडे होने के कारण था। परिवार के आर्थिक पक्ष की समस्त जिम्मेदारी नैतिक रूप से पुरूषों को वहन करनी चाहिए। इस विचारधारा ने स्त्री की समाज के इस महत्वपूर्ण पक्ष से वचित रखा और यही कारण था कि स्त्रियों ने भी शिक्षा को हमेशा रोजगार से जोडकर देखा और शिक्षा के विकास के प्रति उनकी रूचि विशेष नहीं रही। फिर भी वर्तमान समय मे इलाहाबाद शहर के तमाम प्राइमरी विद्यालय बालिका प्राथमिक शिक्षा में अप्रतिम योगदान दे रहे हैं।

इस समय शहर में चल रहे राजकीय व राज्य मान्यता व सहायता प्राप्त विद्यालय अत्याधिक है, जिनपर एक नजर डालने से प्रा० शिक्षा के विकास में अत्यधिक सहायता मिलेगी। जो निम्नलिखित हैं।[1]

प्राथमिक प्राइमरी विद्यालय (बालक–बालिका)

1 प्राइमरी पाठशाला मुट्ठीगज
2 प्राइमरी पाठशाला गाजी मडी
3 प्राइमरी पाठशाला लक्ष्मी नारायण रोड
4 प्राइमरी पाठशाला गऊघाट
5 प्राइमरी पाठशाला सत्तीचौरा
6 प्राइमरी पाठशाला कटघर
7 प्राइमरी पाठशाला नयाकृष्ण नगर
8 प्राइमरी पाठशाला बाई का बाग
9 प्राइमरी पाठशाला मिण्टोपार्क
10 प्राइमरी पाठशाला पुराना कृष्णनगर
11 प्राइमरी पाठशाला माटियरा
12 प्राइमरी पाठशाला अलोपी बाग
13 प्राइमरी पाठशाला त्रिवेणी रोड
14 प्राइमरी पाठशाला बैरहना
15 प्राइमरी पाठशाला बाधम्बरी गद्दी
16 प्राइमरी पाठशाला बाधम्बरी बाग
17 प्राइमरी पाठशाला दारागंज
18 प्राइमरी पाठशाला मेनरोड दारागंज
19 प्राइमरी पाठशाला मध्य दारागंज
20 प्राइमरी पाठशाला बक्शी खुर्द

1 विद्यालयों के सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

21 प्राइमरी पाठशाला बक्शी कला
22 प्राइमरी पाठशाला फाफामउ
23 प्राइमरी पाठशाला फाफामउ बाजार
24 प्राइमरी पाठशाला रगपुरा
25 प्राइमरी पाठशाला तेलियर गज
26 प्राइमरी पाठशाला पूरा गडेरिया
27 प्राइमरी पाठशाला लाला की सरायँ
28 प्राइमरी पाठशाला सलोरी
29 प्राइमरी पाठशाला सादियाबाद
30 प्राइमरी पाठशाला ढरहरिया
31 प्राइमरी पाठशाला फतेहपुर बिछुवा
32 प्राइमरी पाठशाला कर्नल गज
33 प्राइमरी पाठशाला कालीथान
34 प्राइमरी पाठशाला सोमनाथ मदिर
35 प्राइमरी पाठशाला पुराना कटरा
36 प्राइमरी पाठशाला हीवेट रोड
37 प्राइमरी पाठशाला मोहतसिमगज
38 प्राइमरी पाठशाला पी0 डी0 टण्डन मार्ग
39 प्राइमरी पाठशाला सरोजनी नायडू मार्ग
40 प्राइमरी पाठशाला राजापुर
41 प्राइमरी पाठशाला स्टैनलीरोड
42 प्राइमरी पाठशाला बेली
43 प्राइमरी पाठशाला पुलिस लाइन
44 प्राइमरी पाठशाला बहितयारी
45 प्राइमरी पाठशाला नयाकटरा
46 प्राइमरी पाठशाला पुराना ममफोर्ड गंज
47 प्राइमरी पाठशाला नया ममफोर्ड गंज
48 प्राइमरी पाठशाला बलरामपुर हाउस
49 प्राइमरी पाठशाला रसूलाबाद
50 प्राइमरी पाठशाला मेहदौरी
51 प्राइमरी कन्या थार्नहिल रोड
52 प्राइमरी कन्या नेवास
53 प्राइमरी कन्या राजापुर
54 प्राइमरी कन्या म्योर रोड
55 प्राइमरी कन्या बेलीं
56 प्राइमरी कन्या नया कटरा
57 प्राइमरी कन्या पुराना कटरा
58 प्राइमरी कन्या नया ममफोर्ड गज

59 प्राइमरी कन्या सप्तम मडी
60 प्राइमरी कन्या बाबा जी की बाग
61 प्राइमरी कन्या पुराना ममफोर्ड गज
62 प्राइमरी कन्या सदियाबाद
63 प्राइमरी कन्या सलोरी
64 प्राइमरी कन्या बस्यिासे
65 प्राइमरी कन्या लाला की सराय
66 प्राइमरी कन्या तेलियार गज
67 प्राइमरी कन्या रसूलाबाद
68 प्राइमरी कन्या फाफामऊ बाजार
69 प्राइमरी कन्या फाफामऊ
70 प्राइमरी कन्या एलनगज
71 प्राइमरी कन्या दरहरिया
72 प्राइमरी कन्या टैगोर टाउन
73 प्राइमरी कन्या मोहत्सिम गज
74 प्राइमरी कन्या हीवेट रोड
75 प्राइमरी कन्या पानदरीबा
76 प्राइमरी कन्या कृष्ण नगर
77 प्राइमरी कन्या बाधम्बरी बाग
78 प्राइमरी कन्या बक्शी कला
79 प्राइमरी पाठशाला दारागंज
80 प्राइमरी पाठशाला साउथ मलाका
81 प्राइमरी पाठशाला तुलाराम बाग
82 प्राइमरी पाठशाला बैरहना
83 प्राइमरी पाठशाला मधवापुर
84 प्राइमरी पाठशाला बाधम्बरीगद्दी
. प्राइमरी पाठशाला मटियारा

पूर्व माध्यमिक विद्यालय

1 पू0 मा0 वि0 पुराना कटरा
2. पू0 मा0 वि0 नया कटरा
3 पू0 मा0 वि0 फाफामऊ
4 पू0 मा0 वि0 दारागज
5 पू0 मा0 वि0 कीटगज नई बस्ती
6 पू0 मा0 वि0 राजापुर
7 पू0 मा0 वि0 बालक दारागंज
8 पू0 मा0 वि0 अलोपी बाग
9 पू0 मा0 वि0 बैरहना

10 पू० मा० वि० राजापुर (बालक)
11 पू० मा० वि० नया कटरा
12 पू० मा० वि० पुरानां कटरा
13 पू० मा० वि० मुट्ठीगज
14 पू० मा० वि० फाफामऊ बाजार
15 पू० मा० वि० साउथ मलाका

श्री शिव नन्दन सिंह शिक्षा अधीक्षक (द्वितीय) से सम्बन्धित विद्यालयों की सूची।

1 प्राइमरी पाठशाला दरियाबाद
2 प्राइमरी पाठशाला अतरसुईया
3 प्राइमरी पाठशाला निहालपुर
4 प्राइमरी पाठशाला हिम्मतगज
5 प्राइमरी पाठशाला रोशनबाग
6 प्राइमरी पाठशाला खुशरूबाग
7 प्राइमरी पाठशाला भावापुर
8 प्राइमरी पाठशाला लुकर गज
9 प्राइमरी पाठशाला बेनीगंज
10 प्राइमरी पाठशाला पकनिरातुल
11 प्राइमरी पाठशाला केशरी
12 प्राइमरी पाठशाला गगागज
13 प्राइमरी पाठशाला करैली
14 प्राइमरी पाठशाला अबूबकरपुर
15 प्राइमरी पाठशाला मीरापुर
16 प्राइमरी पाठशाला सुलेम सराय
17 प्राइमरी पाठशाला धूमनगज
18 प्राइमरी पाठशाला हरवारा
19 प्राइमरी पाठशाला गया सुद्दीनपुर
20 प्राइमरी पाठशाला बमरौली
21 प्राइमरी पाठशाला मीरा पट्टी
22 प्राइमरी पाठशाला तुलसी पुर
23 प्राइमरी पाठशाला दीदी पुर
24 प्राइमरी पाठशाला करैलाबाग कालोनी
25 प्राइमरी पाठशाला रानीमण्डी
26 प्राइमरी पाठशाला सदियापुर
27 प्राइमरी पाठशाला बक्शी बाजार

28 प्राइमरी पाठशाला नरवास कोहना
29 प्राइमरी पाठशाला अटाला
30 प्राइमरी पाठशाला सब्जी मण्डी
31 प्राइमरी पाठशाला करैलाबाग गॉव
32 प्राइमरी पाठशाला नैनी बाजार
33 प्राइमरी पाठशाला पुरा फतेहमोहम्मद
34 प्राइमरी पाठशाला महेवा
35 प्राइमरी पाठशाला नैनी, कालोनी
36 प्राइमरी पाठशाला चकदाउद नगर
37 प्राइमरी पाठशाला चक दीदी
38 प्राइमरी पाठशाला ददरी
39 प्राइमरी पाठशाला मोतीपार्क
40 प्राइमरी पाठशाला लीडर रोड
41 प्राइमरी पाठशाला शाहगंज
42 प्राइमरी पाठशाला बेगम सराय
43 प्राइमरी पाठशाला मालवीय नगर
44 प्राइमरी पाठशाला भारतीय भवन
45 प्राइमरी पाठशाला कन्या बादशाही मंडी
46 कन्या पाठशाला सेन्ट्रल
47 कन्या पाठशाला सब्जी मण्डी
48 कन्या पाठशाला ठइरोबाजार
49 कन्या पाठशाला निहालपुर
50 कन्या पाठशाला गाडीवान टोला
51 कन्या पाठशाला पुराना लूकरगंज
52 कन्या पाठशाला गगा गंज
53 कन्या पाठशाला सुलेम संराय
54 कन्या पाठशाला अबूबकर पुर
55 कन्या पाठशाला कन्हई पुर
56 कन्या पाठशाला हरवारा
57 कन्या पाठशाला बेगम सराय
58 कन्या पाठशाला बमरौली
59 कन्या पाठशाला निरातुल
60 कन्या पाठशाला बेनी गज
61 कन्या पाठशाला करैली
62 कन्या पाठशाला नई बस्ती
63 कन्या पाठशाला करैलीबाग कालोनी
64 कन्या पाठशाला करैलीबाग गॉव
65 कन्या पाठशाला सुल्तानपुर

66 कन्या पाठशाला तुलसी पुर
67 कन्या पाठशाला बक्शी बाजार
68 कन्या पाठशाला सदिया पुर
69 कन्या पाठशाला कोल्हन टोला
70 कन्या पाठशाला अटाला
71 कन्या पाठशाला रानी मण्डी
72 कन्या पाठशाला अतर सुईया
73 कन्या पाठशाला नया अहिया पुर
74 कन्या पाठशाला दरियाबाद
75 कन्या पाठशाला मुट्ठी गज-1
76 कन्या पाठशाला मुट्ठीगज
77 कन्या पाठशाला कीटगज नई बस्ती
78 कन्या पाठशाला ऊँचामंडी
79 कन्या पाठशाला सत्तीचौरा
80 कन्या पाठशाला पुराना अहियापुर
81 कन्या पाठशाला मुंशी रामप्रसाद की बाग
82 कन्या पाठशाला कटघर
83 कन्या पाठशाला मीरापुर
84 कन्या पाठशाला चारकोनी
85 कन्या पाठशाला नैनी
86 कन्या पाठशाला त्रिवेणी रोड
87 कन्या पाठशाला नया लूकर गज
88 कन्या पाठशाला महेवा

पूर्व माध्यमिक विद्यालय

1 पू0 मा0 वि0 पुराना लूकर गंज
2 पू0 मा0 वि0 नैनी
3 पू0 मा0 वि0 हरवारा
4 पू0 मा0 वि0 करैलाबाग कालोनी
5 पू0 मा0 वि0 हीवेट रोड
6 पू0 मा0 वि0 शाहगज
7 पू0 मा0 वि0 अतरसुइया
8 पू0 मा0 वि0 सेन्ट्रल
9. पू0 मा0 वि0 मीरापुर
10 पू0 मा0 वि0 बमरौली
11 पू0 मा0 वि0 नरवास कोहना
12. पू0 मा0 वि0 हरवारा
13 पू0 मा0 वि0 नैनी कालोनी

अध्याय- 3

माध्यमिक शिक्षा

भाग- 1

विश्व विख्यात तीर्शराज, पयाग नगरी को शिक्षा के क्षेत्र में जो ख्याति प्राचीन काल से प्राप्त है उस धरोहर को आज भी अपने अन्दर समेटे हुए है। जिसका प्रमाण ढूढने की आवश्यकता नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में आश्चर्यजनक विकास हो रहा है, अनेक महापुरूषों ने अपना सर्वस्व दान दे दिया, जिसमें श्री ईश्वरशरण जी, मुंशी काली प्रसाद जी, श्री कुलभास्कर जी, व श्री जगत तारण जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

शिक्षा के अनेक चरणो मे से माध्यमिक शिक्षा में छात्रों के कल्याण के लिए अनेक विद्यालय स्थापित किये गये, जिनमें से कुछ राजकीय हैं तथा अधिकतर व्यक्तिगत शिक्षण सस्थान हैं, जिनको सरकार से अनुदान व मान्यता मिली है। इन विद्दालयों में छात्रों को रूंचि के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है।

शिक्षा के क्षेत्र में जिन विद्यालयों व जिन सस्थाओं ने विशेष भूमिका प्रदान की है। उनका विस्तृत वर्गण किया गया है, जिससे हमें इलाहाबाद के छात्रों के माध्यमिक शिक्षा के विषय में सम्पूर्ण जानकारी मिलती है।

राजकीय इण्टर कालेज

इलाहाबाद

गगा यमुना की पावन स्थली महर्षि भारद्वाज की तपोभूमि पौराणिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से प्रख्यात प्रयाग नगरी की लाउदर रोड के पश्चिमी विगत 127 वर्षो से निरंतरर प्रवाहमान शैक्षिक अजस्त्र धारा से अभिसिचित करता हुआ अपने अतीत की गौरवशाली श्रेष्ठ परम्पराओं को अक्षुण्ण बनाये हुए है।[1]

शैशवावस्था में "टाउन स्कूल" की सज्ञा से विभूषित इस विद्यालय की स्थापना 1867 मे हुयी थी कालान्तर में इसी यशस्वी संस्था को, "गवर्नमेण्ट हाईस्कूल" के नाम से अभिषिक्त किया गया।[2] शनै-शनै शिक्षा का प्रसार हुआ। इण्टर स्तरीय शिक्षा विश्व विद्यालयों से निकलकर सन् 1922 में गठित माध्यमिक शिक्षा परिषद की परिधि मे सन्निविष्ट हुयी। परिणामत इस विद्यालय को, "राजकीय-इण्टर कालेज," होने

---

1 राजकीय विद्यालय की पत्रिका 'जागृति, पृ0 6

2 वही-पृष्ठ 7

का गौरव प्राप्त हुआ।[1] फिर शिक्षा के महापथ पर यह विद्यालय अग्रसर हुआ। आइये हम अतीत की गौरवगाथा अपने पुराने बन्धुओ को समर्पित कर आगे बढ़ें। विद्यालय के वर्तमान प्रशासनिक, भौतिक, शैक्षिक, एव सह शैक्षिक पाठ्येतर स्वरूप का सिहावलोकन करें।

प्रशासनिक स्वरूपः– विद्यालय में छात्रों की अत्यधिक सख्या को देखते हुए विद्यालय दो पालियों में चलाया जाता है। दोनों पालियों के अलग–अलग प्रभारी अधिकारी उप-प्रधानाचार्य होते हैं। जो राजपत्रित हैं। पालीवार शैक्षिक व्यवस्था नियंत्रण एवं निरीक्षण का दायित्व उप प्रधानाचार्य का होता है। सम्प्रति विद्यालय में प्रवक्ता तथा सहायक अध्यापक एल0 टी0 एव सी0 टी0 ग्रेड के कुल 115 अध्यापक कार्यरत हैं। कार्यालयीय कार्य सचालन हेतु सात लिपिक एक दफ्तरी 34 चतुर्थश्रेणी के कर्मचारी हैं। विद्यालय के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी प्रधानाचार्य हैं।

स्वतत्रता के बाद प्रथम प्रधानाचार्य श्री अली अमीर थे। वर्तमान प्राचार्य श्री ब्रिजेश कुमार ,बिसारिया हैं।[2]

विद्यालय का स्वरूप इसके आकर्षण का कारण विद्यालय भवन, खेल का मैदान छात्रावास, हरे भरे उद्यान, कर्मचारी आवास, जो 30 एकड भूमि में फैला है।

प्रयोगशाला विज्ञानवर्ग एवं कला वर्ग के विशेष विषयों के लिए, जो छात्रों की ज्ञ।न–वृद्धि का कारण है। कम्प्यूटर शिक्षा भी है, जिसमें रुचि के अनुसार शिक्षा पाते हैं। जो वर्तमान समाज में नस–नस में समाचुका है, जिसका महत्व किसी से छिपा नहीं है।[3]

दो छात्रावास हैं, जिसमें एक प्रचीन है तथा दूसरा नवीन है, जिसमें कुल 170 छात्र रह सकते हैं। इसमें आवासीय योजनान्तर्गत एकीकृत छात्रवृद्धि पाने वाले 112 हरिजन छात्र रहते हैं शेष अन्य छात्र हैं।

पुस्तकालय भी इसके आकर्षण का कारण है। यहाँ वृहद पुस्तकालय है, जिसमें सभी विषयों की अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं। एक सुन्दर वाचनालय भी है।

---

1 राजकीय विद्यालय की पत्रिका जागृति पृ0 5
2 वही–पृष्ठ 7
3 अध्यापक से साक्षात्कार 22-8-98-99

यहाँ विज्ञान, कला, वाणिज्य, कम्प्यूटर शिक्षा, व्यावसायिक, तकनीकी, सतत् पत्राचार, शिक्षा काष्ठ शिल्पशिक्षा आदि की शिक्षा अनुभवी अध्यापकों द्वारा दी जाती है।

वर्तमान समय मे 7000 छात्र इसमे शिक्षा पा रहे हैं। 1998 मे हाईस्कूल मे 93 प्रतिशत तथा इण्टरमीडिएट मे 92 प्रतिशत परीक्षाफल रहा।

साइकिल स्टैण्ड खेल तथा अनेक आवश्यक सुविधाएँ छात्रों को मिलती है।

इस प्रकार शिक्षा के प्रचार-प्रसार मे सघर्षरत राजकीय इण्टर कालेज का इलाहाबाद मे अलग महत्व है।

सेवा समिति विद्यामंदिर
इण्टर कालेज रामबाग,
इलाहाबाद

इस विद्यालय की स्थापना जमुना क्रिस्चियन के चार अध्यापकों ने गुड़ की मडी मे की थी। ये चार अध्यापक जमुना क्रिश्चियन कालेज में जन्माष्टमी न मनाने पर विरोध स्वरूप इस्तीफा देकर इस विद्यालय की स्थापना की।[1]

बाद मे इसे सेवा समिति ट्रस्ट ने अपने निर्देशन में ले लिया, जिसकी स्थापना समाज- कल्याण के लिए महामना पं0 मदन मोहन मालवीय जी महाराज ने की थी। इस विद्यालय को 1916 में हाईस्कूल तथा 1976 में इण्टर मीडिएट की मान्यता मिली।[2]

वर्तमान समय में 800 विद्यार्थी हैं, जिन्हें 1 से 12 तक शिक्षित किया जाता है। यहाँ के प्राचार्य डा0 यज्ञदन्त शर्मा व उपप्राचार्य डा0 दिनेश चन्द्र गुप्ता जी हैं।

छात्रों को प्रयोगशाला, पुस्तकालय, साइकिलस्टैड आदि की सुविधा उपलब्ध है।

---

1 प्राचार्य डा0 यज्ञ दत्त शर्मा से साक्षात्कार 21-3-97
2 उप प्राचार्य श्री दिनेश चन्द्र शर्मा से साक्षात्कार 21-3-97

सी0 ए0 वी0 इण्टर कालेज

इलाहाबाद

सी0 ए0 वी0 इण्टर कालेज की स्थापना सन् 1869 में एक संस्कृत पाठशाला के रूप में हुयी। प्रारम्भ में यह सस्था मुहल्ला लोकनाथ में थी। फिर वहाँ से कुछ दिनों के लिए पानदरीबा शाहगज तथा इसके बाद शहर कोतवाली के सामने बूचड के महल में स्थान्तरित हुयी। सन् 1915 में यह सस्था अपने वर्तमाान भवन में आयी।[1]

इस सस्था के सस्थापक व शिवराखन शुक्ल बरेली के निवासी थे। इसी कारण आज भी यह संस्था शिवराखन स्कूल के नाम से जानी जाती है। 1870 में यह संस्था इलाहाबाद लिट्रेसी सोसाइटी के प्रबन्धाधीन आयी। इसी सोसायटी के प्रयत्नों से म्योर कालेज इलाहाबाद स्थापित हुआ। जो बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रूप में विकासित हुआ।[2] लिट्रेसी सोसायटी ने इस पाठशाला को एक रूप दिया, फिर यह सस्था मिडिल स्कूल और बाद में सन् 1877 में हाईस्कूल बना। जहाँ पहले कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रबन्धाधीन, 'इण्टरेण्स परीक्षा' होती थी। आगे चलकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रबन्धाधीन मैट्रिकुलेशन की परीक्षा होने लगी।[3] सन् 1899 में यह सस्था इलाहाबाद एजुकेशन्न सोसायटी के प्रबन्धीय आयी और आज तक यह सोसायटी कुशलतापूर्वक इस संस्था को चला रही है। सन् 1949 में यह विश्व विद्यालय इण्टरमीडिएट कालेज हो गया।[4] जिन बुजुर्गो ने इस संस्था को अपनी सेवाएँ अर्पित की हैं और इसको इसे उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है, उसमें बाबू ,खन्नूलाल कक्कड, प0 बलदेव रामदेव, पं0 सुन्दर लाल राय, रामचरन दास, बाबू भगवान दास और मौलबी गुलाम मुजतबा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सी0 ए0 सी0 कालेज का वर्तमान भवन दो भागों में बंटा हुआ। है। एक पुराना भवन और दूसरा नया भवन। पुराने भवन की आधारशिला 1912 में इसके निर्माण में 72000 रूपये का व्यय हुआ। इस भवन का उद्घाटन 17 दिसम्बर

---

1 स्वर्ण जयन्ती स्मारिका पृ0 12
2 वही-पृष्ठ 13
3 वही-पृष्ठ 15
4 वही-पृष्ठ 21

1915 को तत्कालीन यू0 पी0 प्रान्त के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर 'सर जेम्स मिस्टन' ने किया था। इसके अतिरिक्त विज्ञान ब्लाक कार्यशाला तथा अन्य कक्षाओं के निर्माण पर लगभग 10,00000 रूपये व्यय हुए। सन् 1970 में विश्वविद्यालय की शताब्दी मनायी गयी। इस समय विद्यालय मे 5000 से अधिक छात्र हैं तथा 150 अध्यापक हैं।

विद्यालय मे पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वाचनालय साइकिल स्टैण्ड तथा खेलकूद का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालय के वर्तमान प्राचार्य श्री हर देव सहाय हैं।

राधारमण इण्टर कालेज, दारागंज, इलाहाबाद

राधारमण इण्टर कालेज की स्थापना आज से लगभग 108 वर्ष पूर्व सन् 1889 ई0 में स्व0 प0, बुलाकी लाल पाठ्क ने एक प्राथमिक विद्यालय के रूप में की थी। सन् 1909 ई0 में इसे जूनियर हाईस्कूल तथा 1915 में हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हुयी। विगत 65 वर्षो से विद्यालय के वर्तमान प्रबन्धक एवं अध्यक्ष स्वतत्रता संग्राम सेनानी 91 वर्षीय डा0 राय राम चरण अग्रवाल के सतत् प्रयत्नों एवं आर्थिक सहयोग से सन् 1932 ई0 में इस विद्यालय भवन का निर्माण हुआ।[2] विद्यालय के तत्कालीन प्रधानाचार्य स्व0 पं0 सुखदेव चौबे की निष्ठा, कर्मठ्ता, एव अनवरत प्रयास के फलस्वरूप सन् 1945 ई0 में इसे इण्टरमीडिएट के चारो वर्गो कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा रचनात्मक वर्ग की मान्यता प्राप्त हुयी। विद्यालय के चिरस्मरणीय संरक्षक स्व0 राय अमरनाथ जी अग्रवाल ने विभागीय आदेशानुसार वांछितमूल्य के दो मकान विद्यालय को दान देकर अपनी उदारता का परिचय दिया।[3]

यह विद्यालय दारागज हाईस्कूल से राधारमण इण्टरकालेज के नाम से प्रख्यात हुआ। विद्यालय के अध्यक्ष एव प्रबन्धक डा0 राय राम चरण अग्रवाल के चाचा स्व0 राय लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल ने विद्यालय में एक हाल का निर्माण कराया।[4]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 20-7-97
2 राधारमण की कालेज मैगजीन पृ0 2
3 वही पृष्ठ 3
4 वही-पृष्ठ 5

इस विद्यालय मे, कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा रचानात्मक वर्ग के विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है। भूतपूर्व प्राचार्य स्व0 श्री मसुरिया दीन पाण्डेय ने अपने कार्यकाल में 10 पक्के कमरों तथा भूतपूर्व प्राचार्य श्री देवनारायण पाण्डेय ने भी नीचे तीन पक्के कमरों का निर्माण कराया एव विद्यालय के मुख्य सडक पर ईट के खडजे लगवाये। डा0 राय राम चरण अग्रवाल के जामाता श्री विजय कुमार गुप्त एव सुपुत्री श्रीमती कुमुदरानी ने अपनी मातृस्मृति के एक कक्ष का निर्माण कराया।[1]

वर्तमान प्राचार्य डा0 किरण शकर शुक्ल ने उत्तरी बरामदा के फर्श की पूर्ति, उपरी मंजिल के छतों की मरम्मत प्रार्थना स्थल तथा वार्षिकोत्सव मच का निर्माण कराया। अध्यापकों के सहयोग से आवश्यक पखो की पूर्ति तथा 10 कमरें मे लोहे के स्थायी काष्ठेपकरण की व्यवस्था की गयी।[2]

विद्यालय परिवार स्व0 श्रीमती तुलसीदेवी प्रधान अध्यापिका जू0. हा0 स्कूल नगर महापालिका, इलाहाबादकी उदारता को नही भूलेगा जिन्होंने अपने जीवन भर की कमाई का 22000 रूपया का दान देकर अक्षय कीर्ति को प्राप्त किया।

विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा भी सुयोग्य अध्यापकों द्वारा दी जाती है। वर्तमान प्राचार्य ने अपने प्रयत्नो से जीव विज्ञान, इण्टर की स्थाई मान्यता प्राप्त कराकर विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। इसके अतिरिक्त इस वर्ष 1996-97 कलाक्राफ्ट एवं संगीत की कक्षाए अनुबन्धित रूप से चलायी जा रही हैं और इन विषयों की स्थायी मान्यता हेतु सतत् प्रयास चल रहा है। शिक्षा विभाग द्वारा व्यावसायिक शिक्षा हेतु विद्यालय चुना गया है।

विद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय है, जिसमें लगभग 10,000 पुस्तकें तथा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं की फाइलें हैं। अध्यक्ष एव प्रबन्धक डा0 राय राम चरण अग्रवाल ने अपने 56 वर्षो की सग्रहीत लीडर, भारत एव पत्र-पत्रिका की फाइलें देकर पुस्तकालय का सम्बर्धन किया। विद्यालय में बालचर नामक संस्था भी है, जो माघ मेला तथा अन्य अवसरों पर जनता की सेवा करती है।

इस प्रकार आज विद्यालय मे 3000 से अधिक छात्र शिक्षा पा रहे है।

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 18-3-97

2 अध्यापकों से साक्षात्कार-18-3-97

कुलभास्कर इण्टर कालेज

इलाहाबाद

न्यायमूर्ति मुशी काली प्रसाद कुलभास्कर ने 1873 ई0 में अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति दान दे कर कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट की नींव डाली। उन्होंने स्वय अपने जीवन काल में कायस्थ पाठशाला की स्थापना की। इस विद्यालय का प्रबन्ध इसी ट्रस्ट द्वारा किया जाने लगा। दिनो दिन यह विद्यालय बढता गया। इस विद्यालय मे अनेक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते रहे। विद्यालय में मुशी जी का जन्म दिवस 3 दिसम्बर को प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। इसी अवसर पर विद्यालय में पढने वाले छात्रों को मुशी जी के जीवन के विषय में बताया जाता है।[1]

कायस्थ पाठशाला में पढने वाले दो छात्रों ने मुशी जी के जीवन से प्रभावित होकर 27 जुलाई सन् 1933 में एक छात्रावास की नींव डाली। इसका नाम कुलभास्कर आश्रम रखा।[2]

छात्रावास ने ही धीरे-धीरे बढकर सन् 1944 ई0 में माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा हाईस्कूल परीक्षा के लिए मान्यता प्राप्त कर ली। इस संस्था को बढ़ते देखकर ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने इस ओर विशेष ध्यान देकर सन् 1950 में इसके लिए इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त कर ली। आज प्रदेश में ही नहीं देश के कृषि विद्यालयों में इसका नाम है। यहाँ विदेशो से भी छात्र कृषि की शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान तथा कला तथा कान्सट्रक्टिव ग्रुप की मान्यता भी प्राप्त है।[3]

पुस्तकालय, प्रयोगशाला के साथ छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए खेल कूद की उत्तम व्यवस्था है। शारीरिक शिक्षा के लिए एन0 सी0 ई0 तथा पी0 एस0 डी0 की ट्रेनिग दी जाती है। इस प्रकार विद्यालय का अनुशासन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है।

---

1 के0 पी0 ट्रस्ट की स्वर्णजयन्ती स्मारिका 1972 पृ0 114
2 वही-पृष्ठ 115
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 20-3-98

केसर विद्यापीठ इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

इस पाठशाला की नींव कुछ उत्साही केसरवानी सज्जनों द्वारा 19 मई सन् 1912 को बहादुरगज स्थित एक किराये के मकान में डाली गयी। तबसे आजतक इस सस्था की जीवन यात्रा अत्यन्त संधर्षपूर्ण एव चुनौतियों से भरी है। सन् 1935 तक यह विद्यालय चलता रहा। लगभग 100 विद्यार्थी तथा 5 अध्यापक व एक चपरासी भी था।[1]

कक्षाएँ तीन कमरो तथा बरामदो मे लगती थीं। एक छोटा सा कमरा आफिस के रूप में था, जो वर्षा के दिनों में चूता भी था। छात्रों की जमीन पर बैठने की टाट पट्टी थी। सामने लिखने के लिए लम्बे-2 डेस्क भी थे। इसी समय श्री केदारनाथ गुप्त प्राचार्य हुए, आपने विद्यालय में डेस्क, कुर्सी पुस्तकालय की व्यवस्था भी की 17वीं तथा 8वीं कक्षाएँ भी खुलीं। इसी बीच विद्यालय में दो कमरे और बने चूँकि अधिकतर छात्र व्यापारी घराने के थे इस कारण वाणिज्य की शिक्षा मुडिया (महाजनी) दी जाती थी। यह विषय 1 से 5 तक अनिवार्य था। स्व0 श्री राम प्रताप केसरवानी इसके अध्यापक थे।[2]

सन् 1936 से 1944 तक अध्यापकों की एक ऐसी टीम आयी, जिसमें अत्यधिक परीश्रमी तथा योग्य अध्यापक आये, जिन्होंने संस्था को अपना समझा और छात्रों के साथ अत्यधिक परिश्रम किया। इधर 1937 में लगातार अध्यापकों के प्रयास से जनपदीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय सर्वश्रेष्ठ होता गया। जनपद के जूनियर स्कूलों में ये पाठशाला सर्वश्रेष्ठ गिनी जाने लगी। अब तक सरकार से कोई अनुदान नहीं मिला न सहायता के लिए आवेदन पत्र ही दिया गया।[3]

अब कुछ कमरे और बनवाये गये तथा पुस्तकालय वृहद किया गया तथा कई सुधारो के बाद, प्रयत्न के फलस्वरूप विद्यालय को 1944 में हाईस्कूल की मान्यता

---

1 केसर विद्यापीठ कालेज स्मारिका पृ0 5

2 वही-पृष्ठ 7

3 वही-पृष्ठ 23

प्राप्त हो गयी। इण्टर की मान्यता प्राप्त करना एक टेढी खीर थी। कई कमरों की पुन आवश्यकता हुयी। इण्टर मे प्रतिबन्धों को पूरा किया गया। इण्डस्ट्रियल कमेस्ट्री को प्रधान विषय बनाने के कारण इण्टर की मान्यता 1955 में प्राप्त हुयी। उसके बाद ही वाणिज्य, कला, विज्ञान मे मान्यता प्राप्त कर उच्च स्तर पर दो पालियों के साथ 1500 छात्रो तथा 42 अध्यापक को साथ ले कर चलना आरम्भ कर दिया। वर्तमान समय मे 1700 छात्र हैं इनका परीक्षफल 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक रहता है।[1]

एक वृहद पुस्तकालय, वाचनालय, साइकिल-स्टैण्ड प्रयोगशाला के साथ-साथ खेल-कूद की उत्तम व्यवस्था है।

वर्तमान प्राचार्य कुँवर दीवान चन्द्र श्रीवास्तव हैं तथा प्रत्येक क्षण विद्यार्थियों के विकास को अपने सामने रखते हैं। इनके अनुशासन से अध्यापक व विद्यार्थी हमेशा सतर्क रहते हैं तथा विद्यालय मे एक अनुपम शिक्षा व्यवस्था का माहौल देखने को मिलता है।[2]

यादगारे हुसैनी इण्टर कालेज, इलाहाबाद

महान कवि अकबर इलाहाबादी के पाकिस्तान चले जाने के बाद पण्डित नेहरू के प्रयत्न से यह घर जिसमें (विद्यालय) यादगारे हुसैनी इण्टर कालेज चलता है। विद्यालय को मिल गया। इस विद्यालय की स्थापना हजरत इमाम हुसैन के नाम पर सन् 1942 में इलाही मौलवी रजीबुद्दीन हैदर साहेब ने की। इसमें 1 से 12 तक छात्रों को शिक्षा दी जाती है। प्रारम्भ में यहाँ 1 से 5 तक शिक्षा दी जाती थी। 1889 में विज्ञान में शिक्षा की अनुमति मिली। आज यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि की शिक्षा दी जाती है।[3]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-8-97

2 अध्यापकों से साक्षात्कार 17-8-96

3 यादगारे हुसैनी इण्टर कालेज स्मारिका पृ0 6

विद्यालय के प्रारम्भ में जहा बहुत कम छात्र थे वही आज 1500 छात्र हैं तथा परीक्षा फल 70 प्रतिशत से 75 प्रतिशत तक रहता है। पुस्तकालय, प्रयोगशाला, साइकिल स्टैण्ड आदि की उत्तम व्यवस्था है।[1]

वर्तमान प्राचार्य श्री अहमद हुसैन रिजवी हैं, जिनके निर्देशन में अल्प संख्यकों का यह विद्यालय अत्यन्त नियमित रूप से शिक्षण कार्य कर रहा है।[2]

कर्नलगंज इण्टर कालेज, इलाहाबाद

रायचैत्र नाथ आदित्य बहादुर और राय यदुनाथ हालदार इलाहाबाद के सज्जन नागरिक थे। ये लोग शिक्षा के सच्चे प्रेमी थे। इन्होंने एक साथ मिलकर 1869 में एक प्राइमरी विद्यालय खोला। ये प्राय एक बंगाली समिति से सम्बन्धित रही।

बहुत ही अल्प समय में इस विद्यालय ने हाईस्कूल की मान्यता 1932 में प्राप्त कर ली तथा सन् 1950 में इण्टरमीडिएट की मान्यता 1950 में प्राप्त कर ली। जो विद्यालय प्रारम्भ में एक कमरे में खुला था। कर्नलगंज के रामलीला मैदान में गया वहाँ से प्रयाग आश्रम तथा तब चर्च लेन में 1925 में पहुँचा अंतत· 1950 में अपने मूल स्थान पर कर्नलगज में पहुच चुका था।[3]

प्रारम्भ में केवल कला वर्ग में शिक्षा दी जाती थी। बाद में कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि वर्गों में भी विद्यार्थियों को शिक्षित किया जाने लगा। पिछले 15 वर्षो में यहाँ भौतिक विज्ञान तथा जीव विज्ञान के लिए प्रयोगशालाएँ भी बनाई गयीं। बहुत ही अल्प समय में इस विद्यालय ने अपनी ख्याति अर्जित कर ली।[4]

एक वृहद पुस्तकालय है, जिसमे विभिन्न भाषाओं की हजारों पुस्तकें विद्यमान है, जिनसे विद्यालय के छात्र लाभान्वित होते हैं, एक वाचनालय है, जिसमें अनेक पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा छात्र समसामयिक घटनाचक्र ज्ञान प्राप्त करते है। साइकिल स्टैण्ड की सुविधा भी है।

---

1 यादगारे हुसैनी इण्टर कालेज स्मारिका पृ0 7
2 वही-पृष्ठ 27
3 एन0 आई0 पी0 समाचार पत्र 5 सितम्बर 1997 पृ0 8
4 वही-पृष्ठ 8

अनुशासन के लिए छात्रो को एन0 सी0 सी0 आदि शारीरिक शिक्षा तथा खेलकूद की उत्तम व्यवस्था की गयी है। यहाँ छात्रों में उत्तम प्रकार का अनुशासन देखने को मिलता है। इस समय इस विद्यालय में 5000 के लगभग विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

वर्तमान प्राचार्य श्री श्याम प्रकाश श्रीवास्तव जी हैं, जो विद्यालय को प्रगति के मार्ग पर ले जाने मे प्रतिक्षण प्रयत्नरत रहते हैं।

सिन्धू विद्यामंदिर हाईस्कूल

इलाहाबाद

यह विद्यालय इलाहाबाद में स्थापित होने वाले नये विद्यालयों की श्रेणी में अग्रणी स्थान बनाये हुए है। इस विद्यालय की स्थापना 1968 में स्व0 श्री किशनलाल तुलस्यानी ने की थी।

प्रारम्भ में अत्यल्प छात्रो से शुरू होने पर भी आज इसमें 1500 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ 1 से 10 तक की शिक्षा दी जाती है। इसे जू0 हाई स्कूल की माान्यता 1978 में तथा हाईस्कूल की मान्यता 1993 में मिली इसमें विज्ञान तथा कलावर्ग की शिक्षा दी जाती है। इसमें छात्रों को अनुभवी शिक्षकों द्वारा शिक्षित किया जाता है, जिसके कारण परीक्षाफल 100 प्रतिशत रहता है।[1]

यहाँ छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए सभी आवश्यक व सम्भव सुविधाएं, प्रयोगशाला, पुस्तकालय आदि उपलब्ध हैं।[2]

डा0 के0 पी0 जायसवाल इण्टर कालेज

704 सालिकराम जायसवाल नगर,

इलाहाबाद

यह विद्यालय श्री एच0 के0 जायसवाल सभा, प्रयाग के संरक्षण में संचालित हो रहा है, जुलाई 1943 में इसका आविर्भाव एच0 के0 एंग्लों वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल

---

1 प्रबन्धक से साक्षात्कार 20-9-98

2 प्राचार्या से साक्षात्कार 20-9-98

के रूप मे हुआ और सभा के सद्प्रयलो से सन् 1946 में ही इसको माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हुयी। संस्था निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होती रही और अधिकारियों के सफल प्रयास से इसको 1956 में इण्टरमीडिएट साहित्यवर्ग 1957 में वाणिज्यवर्ग एव 1969 में विज्ञान वर्ग (गणित) की मान्यता प्राप्त हुयी। श्री लाल जयसवाल विद्यालय के वर्तमान प्रबन्धक इण्टर में जीव विज्ञान की मान्यता प्राप्त करने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने मे संलग्न हैं।[1]

1967 में शासन (माननीय स्व0 चरण सिंह मिनिस्ट्री) द्वारा अनुदान प्राप्त करने वाले विद्यालयो के नाम मे जातिबोधक शब्दों पर प्रतिबन्ध लगाया गया, परन्तु ख्याति प्राप्ति एव प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ उपनामित जातियुक्त शब्द के साथ विद्यालय का नाम रखने को प्रतिबन्ध मुक्त रखा गया। इस परिप्रेक्ष्य मे विद्यालय का नाम सुप्रसिद्ध इतिहास वेत्ता विद्यावारिधि एवं भाषा विद् डा0 के0 पी0 जाययसवाल के नाम से वर्तमान विद्यालय का नामकरण करना पडा।[2]

छात्रों के सर्वागीण विकास हेतु पठन-पाठन के अतिरिक्त अनुशासन एवं खेलकूद के साथ-साथ सास्कृतिक गतिबिधियाँ भी विद्यालय के कार्य क्षेत्र के विशेष अंग हैं।[3] अर्न्त विद्यालय प्रतियोगिताओ में भाग लेने के लिए छात्रों को अत्साहित किया जाता है तथा भाषण एव संगीत आदि की प्रतियोगिताओ का आयोजन कर के छात्रों में इन गुणों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

इस कालेज को माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश की इण्टरमीडिएट परीक्षा के लिए, साहित्यिक, वैज्ञानिक (गणित) तथा वाणिज्य वर्ग कलावर्ग की शिक्षा के लिए परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है।

इस विद्यालय में बालकों को 6 से 12 तक पढाया जाता है। परीक्षाफल क्रमश· 70 प्रतिशत तक रहता है। आज इसमें 1300 छात्र हैं।[4]

पुस्तकालय, वाचनालय, साइकिलस्टैण्ट तथा खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। वर्तमान प्राचार्य श्री ब्रह्मशकर द्विवेदी एम0 एस0 सी0, एम0 एड0 हैं।

---

1 डा0 के0 पी0 जायसवाल इण्टर कालेज स्मारिका पृ0 2
2 वही-पृष्ठ 3
3 वही-पृष्ठ 2
4 प्राचार्य से साक्षात्कार 21-8-98

शिवचरणदास कन्हैया लाल इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

यह विद्यालय 1921 मे श्री सदनलाल खन्ना द्वारा स्थापित हुआ। प्रारम्भ में अत्यल्प छात्रों की सख्या होते हुए भी यह विद्यालय सघर्ष करते हुए अनेक कठिनाइयों को दूर करता रहा परिणाम स्वरूप छात्र बढ़ने लगे और कालान्तर मे 1948 में हाईस्कूल की विज्ञान, कला दोनों में तथा 1955 में इण्टरमीडिएट में विज्ञान कला दोनों में मान्यता प्राप्त कर सका।[1]

यहाँ 1 से 12 तक छात्रों को शिक्षित किया जाता है। यहाँ कुल 1700 विद्यार्थी हैं। हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा फल 1997 में क्रमश 61 प्रतिशत तथा 98 प्रतिशत रहा। कम्प्यूटर की मान्यता भी प्राप्त हो चुकी है, जिसे प्रारम्भ करने के लिए कुछ आवश्यक कार्यवाही होना शेष है।[2]

एक वृहद पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशाला, तथा खेलकूद, साइकिल स्टैण्ड आदि की व्यवस्था है।

डी0 ए0 वी0 इण्टर

कालेज,

इलाहाबाद

यह विद्यालय, 'आर्यन एजुकेशनल ट्रस्ट' द्वारा संचालित होता है तथा इसकी स्थापना 1914 में बाबू रमाकान्त जी द्वारा हुयी थी।

प्रारम्भ में अनेक सकटों से ग्रस्त था, किन्तु कालान्तर में 1920 में हाईस्कूल की मान्यता मिली तथा इण्टर की मान्यता 1953 में साहित्यिक वर्ग में तथा 1971 में विज्ञान वर्ग में मिली। इस समय यहाँ 850 छात्र हैं। प्रारम्भ में 1 से 8 तक शिक्षा प्रदान की जाती है। 1997 में हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट का परीक्षाफल क्रमश 60 प्रतिशत व 70 प्रतिशत रहा।[3]

यहाँ शारीरिक शिक्षा के लिए एन0 सी0 सी0 तथा खेलकूद की व्यवस्था है। यहाँ एक वृहद पुस्तकालय, वाचनालय, प्रयोगशाला तथा साइकिल स्टैण्ड के अतिरिक्त कड़ा प्रशासन के साथ-2 छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए सभी आवश्यक तत्व विद्यालय हैं।[4]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 20-8-98
2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 20-7-98
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 20-7-97
4 प्राचार्य से साक्षात्कार 20-7-97

रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन,
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
इलाहाबाद

यह विद्यालय 1985 मे जनवरी माह में आर0 एस0 एस0 विद्याभारती द्वारा स्थापित किया गया। प्रारम्भ मे यह 6-8 तक चलता था लेकिन कालान्तर में 1986 मे जू0 हाईस्कूल तथा 1990 में कला वर्ग में हाईस्कूल तथा 1997 में विज्ञान वर्ग में भी हाईस्कूल स्तर पर शिक्षा देने की मान्यता मिल गयी।

इस समय कुल 402 छात्र हैं। यहाँ वृहद पुस्तकालय भी है। प्रथम प्राचार्य श्री लाल जी तिवारी थे तथा वर्तमान प्राचार्य श्री उमाशंकर सिंह तथा उपप्राचार्य श्री प्रदीप त्रिपाठी जी हैं।[1]

ईश्वरशरण इण्टर कालेज
इलाहाबाद

ईश्वरशरण इण्टर कालेज इलाहाबाद के पुराने विद्यालयों में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इसकी स्थापना स्व0 मुंशी ईश्वरशरण जी ने 1933 में की। प्रारम्भ में इसमें बहुत कम विद्यार्थी थे तथा 1 से 8 तक कक्षाएँ लगती थीं। जनवरी 1947 में हाईस्कूल तथा 1953 में इण्टरमीडिएट की मान्यता मिली।[2]

हाईस्कूल में, विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, कृषि वाणिज्य तथा काष्ठकला, सिलाई आदि विषय है तथा इण्टर मीडिएट में विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि की शिक्षा दी जाती है।[3]

कम्प्यूटर शिक्षा की भी व्यवस्था है तथा कम्प्यूटर शिक्षा रूचि के अनुसाद दी जाती है, कम्प्यूटर शिक्षा के लिए 4 कम्प्यूटर तथा 2 टीचर हैं।

यहाँ 2000 छात्र हैं, जिनका 1997 में हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट में परीक्षाफल क्रमश 30 प्रतिशत तथा 60 प्रतिशत रहा।

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 22-1-98
2 ई0 श0 ई0 कालेज मैगजीन पृ0 13
3 वही-पृष्ठ 14

पुस्तकालय, प्रयोगशाला के अतिरिक्त एन0 सी0 सी0 व खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है।[1]

विकास विद्यालय (आश्रम पद्धति)

इलाहाबाद

प्रयाग के पावन सगम तट पर अनेक सम्प्रदायों व सस्कृतियों का सगम है, जहाँ एक ओर वे विद्यालय जहाँ केवल ब्राह्मणों को शिक्षा दी जाती है, वहीं दूसरी ओर केवल विमुक्त जाति के विद्यार्थियों के शिक्षार्थ विकास विद्यालय भी विद्यमान हैं।

विकास विद्यालय की स्थापना 14 नवम्बर 1959 में जस्टिस शंकर शरण जिलाधिकारी द्वारा हुयी। यहाँ 1 से 10 तथा विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है, 1973 में इसे हाईस्कूल की मान्यता मिली। इस समय यहाँ 245 बच्चे पढते हैं।[2]

यह विद्यालय केवल विमुक्ति जाति के विद्यार्थियों के लिए है। शिक्षा विभाग से राजकीय वित्त सहायता उ0 प्र0 के समाज कल्याण विभाग द्वारा प्राप्त होती है। जो वर्तमान में, जिलाधिकारी के नियंत्रण में है।

इस विद्यालय में बच्चों को नि.शुल्क, आवास, भोजन, वस्त्र, कापी, किताब, पठन-पाठन की सामग्री व छात्र वृत्ति आदि सभी पदार्थ उ0 प्र0 समाज कल्याण विभाग द्वारा दिया जाता है।[3]

खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। खेलकूद जिलास्तर तक हैं। यहाँ प्रदेश के विभिन्न अञ्चलों से विद्यार्थी आते है।

अग्रसेन इण्टर कालेज

इलाहाबाद

प्रयाग की शिक्षण सस्थाओं में अग्रसेन इण्टर कालेज का स्थान गौरवपूर्ण है। यह जनपद की सबसे अधिक अनुशासित शिक्षण संस्थाओं में से एक है। इसकी

---

1 ई0 श0 ई0 कालेज मैगजीन पृ0 27
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 11-8-97
3 क्लर्क से साक्षात्कार 11-8-97

स्थापना सन् 1933 ई0 में स्व0 श्री बेनी प्रसाद अग्रवाल जी ने की थी। तब से स्व0 श्री बेनी प्रसाद जी एव उनके उपरान्त महान शिक्षाविद् श्री नरोत्तमदास अग्रवाल की छत्रछाया मे उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रही। नगर के पश्चिमी अंचल में स्थित होने के कारण यह सस्था नगर के समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए सुविधा जनक एव सुलभ हैं। इस कालेज में 6 से 12 तक के विद्यार्थियों की शिक्षा का प्रबन्ध है। यह विद्यालय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है।[1]

विद्यालय को दो पाली में चलाया जाता है। विद्यालय को जू0 हाईस्कूल, हाई, व, इण्टरमीडिएट की मान्यता क्रमश 1950, 1948, 1951में प्राप्त हुयी। इसमें साहित्यिक, वाणिज्य, रचनात्मक, एवं विज्ञान वर्ग के अन्तर्गत हाईस्कूल और साहित्यिक एव रचनात्मक वर्ग के अन्तर्गत इण्टर की परीक्षाओं के लिए पठन–पाठन की मान्यता मिली हुयी है। कालेज की पढाई को प्रभावशाली बनाने हेतु जीव विज्ञान, भौतिकशास्त्र, तथा रसायनाशास्त्र की साजसज्जा से पूर्ण प्रयोगशालाएँ हैं। कालेज का प्रत्येक कमरा हवादार तथा बिजली के पखों से युक्त है।

विद्यालय में एक वृहद् पुस्तकालय के होने से विद्यालय का महत्व अधिक हो जाता है। इसमें 10000 से अधिक पुस्तकें हैं, जो छात्रों के पाठ्य विषय से सम्बन्धित हैं। छात्रों को पुस्तकें निर्गत भी की जाती हैं। वाचनालय में अनेक पत्रिकाओं को मगाया जाता है।

विद्यालय में साइकिल स्टैण्ड की व्यवस्था के अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा के लिए एन0 सी0 सी0 व स्काउट शिक्षा की व्यवस्था है विद्यालय में 1600 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जो अत्यन्त अनुशासित है। विद्यालय पार्क में प्राचार्य श्री आर0 के0 उपाध्याय जी ने श्री बजरंगबली का एक मदिर बनवाया है जिससे छात्रों को हमेशा प्रेरणा व आशीर्वाद मिलता रहता है।

सस्था के प्रबन्धक विश्वविख्यात हृदयरोग विशेषज्ञ डा0 आर0 के0 अग्रवाल हैं, जिनके कुशल निर्देशन में शिक्षण–कार्य सुचारू रूप से चल रहा है।[2]

---

1 अ0 ई0 कालेज पत्रिका पृ 13
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13–7–98

के0 पी0 इण्टर कालेज

इलाहाबाद

के0 पी0 इण्टर कालेज शहर के सबसे प्राचीन विद्यालयों में से एक है। यह विद्यालय जिस स्थान पर स्थित है, उसकी सन् 1930 में के0 पी0 ट्रस्ट ने उत्तर प्रदेश के गर्वनर से प्राप्त किया था। सन् 1933 में मुंशी ईश्वरशरण के अध्यक्षकाल में विद्यालय की इमारत पूरी हुयी और 18 जनवरी को संयुक्त प्रात के गवर्नर के द्वारा विद्यालय भवन का उद्घाटन हुआ। इस विद्यालय के पास काफी बडा पुस्तकालय है जिसमें उत्कृष्ट पुस्तकों का सग्रह है। सरकार द्वारा नियुक्त निरीक्षक मण्डल ने अपनी रिर्पोट में लिखा कि, 'के0 पी0 इण्टर कालेज का पुस्तकालय महासागर के समान है।[1] इस विद्यालय में 6 से 12 तक की शिक्षा दो पाली में दी जाती है। यहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य, व्यावसायिक शिक्षा के अतिरिक्त एन0 सी0 सी0, गाइड की शारीरिक शिक्षा प्रदान की जाती है।[2]

इस विद्यालय का खेल जगत में अपूर्वस्थान है। यहाँ पर विशाल खेल का मैदान और स्टेडियम है। देश के बडे से बडे नेता और प्रधानमंत्रियों ने के0 पी0 ग्राउण्ड से अनेक भाषण दिये हैं। इस विद्यालय के छात्र विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति अर्जित कर चुके हैं और देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग विभागों में कार्यरत रहते हुए विख्यात हो चुके हैं।[3]

वर्तमान प्राचार्य श्री उदयशकर श्रीवास्तव के नेतृत्व में विद्यालय शिक्षा के प्रसार में अनवरत सघर्ष कर रहा है।

सर्वार्य इण्टर कालेज

इलाहाबाद

कुछ शिक्षा के प्रेमी सरयूपारीन ब्राह्मणों द्वारा 1934 ई0 में प्रारम्भ हो कर इस विद्यालय ने अनेक विकास सोपानो को लाधते हुए इतिहास निर्मित किया है। प्रारम्भ

---

1 स्वर्ण जयन्ती स्मारिका 1974 पृ0 24

2 वही-पृष्ठ 25

3 वही-पृष्ठ 24

मे यह प्राइमरी कक्षा तक चलता था, किन्तु वर्तमान समय मे एक से 12 तक की शिक्षा दी जाती है। हाईस्कूल मे विज्ञान व कलावर्ग में शिक्षा दी जाती है परन्तु इण्टरमीडिएट में केवल कला वर्ग उपलब्ध हैं। माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा क्रमश 1948 व 1953 ई0 मे प्राप्त हुयी। वर्तमान समय में 500 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिनका परीक्षाफल सतोषजनक रहता है।

विद्यालय में पुस्तकालय, प्रयोगशाला, साइकिल स्टैण्ड, एन0 सी0 सी0 के अतिरिक्त खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है, विद्यालय में कडा अनुशासन है तथा विद्यालय के अध्यापको ने कार्यालय को अपने पास से चन्दा कर के बनवाया है।

विद्यालय के प्राचार्य श्री शक्तिकान्त मिश्र जी हैं।

एंग्लो बंगाली इण्टर कालेज

इलाहाबाद

एग्लो बंगाली इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद के प्राचीनतम शिक्षण संस्थाओं में से एक है। यह श्री शीतला गुप्ता के छोटे घर में 1875 ई0 में प्रारम्भ हुआ, प्रारम्भ में मात्र पॉच विद्यार्थी थे और विद्यालय शाहगज में प्रारम्भ हुआ।

सन् 1887 ई0 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित हुआ इसके बाद इसका नाम एंग्लो बंगाली हाईस्कूल हुआ। वर्तमान इमारत (भवन) का शिलान्यास 1894 में परमानन्द चरन् बनर्जी ने किया। यहाँ 1940 तक अंग्रेजी माध्यम से बंगाली पढाई जाती रही। 1940 में सरकारी आदेश पर हिन्दी, उर्दू अनिवार्य विषय बनाया गया।[1]

प्राइमरी कक्षाओं से प्रारम्भ विद्यालय आज शहर के उत्तम इण्टर कालेजों की श्रेणी में अपना स्थान बना चुका है। यहाँ 1 से 12 तक शिक्षा दी जाती है तथा विद्यालय को हाईस्कूल व इण्टर की मान्यता क्रमश 1921 ई0 तथा 1927 ई0 में प्राप्त हुयी। हाईस्कूल व इण्टर स्तर पर कला व विज्ञान दोनों वर्गो का शिक्षण योग्य अध्यापकों द्वारा किया जाता है। इस समय कुल 1126 छात्र हैं तथा परीक्षा फल

---

1 एन0 आई0 पी0 समाचार पत्र 5 सितम्बर 1997 पृ0 8

उत्तम रहता है। छात्रो के बहुमुखी विकास के लिए विद्यालय में, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, एन0 सी0 सी0, गाइड, स्काउट व खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। साइकिल स्टैण्ड भी है।[1]

विद्यालय की विशेषता इसमें निहित है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी स्वतत्रता संघर्ष के दौरान यहाॅ आये थे और एक प्रतिमा नेता जी की विद्यालय प्रांगण में आज भी स्थापित है।

यहाँ के एक छात्र सतोष मिश्रा ने इण्टर मीडिएट में 1997 में यू0 पी0 में 11वीं पोजीसन 86 प्रतिशत अंक अर्जित कर विद्यालय को गौरवन्वित किया है।[2]

डा0 के0 एन0 काटजू इण्टर कालेज, कीडगंज, इलाहाबाद

डा0 के0 एन0 काटजू इण्टर कालेज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। क्योंकि वह विद्यालय भारतीय स्वतत्रता संग्राम से जुडा हुआ था और स्वतत्रता संग्राम के दौरान बच्चे, जिनके अभिभावक अग्रेजी हुकूमत की खिलाफत करते थे, उन्हें सरकारी विद्यालयो से निकाल दिया गया था। ऐसी दशा में डा0 के0 एन0 काटजू जो अपने समय के जाने-माने अधिवक्ता थे, एजुकेशन फार द यूथस आफ एलाहाबाद'' नाम की एक संस्था स्थापित की, जिसके अन्तर्गत 1935 में इलाहाबाद हाईस्कूल नाम से विद्यालय खोला गया, बाद मे यह विद्यालय इण्टरमीडिएट हुआ। और आज भी यह विकास की ओर उन्मुख है।[3]

इस विद्यालय में प्राथमिक कक्षाओं से 12 कक्षा तक की पढाई विज्ञान तथा कलावर्ग मे होती है। इस विद्यालय में डा0 हरिवंशराय बच्चन ने अपने अध्यापन जीवन का प्रारम्भ किया। तत् पश्चात् वे इलाहाबाद विश्व विद्यालय चले गये।[4]

वर्तमान समय में लगभग 1800 से उपर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। सरकारी नियत्रण के कारण अध्यापकों की सख्या दिन प्रति दिन न्यून होती जा रही

---

1 एन0 आई0 पी0 समाचार पत्र 5 सितम्बर 1997 पृ0 9
2 वही-पृष्ठ 8
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-5-98
4 अध्यापकों से साक्षात्कार 13-5-98

है। स्वाभाविक है ऐसी दशा में अध्यापन कार्य की व्यवस्था में कमी होगी। इसके बावजूद भी शिक्षकों में अत्यन्त उत्साह है और वे अपना कार्य उत्तरदायित्व समझकर कर रहे हैं।

विद्यालय में कडा अनुशासन देखने को मिलता है, जिसके कारण परीक्षाफल उत्कृष्ट रहता है। इस समय विद्यालय में 26 अध्यापक हैं। विद्यालय में सभी उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला तथा एक वृहद पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न भाषाओं की हजारों पुस्तकें हैं वाचनालय व साइकिल स्टैण्ड भी है। एन0 सी0 सी0 के अतिरिक्त खेल कूद की उत्तम व्यवस्था है, जिससे छात्रों का बहुमुखी विकास सम्भव हुआ है।

वर्तमान प्राचार्य श्री विश्वमोहन वैद्य जी हैं।

इलाहाबाद इण्टर कालेज,
इलाहाबाद

महर्षि भरद्वाज की तपोभूमि, महाराज हर्ष की दान, भूमि महामानव पं0 मदन मोहन मालवीय की जन्मभूमि और गगा–यमुमा की पावन संगम–स्थली प्रयाग नगरी के वक्षस्थल में माँ सरस्वती के वरदान, भारतीय संस्कृति का जीवन्त प्रतीक और विद्या का वट–वृक्ष इलाहाबाद इण्टर कालेज, 11/19–एस0 सी0 बसु रोड, जीरो रोड इलाहाबाद, ज्ञान की अमरज्योति स्वरूप स्थित है। विगत 88 वर्षो से ज्ञान की अजस्र धारा बहाने वाले इस शिक्षा तरू को सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति विद्वान द्वय स्व0 लाला काशीनाथ अग्रवाल एवं स्व0 सगमलाल अग्रवाल ने सन् 1910 में रोपा था। शनै –शनै यह नवतरू श्रद्धेय अग्रवाल बन्धुओं के दृढ संकल्प एवं परिश्रम की खाद जल से अभिसिंचित हो विकसित होने लगा और सन् 1915 में अनुदान सूची में पहुँच कर शैशवावस्था को प्राप्त किया।[1] अनवरत पुष्पित–पल्लवित शिक्षा–तरू सन् 1930 में हाईस्कूल, 1936 इण्टरमीडिएट, वाणिज्य सन् 1940 में इण्टरमीडिएट कला और 1954 में इण्टरमीडिएट विज्ञान विषयों की मान्यता प्राप्त कर यौवनावस्था

1 ई0 ई0 का0 पत्रिका पृ0 5

से सुशोभित हो उठा। तदुपरान्त कला, वाणिज्य एव विज्ञान की त्रिवेणी के पवित्र जलाभिषेक से बालकों को समाजोपयोगी नागरिक बनाकर राष्ट्र सेवा रत है। प्रगति सोपानारूढ यह युवा शिक्षा तरू सम्प्रति टंकण एव कम्प्यूटर जैसी व्यावसायिक शिक्षासे युवा पीढी की 21वीं सदी के योग्य भी बना रहा है।[1]

शिशु अवस्था मे "अग्रवाल इण्टर कालेज" की संज्ञा से विभूवित, अटूट ज्ञान ज्योति से आलोकित, युवावस्था मे विशाल शिक्षा तरू सा विकसित, अग्रवाल जातीय–शिक्षा परिषद द्वारा सिचित, पुष्पित एव पल्लवित यह शिक्षावट–वृक्ष सम्प्रति इलाहाबाद प्राइमरी स्कूल, इलाहाबाद इण्टर कालेज, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इन्दिरा गाँधी ओपेन यूनीवर्सीटी एव ललित कला अकादमी आदि सघन सबल शाखाओ से छायोक्त शिक्षा के एक मूल एव प्रमुख, बहु–आयामी केन्द्र के रूप मे कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, व्यवसाय, टकण, कम्प्यूटर आदि तकनीकी शिक्षा के माध्यम से सफल सुयोग्य एवं प्रतिभावान युवक तथा सुयोग्य नागरिक निर्माण का दायित्व निभा रहा है। सतत् प्रगति सोपान रूढ़ इस शिक्षा संस्थान की मूल एवं ज्येष्ठतम, शाखा इलाहाबाद इण्टर कालेज है, जो गौरवशाली अतीतभव्य वर्तमान और उन्नतिशील, भविष्य को अपने वक्षस्थल पर निष्कलंक अचल मे छिपाये भारतीय परम्पराओं का अक्षुण्य प्रतीक है। वाणिज्य शिक्षा का प्रमुख शिक्षा संस्थान इलाहाबाद इण्टर कालेज महाराज अग्रसेन जी के वंशज, लक्ष्मी के पुत्र, दानवीर अग्रवाल बन्धुओ की 'अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद' द्वारा संचालित होता है। विद्यालय के क्रियाकलापों के सम्यक् निर्देशन एवं निरीक्षण हेतु 'इलाहाबाद इण्टर कालेज प्रबन्ध समिति, गठित है।

इलाहाबाद इण्टर कालेज नगर के ही नहीं बल्कि प्रदेश के अनेकानेक माध्यमिक विद्यालयों में अपना एक विशिष्ठ स्थान रखता है। इसका कारण है विद्यालय भी समृद्धिशाली भौतिक व्यवस्था अर्थात सुन्दर भवन, पर्याप्त काष्ठ उपकरण, सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, अन्य पुस्तकालय आदि, सचेष्ट एवं उदार प्रबन्ध समिति द्वारा यथोचित निर्देशन व निरीक्षण, एवं कर्मठ, उत्साही,

1 बड़े बाबू से साक्षात्कार 13-5-98

कर्तव्यनिष्ठ व सुयोग्य शिक्षक एव कर्मचारी पूर्व वर्षो में लगभग 3000 विद्यार्थी, 65 शिक्षक, 7 लिपिक और 22 परिचारकों की जन शक्ति विद्यालय मे हुआ करती थी। परन्तु आज छात्रो की संख्या 2083, शिक्षकों की 48, लिपिको 6 और परिचारको की मात्र 15 ही रह गयी है। आज की विषम परिस्थिति मे इस सस्था को भी बनाये रखने मे मुख्यत प्रबन्धक महोदय डा0 पीयूष रजन अग्रवाल का अथक परिश्रम और अप्रतिम प्रयास है।

विद्यालय मे सह शिक्षा दी जाती है, जिसमे बालिकाओं को प्रात काल से तथा द्वितीय पाली में बालको को पढाया जाता है। विद्यालय प्रांगण में समुचित व्यवस्था, अनुशासित क्रिया-कलाप एवं स्वच्छ-सुन्दर शैक्षणिक वातावरण के लिए माननीय प्राचार्य जी तो अनवरत प्रयलशील रहते ही हैं, परन्तु व्यवस्था को और अधिक चुस्त-दुरूस्त करने की दृष्टि से उन्होंने गतवर्ष से उपयुक्त एवं प्रभावशाली, अनुशासन समिति, प्रवेश समिति और परीक्षा समिति, का गठन कर रखा है, जिससे विद्यालय का सम्पूर्ण वातावरण सर्वदृष्टया प्रदूषण रहित हो गया है। सचमुच विद्यालय का वर्तमान वातावरण अतिसहयोगपूर्ण एव मधुर है। वर्तमान प्राचार्य श्री राम अवतार सिह जी हैं।

महबूब अली हायर सेकेण्डरी स्कूल, इलाहाबाद

महबूब अली हायर सेकेण्डरी विद्यालय इलाहाबाद के पुराने विद्यालयो मे से एक है। इस विद्यालय की स्थापना 1935 ई0 में श्री महबूब अली साहब ने की थी। प्रारम्भ में विद्यालय प्राइमरी था फिर बाद में हाईस्कूल हुआ। इस विद्यालय को यू0 पी0 बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है।

विद्यालय मे पुस्तकालय, प्रयोगशाला आदि सभी आवश्यक वस्तुएँ, जिनसे विद्यार्थियो को लाभ हो सकता है विद्यमान है। वर्तमान समय में भी विद्यालय मे छात्रो की सख्या संतोष जनक है।[1]

---

1 प्रबन्धक से साक्षात्कार 7-7-98

जमुना क्रिश्चियन इण्टर कालेज

कटघर, इलाहाबाद

जमुना क्रिश्चियन इण्टर कालेज, कटघर में स्थित है और दक्षिणाञ्चल क्षेत्र को शिक्षित करने में अपनी अप्रतिम भूमिका निभा रहा है। विद्यालय की स्थापना डायोसीस आफ लखनऊ द्वारा 1842 ई0 में हुयी थी तथा 1952 में विद्यालय को हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की मान्यता मिली। विद्यालय में विज्ञान वर्ग, कलावर्ग व वाणिज्य वर्ग की शिक्षा हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट में प्रदान की जाती है। वर्तमान समय में विद्यालय 6 से 12 तक चलता है, जिसमें 2249 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।[1]

विद्यालय में प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, एन0 सी0 सी0, स्काउट, गाइड, तथा खेल कूद की उत्तम व्यवस्था है और अनुशासन की दृष्टि से विद्यालय का अपना एक अलग महत्व है। विद्यालय के मैनेजर श्री सी0 वी0 इन्स है। विद्यालय के प्राचार्य श्री आर0 के0 गोवन हैं।[2]

डा0 घोष मार्डन इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

डा0 घोष मार्डन इण्टर कालेज, की स्थापना 1910 ई0 में डा0 जे0 जे0 घोष ने की थी। प्रारम्भ में विद्यालय प्राइमरी फिर जूनियर हाईस्कूल तथा बाद में हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट हुआ। हाईस्कूल के विद्यार्थियों को विज्ञान, कलावर्ग व रचनात्मक वर्ग में शिक्षा दी जाती है। इस विद्यालय को हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की मान्यता क्रमश 1912, 1955 में प्राप्त हुयी। वर्तमान समय में 850 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।[3]

विद्यालय में एक अनुपम पुस्तकालय है जहाँ अनेक पुस्तकें विभिन्न भाषाओं की विद्यमान हैं तथा छात्रों को निर्गत भी की जाती हैं। पुस्तकालय से लगा हुआ एक

---

1 वार्षिक पत्रिका 'मैगजीन' पृ0 7
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-7-98
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 17-3-98

प्रयोगशाला भी है जो अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं विद्यालय में वाचनालय व खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। शरीरिक शिक्षा के रूप में एन0 सी0 सी0 तथा स्काउट व गाइड भी है। इस प्रकार विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए अनुकूल वातावरण विद्यालय में विद्यमान है। इस वातावरण में प्रमुख सहयोग विद्यालय के प्राचार्य श्री सैयद अब्बास जी है।[1]

दौलत हुसैन मुस्लिम इण्डियन हायर सेकेण्डरी स्कूल (अल्प संख्यक संस्था)

इलाहाबाद

दौलत हुसैन मुश्लिम इण्डियन हायर सेकेण्डरी स्कूल, इलाहाबाद की गिनी चुनी उन शैक्षणिक सस्थाओं में से एक है जो गंगा-यमुनी सभ्यता के समय में प्रारम्भ की गयी थी; और इतिहास गवाह है कि जिसने अपने देश, कौम तथा समाज को ऐसे सम्भ्रान्त एवं प्रतिभावान नागरिक दिये, जिन्होंने न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी अपनी साख की विशिष्ट छाप छोडी है।[2] यह संस्था सन् 1887 ई0 में 'मुश्लिम एजुकेशन एसोसिएशन, नामक समिति मुश्लिम समुदाय के प्रबन्ध संचालन में स्थापित की गयी। यही वह समय था, जब सर-सैय्यद अहमद खॉ ने अलीगढ में 'मोहम्मद ऐंग्लों ओरियन्टल' कालेज, की स्थापना की जो अब 'अलीगढ मुश्लिम विश्वविद्यालय' के नाम से जाना जाता है या जब दक्षिण भारत में "दक्षिण-शिक्षा समाज ने 'फरग्यूसन कालेज' की स्थापना सन् 1885 ई0 में पूना में की और, जिसके गोपालकृष्ण गोखले संस्थापक सदस्य थे।[3] यह सस्था प्रारम्भ में 'एंग्लोवर्नाक्यूलर स्कूल' के नाम से स्थापित की गयी थी और जिसकी स्थापना में श्री दौलत हुसैन साहब के अलावा मौलवी विलायत हुसैन और श्री हाजी मु0 हुसैन साहब का प्रयास अविश्मरणीय है। उसी समय सस्थापक सदस्यों ने संस्था में बालक एवं बालिकाओं के लिए हाईस्कूल, इण्टर तथाडिग्री स्तर तक शिक्षा दिये जाने के उद्देश्य की परिकल्पना की थी और संकल्प लिया था, जिसका पंजीकरण संम्बन्धित अधिकारियों ने सन् 1932 मे कर लिया था।[4] सन् 1887 में 'एंग्लो वर्नाक्यूलर

---

1 अध्यापकों से साक्षात्कार 17-3-98
2 दौ0 हु0 मु0 वार्षिक पत्रिका पृ0 13
3 वही-पृष्ठ 14
4 वही-पृष्ठ 15

स्कूल' नाम में स्थापित किया गया यह छोता सा विद्यालय धीरे-धीरे अपना सफर तय करते हुए सन् 1945 में हाईस्कूल की मान्यता, साहित्यिक, रचनात्मक एवं वाणिज्य वर्ग में प्राप्त करने मे सफल हुआ। सन् 1983 में विज्ञान वर्ग की मान्यता प्राप्त करने पर भी कक्षाओं के सचालन की शर्तो को पूरा करने के लिए संस्था को अनेक कठिनायों का सामना करना पडा अन्तत स्थानीय जनता, वर्तमान प्रबन्ध समिति, प्राभूतकोष के लिए 15000 रू0 इकट्ठा कर जिला विद्यालय निरीक्षक इलाहाबाद के साथ सहयोग किया। इसके अतिरिक्त सुरक्षा कोष के रूप में 5000 रूपये भी जमा कर दिये गये, जिससे विज्ञान वर्ग के सचालन का अवरोध समाप्त हो गया है और छात्रों को विज्ञान विषयो की भी शिक्षा दी जाने लगी और सौभाग्यवश विद्यालय का परीक्षाफल सराहनीय रहा।[1]

वर्तमान प्रबन्ध समिति के अथक प्रयास विशेष रूप से प्रबन्धक श्री चौधरी नियाज अहमद खाँ तथा प्रधानाचार्य श्री मु0 शफीकुज्जाँ के प्रयासों, सूझबूझ एवं शासन से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने के परिणामस्वरूप संस्था को संविधान की धारा 30 (1) का लाभ प्रदान करते हुए 1995 में अल्पसंख्यक संस्था घोषित कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि विद्यालय प्रबन्ध समिति ने इण्टरमीडिएट कक्षाओं के संचालन के लिए विद्यालय भवन में नवीन 5 कमरों का निर्माण, पुस्तकालय की पुस्तकों का भडार आदि अनेक आवश्यक शर्तो को पूरा कर के विद्यालय को इण्टरमीडिएट स्तर तक उच्चीकृत करने हेतु प्रयास शुरू कर दिये थे। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यालय को 1997 में इण्टरमीडिएट में कला वर्ग की मान्यता प्राप्त हो गयी।[2]

बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए विगत 6 जनवरी 1996 को विद्यालय के विशाल खेल मैदान पर माननीय उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री इशरत मसरूर कुद्दूसी साहब ने प्रस्तावित भवन की आधारशीला रखी। वर्तमान समय में 1 से 10 तक की कक्षाएँ अपने पुराने भवन में ही 1 बजे से प्रारमभ होती है। जब कि प्रात कालीन कक्षाएँ बालकों के लिए होती हैं। बालिकाओं की शिक्षा-दीक्षा के लिए योग्य तथा अनुभवी अध्यापिकाओं की व्यवस्था प्रबन्ध समिति ने की है।

---

1 दौ0 हु0 मु0 वार्षिक पत्रिका पृ0 13
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-11-97

बालिकाओं के लिए उपयोगी, विषयों, विशेष रूप से गृह विज्ञान, कला, सिलाई, कढाई, बुनाई तथा कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान किये जाने का प्रस्ताव है।

इस समय विद्यालय में कठोर अनुशासन में शिक्षा ग्रहण करते हुए बालक, बालिकाओं की संख्या 650 है। अध्यापकों की सख्या 31 है। वर्तमान प्राचार्य श्री मु0 शफीकुजमाँ साहब हैं।

मजीदिया इस्लामियां इण्टर कालेज, इलाहाबाद

इस विद्यालय का प्रारम्भ सन् 1917 में अत्यन्त सामान्य रूप में हुआ और नवाब मौलवी अब्दुल मजीद साहब ने बक्सी बाजार में इसकी स्थापना की। प्रारम्भ में विद्यार्थियों की संख्या कम थी और वित्तीय स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं थी। स्थापना के दो वर्ष बाद ही इसको मिडिल स्कूल के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी।[1] विद्यालय के प्रारम्भिक वर्षो में प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष सर शाहमोहम्मद सुलेमान साबह रहे और उनके मार्गदर्शन में विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहा। सन् 1930 में इसे हाईस्कूल के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी और तब से यहाँ विद्यार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही और शिक्षा के क्षेत्र में यह विद्यालय अपना योगदान देता रहा और विद्यालय का विकास हर दिशा में होता रहा। जिसके कारण प्रबन्ध समिति ने निर्णय किया कि इसे इण्टर कालेज के रूप में विकसित किया जाय। सर सफात अहमद खॉ ने इस विद्यालय के विकास में विशेष रूचि ली और उन्हीं के प्रयाशों से सन् 1940 में इस विद्यालय को इण्टर कालेज के रूप में मान्यता मिल गयी।[2]

विद्यालय को विभिन्न सूत्रों से अनुदान प्राप्त हुआ, जिनमें निजाम हैदराबाद का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इण्टर कालेज का उद्‌घाटन प्रान्त के गवर्नर महोदय ने किया और विद्यालय में 1940 के प्रारम्भ में 500 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, विद्यालय मे खेलकूद की समुचित व्यवस्था रही है। यहाँ पर स्काउटिंग में विद्यार्थी विशेष रूचि लेते है।[3] पुस्तकालय की व्यवस्था अच्छी है,

---

1 वार्षिक मैगजीन पृ0 13
2 वही-पृष्ठ 14
3 वही-पृष्ठ 13

वाचनालय भी है। विद्यालय मे बालको के सम्पूर्ण विकास पर बल दिया जाता है। विद्यालय की इमारत मे बराबर विकास होता रहा है। और यह इलाहाबाद के माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयो में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समय यह विद्यालय प्रथम से इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा देता है तथा कुल 2000 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनको 49 कुशल अध्यापको द्वारा शिक्षा दी जा रही है। वर्तमान प्राचार्य श्री मोहम्मद सरफराज हुसैन जी हैं।

स्वामी विवेकानन्द विद्याश्रम

जार्जटाउन, इलाहाबाद

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1979 में "कास्मिक एजूकेशन सोसाइटी" के द्वारा हुयी। प्रारम्भ से ही यहाँ प्रथम से अष्टम् तक शिक्षा दी जाती है। इसे कहीं से अनुदान नहीं मिलता। यहाँ कम्प्यूटर शिक्षा भी उपलब्ध है। इस समय यहाँ 3 कम्प्यूटर तथा 2 कम्प्यूटर टीचर हैं। परीक्षार्थियों का परीक्षाफल शतप्रतिशत रहता है।[1]

यहाँ हिन्दी माध्यम से शिक्षा दी जाती है। पुस्तकालय के अतिरिक्त वाचनालय तथा साइकिल स्टैण्ड भी है यहाँ तीन बसें भी चलती हैं। विद्यालय का विकास दिनों-दिन हो रहा है। इस समय लगभग 1200 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिन्हें कठोर अनुशासन में रखा जाता है।[2]

माँ बाल विकास विद्यालय

इलाहाबाद

यह विद्यालय भरद्वाज पुरम् में स्थित है, इस की स्थापना प्रथम प्राचार्या श्रीमती सूरजकली जी ने की थी। इस समय उनकी सुपुत्री कुमारी वसुन्धराबाला जी प्राचार्या हैं। यहाँ पर प्रारम्भ से ही प्रथम से अष्टम से शिक्षा दी जाती है।

इस विद्यालय में 150 विद्यार्थी हैं, इस विद्यालय को 1995-96 में उत्तर प्रदेश सरकार से मान्यता भी मिली तथा अनुदान भी मिलता है।

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-2-98

2 प्राचार्य से साक्षात्कार 14-2-98

अध्याय- 4

माध्यमिक शिक्षा

भाग- 2

प्रयाग भारत का सुप्रसिद्ध धार्मिक, राजनैतिक एव ऐतिहासिक आदर्श स्थान है। सदा से भारतीय सस्कृति तथा शिक्षा प्रसार का केन्द्र रहा है। महर्षि भारद्वाज का आश्रम यही पर था। वह धर्म के आचार्य विद्या के कुलपति और आयुर्वेद के प्रवर्तक माने जाते थे। देश के कोने-कोने से असंख्य प्राणी प्रतिवर्ष अपनी ज्ञान पिपासा की शान्ति तथा आत्म कल्याण के लिए यहाँ आया करते हैं। गगा यमुना का सगम, श्री त्रिवेणी क्षेत्र होने से प्रति वर्ष माघ मकर मास में और विशेष रूप से प्रति 12 वर्ष पर होने वाले कुम्भ पर्व तथा अर्ध कुम्भ के अवसर पर विश्व के सन्त, महात्मा विद्वानों के एकत्र होने की परम्परा आज भी है। इसलिए यहाँ पर ऐसे विद्यालय स्थापित होते रहे, जिसके कारण समाज में शिक्षा का प्रसार होता रहा है।

आज भी प्रयाग नगरी अपने ऐतिहासिक महत्व "शिक्षा" रूपी वटवृक्ष को पुष्पित व पल्लवित करने में निरन्तर प्रयत्नरत है। पुरानी शिक्षा में परिवर्तन के फलस्वरूप शिक्षा का जो विकास हुआ वह अनेक चरणों में हुआ है, जिसका विवरण निम्नलिखित है।

महिला शिक्षा में माध्यमिक स्तर पर जो विकास हुआ वह एक क्रान्तिकारी व आश्चर्य जनक विकास हुआ, जो महिलाऍ शिक्षा में भाग न लेती थी उन सब में नयी ज्योति निम्न शिक्षण सस्थानों ने जलाया।

ईश्वरशरण बालिका विद्यालय इण्टरमीएिट कालेज, इलाहाबाद

यह विद्यालय मुशी ईश्वरशरण जी द्वारा स्थापित आश्रम का एक अंग है। मुंशी जी एक प्रख्यात अधिवक्ता थे, जो राष्ट्रपिता महात्मागांधी की कृपा से अपना सर्वस्व त्यागकर समाजोत्थान एव राष्ट्रसेवा के महान कार्य मे जुटे और जीवन पर्यन्त इसी क्षेत्र में संलग्न रहे।[1]

इनके महाप्रयाण के पश्चात् उनके सुपुत्र माननीय न्यायमूर्ति स्व0 शकर शरण जी अपने योग्य पिता का अनुशरण करते हुए कुशल एवं सक्रिय संचालन में जीवन पर्यन्त योगदान किया। वह हमारे आश्रम एवं विद्यालय के हृदय एवं आत्मा थे। इस विद्यालय के प्रति उनका विशेष स्नेह था।[2]

---

1 ईश्वर शरण बालिका इण्टर कालेज मैगजीन पृ0 2
2 वही पृष्ठ 3

भारत वर्ष मे हरिजनो की दशा में सुधार हेतु महान समाज सुधारक मुंशी ईश्वर शरण जी ने 1936 में एक छोटी सी झोपडी में ईश्वर शरण आश्रम की शुरूआत किया। वर्ष 1943 ई0 में ग्वालियार की रानी शिटेले इस आश्रम में अतिथि के रूप में आयीं तथा मुशी जी के अनुरोध पर उन्होंने बालिकाओं के छात्रावास हेतु 15000 रूपये दान में दियें निर्धन हरिजन छात्राओ को इस छात्रावास में स्थान दिया गया।[1]

वर्ष 1946 में बालक एव बालिकाओं दोनों के लिए एक प्राइमरी विद्यालय प्रारम्भ किया गया। 1948 ई0 में प्राइमरी स्कूल का उच्चीकरण जू0 हा0 तक किया गया, जिसमें बालक एव बालिकाएँ दोनों साथ पढते थे।

बलिकाओं का जू0 हा0 का विभाग 1950 में अलग कर दिया गया, जिसमें लगभग 45 छात्राएँ थीं और यह छात्राओं का विभाग महिला शिक्षिकाओं के चार्ज में एक अलग भवन में कर दिया गया। वर्ष 1956 में छात्राओं की सख्या में वृद्धि हुयी। अतः उपरी मंजिल का निर्माण कराया गया। इस प्रकार प्रथम तल में कक्षाएँ लगने लगीं तथा भूतक का प्रयोग छात्रावास के रूप में किया गया। आश्रम के नियमों के अनुसार छात्राओं को अपने संम्पूर्ण कार्य स्वयं अपने हाथों से करने होते थे।[2]

वर्ष 1961 ई0 में महिला विभाग को, 'ईश्वरशरण बालिका विद्यालय,' जूनियर हाईस्कूल' के रूप में मान्यता प्राप्त हुयी। 1964 में हाईस्कूल की मान्यता मिली तथा 1966 में इण्टरमीडिएट की मान्यता मिली। अब कक्षा प्रथम से लेकर बारहवीं तक कक्षाएँ चलती हैं।

यहाँ कला वर्ग, वणिज्य वर्ग तथा विज्ञान वर्ग की शिक्षा छात्राओं को प्रदान की जाती हैं।[3] विद्यालय की विशेषता-इस विद्यालय में छात्राओं के चतुर्मुखी विकास के सभी साधन उपलब्ध कराये जाते हैं। विद्यालय में एक वृहृद पुस्तकालय है, जिसमें छात्राएँ पुस्तकों को पढती हैं। वाचनालय में अखबारों तथा पत्रिकाओं को मगाया जाता है, जिससे छात्राएँ देश विदेश की जानकारी प्राप्त करती हैं।[4]

---

1 ईश्वर शरण बालिका इण्टर कालेज मैगजीन पृ0 3

2 वही पृष्ठ 2

3 वही पृष्ठ 4

4 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-7-98

इस विद्यालय की प्रथम प्राचार्या श्रीमती गौरी चक्रवर्ती थी। इन्होंने 40 वर्ष तक विद्यालय की सेवा की तथा वर्तमान प्राचार्या श्रीमती शिवानी नन्दी हैं।

नवीन महिला सेवा सदन इण्टर कालेज

इलाहाबाद

नवीन महिला सेवा सदन इण्टर कालेज इलाहाबाद शहर के महत्वपूर्ण महिला विद्यालयों में से एक है। इसकी स्थापना श्री सगमलाल अग्रवाल ने की थी। प्रारम्भ में यह विद्यालय प्राइमरी तक चलता था बाद में 1967 में जूनियर हाईस्कूल की शाखा बनी तथा 1 अप्रैल 1967 में मान्यता प्राप्त हुयी। हाईस्कूल की मान्यता 1973 में और इण्टर की मान्यता 1976 में प्राप्त हुआ। अतिलघु समय में हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की मान्यता प्राप्त कर देश के निर्धन छात्राओं को शिक्षा क्षेत्र में प्रोत्साहित कर उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढने का सहयोग प्रदान कर रहा है। इस विद्यालय की स्थापना के कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे।[1]

1 निर्धन छात्राओं को शिक्षित करना।

2 अपने क्षेत्र के शतप्रतिशत लोगों को शिक्षित करना

3 शिक्षा के क्षेत्र में छात्राओं को विभिन्न कलाओं में दक्ष करना।

4 समाज को स्वस्थ एवं निष्ठवान नागरिक प्रदान करना।

5 छात्राओं में हाईस्कूल व इण्टर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उतीर्ण करने की भावना जागृत करना।[2]

इस विद्यालय में छात्राओं को विज्ञान व कलावर्ग दोनों में छात्राओं को शिक्षित किया जाता है। प्रायोगिक प्रशिक्षण हेतु एक सुन्दर प्रयोगशाला विद्यालय में विद्यमान है। अत्यल्प छात्राओं से प्रारम्भ होकर विद्यालय में आज 3000 छात्राएँ पढ्ती हैं।[3]

एक वृहद पुस्तकालय भी है, जिसमें विभिन्न भाषाओं की हजारों पुस्तकें छात्राओं के पठन-पाठन के लिए उपलब्ध है। वाचनालय भी विद्यालय पुस्तकालय में ही है।[4]

---

1 कालेज मैगजीन पृष्ठ 3

2 प्राचार्या से साक्षात्कार 12-3-97

3 बड़े बाबू से साक्षात्कार 22-3-97

4 प्राचार्या से साक्षात्कार 22-3-97

खेल प्रतियोगिता मे छात्राएँ जिला स्तर व मण्डल स्तर तक भाग लेकर इनाम प्राप्त करती है। विद्यालय परिसर मे साइकिल स्टैण्ड भी है।[1]

यहाँ की प्राचार्या कठोर अनुशासन रखती है जिनके नेतृत्व में छात्राओं का बहुमुखी विकास हो रहा है। अनुशासन का अनुपम उदाहरण देखने को मिलता है। विद्यालय की छात्राओं को हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट का परीक्षाफल क्रमश 88 तथा 90 1997 में रहा। इससे पता चलता है कि छात्राओं की शिक्षा बहुत अच्छी प्रकार से हो रही है तथा विद्यालय विकास के पथ पर तीव्रगति से अग्रसर है।

आर्यकन्या इण्टर कालेज,
इलाहाबाद

आर्य कन्या इण्टर कालेज शहर के प्राचीन विद्यालयों में से एक है इस विद्यालय का एक लम्बा इतिहास है। 13 नवम्बर 1904 को आर्य समाज चौक की सभा में 9 व्यक्तियों की एक उपसभा का निर्माण किया गया। इसमें लाला जसवन्त राय जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री रामदीन जी वैश्य, डा0 गनपत राय, श्रीरामजी दास भार्गव, श्री कृष्ण चन्द्र जी प्रमुख थे। प्रो0 कृष्ण चन्द्र जी उस समय आर्य समाज चौक के प्रधान थे।[2]

13 नवम्बर 1905 को प्रयाग के उत्साही आर्यबन्धुओं द्वारा आर्यकन्या पाठशाला की स्थापना की गयी। धीरे-2 इस विद्यालय में छात्राओं की सख्या बढ़ने लगी। 1908-9 में 110, 1912-13 में 158 बालिकाएँ थीं। पाठशाला का आरम्भ जानसेन गंज में स्थित किराये के मकान में हुआ। 1913 ई0 में आर्यकन्या पाठशाला के लिए मुट्ठी गज में 5000 रूपये में कोठी क्रय की गयी। 28.8 1939 को (केस नं0 13) द्वारा शम्भू प्रसाद की भूमि खेल के लिए 6326 रू0 14 आना में लिया गया। बाद में जिला जज ने 1943 में 8 आना और देने की आज्ञा दी।[3]

---

1 अध्यापिकाओं से साक्षात्कार 22-3-97
2 आर्य कन्या मैगजीन पृ0 5
3 वही पृ0 6

सन् 1905 में प्राइमरी कक्षाओं से पाठशाला का आरम्भ हुआ। जैसे-जैसे कन्याएँ बढ़ती गयीं वैसे-वैसे अन्य कक्षाओ का प्रबन्ध होता गया। हिन्दी मिडिल तक कक्षाएँ खुल गयीं और कन्याएँ हिन्दी मिडिल परीक्षा में सम्मिलित होती रहीं। इनकी संख्या 1913-14-8, 1915-16 में 12, 1916-17 में 15 थीं। यह अवस्था 1925 तक रही। पाठशाला की छात्रा सख्या 250 से अधिक न आ सकी। 1920 में 242, 1922 में 209, 1923, 263-अंक अवनति की ओर थे।

7 मई 1926 को सभा ने निश्चिय किया कि अग्रेजी और संस्कृत की विशेष कक्षाएँ खोली जाएँ। श्रीमती सरोजनी मजूमदार की नियुक्ति 6 दिसम्बर 1926 को हुयी। अभी तक कोई शुल्क न लिया जाता था। परन्तु व्यय बढने के कारण 8 जनवरी 1927 को निश्चित किया गया कि शुल्क लिया जाय। यह शुल्क साधारण शिक्षा के लिए। मासिक था। विशेष कक्षा प्रथम वर्ष का 111 तथा द्वितीय तृतीय वर्ष एक 1/ था। इस प्रकार हिन्दी मिडिल की परीक्षा के साथ-साथ संस्कृत और अंग्रेजी की शिक्षा दी जाने लगी।[1]

प्रबन्धक सभा में श्री जसवन्त रायजी के प्रोत्साहन देने के कारण 12 जून 1927 को निश्चित किया कि आर्यकन्या पाठशाला को अंग्रेजी हाईस्कूल के रूप में परिणित किया जाय। कक्षाएँ खोलने के लिए कमरों की आवश्यकता थी। किन्तु कमरे नहीं थे तथापि इलाहाबाद बैंक से कर्ज ले कर न कमरों का निर्माण कराया गया। इन्हीं कमरों में आजकल कार्यालय, प्रधानाचार्या का कार्यालय, स्टाफरूम तथा कक्षाएँ लगती हैं। भवन बनकर तैयार हो गये, वर्ष 1928 में इंग्लो वर्नाफ्यूलर मिडिल की मान्यता प्राप्त हो गयी।[2]

जुलाई 1933 में सर्वप्रथम हाईस्कूल परीक्षा के लिए प्रार्थनापत्र भेजा गया। इस सम्बन्ध में विशेष संघर्ष करने पडे। श्री जसवन्त राय जी प्रब्धान थे और श्री गंगा प्रसाद जी उपाध्याय मैनेजर थे। फलस्वरूप 1934 ई0 में हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हो गयी और 1936 ई0 की हाईस्कूल परीक्षा में गृह विज्ञान के लिए 1939 ई0 में तथा भूगोल व ड्राइंग के लिए 1940 ई0 में मान्यता प्राप्त हुयी। वर्ष 1950 में इण्टरमीडिएट हेतु भी मान्यता प्राप्त हो गयी।

---

1 आर्य कन्या मैगजीन पृ0 5

2 प्राचार्या से साक्षात्कार 13-3-97

सन् 1975 ई0 में इसे महाविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो गयी और बी0 ए0 प्रथम वर्ष की कक्षाएँ खुल गयीं। सन् 1977-78 तथा 78-79 में श्री खजान सिंह प्रधान आर्य कन्या इण्टर कालेज ने सभा के निजी साधनों से नौ कमरे बनवाये इस प्रकार प्राइमरी कक्षाएँ भी मुख्य भवन की ओर लगने लगी।

आजकल इस विद्यालय मे 3500 छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। प्रधानाचार्य के अतिरिक्त 85 अध्यापिकाएँ एक प्रधान लिपिक, 6 सहायक लिपिक और एक पुस्तकालयाध्यक्ष सेवा रत है। इस पुस्तकालय में इस समय 11167 पुस्तकें हैं। लगभग सभी समाचार पत्र एव पत्रिकाएँ आती हैं। श्री जसवन्त राय ने अपनी पत्नी श्रीमती ज्ञानवती की स्मृति में एक यज्ञशाला का निर्माण कराया।

श्री बी0 एन0 झा0 के कर कमलों द्वारा 1952 में विज्ञान भवन का उद्‌घाटन किया। 1952 में ग्यारहवीं कक्षा विज्ञान में खोलने की मान्यता मिल गयी। 1957-58 तक विज्ञान की प्रयोगशाला भवन, उपकरण आदि पूर्ण रूप से तैयार हो गये। 7 मई 1926 को सभा ने छात्रावास खोलने का निश्चय किया। यह छात्रावास 10 वर्ष तक चलता रहा। बाद में छात्राओं की संख्या कम होने तथा स्थान की कमी होने के कारण बंद कर देना पड़ा।

सन् 1934 में आनन्द ज्योति परिषद की स्थापना हुयी। यह शनिवार को हवन के बाद होता है। इसमें वाद-विवाद, कविता, कहानी, आख्यान आदि आयोजित किये जाते हैं।

विज्ञान विभाग के अन्तर्गत विज्ञान परिषद की स्थापना 18 अगस्त 1951 को हुयी। कन्याएँ भ्रमणार्थ भी जाया करती हैं।

कालेज में इस समय सब प्रकार के खेलों का सुप्रबन्ध है। कन्याएँ बालीबाल, बास्केटबाल, बैडमिण्टन आदि खेल सकती हैं। छोटी कन्याओं के लिए झूले लगे हैं और स्काइड बना हुआ है। एक अध्यापिका व्यायाम तथा खेल के लिए नियुक्त की गयी हैं।

यहाँ की कन्याएँ स्थानीय प्रतियोगिताएँ और जिला ओलम्पिक खेलों में सदा भाग लेती रहती हैं।

इस प्रकार ये विद्यालय आज समाज में बहुत ही सफलता पूर्वक शिक्षण कार्य कर रहा है।

इण्डियन गर्ल्स इण्टर कालेज

इलाहाबाद

इण्डियन गर्ल्स इण्टर कालेज, की स्थापना कुछ बगाली शिक्षा के प्रेमियों ने महिला शिक्षा के लिए 1888 ई0 मे इसकी स्थापना की थी।

प्रारम्भ मे इसका नाम, "इण्डियन गर्ल्स फ्री स्कूल", था। तभी से अनेक अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों को पार करते हुए यह विद्यालय अब इण्टर कालेज के रूप मे एक विशाल बरगद की तरह इलाहाबाद शहर में अनन्य अस्तित्व बनाकर रखा है। उत्कृष्ट परीक्षाफल अतिसराहनीय कार्य कुशलता तथा अदम्य उत्साह से विद्यालय दिन प्रति दिन आगे बढ रहा है। अब छात्राओं की संख्या लगभग 1400 हो गयी है, जिसमें बैठने के लिए कमरे तथा फर्नीचर की कमी हो गयी है। इस कमी को पूरा करने के लिए राज्य सरकार का सहयोग अपेक्षित है।[1]

विद्यालय की छात्राएँ, जिले के विभिन्न शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्रार्यक्रमों मे भाग लेती हैं और विशिष्ट स्थान प्राप्त करती हैं। गाइडिंग शिक्षा नियमित रूप से दी जाती है, जिसके द्वारा छात्राएँ अनुशासित एवं योजना बद्ध रूप से कार्य करना सीखती हैं।[2] विद्यालय की प्रगति वहॉ के अनुशासन पर निर्भर होती है। विद्यालय में अनुशासन एवं स्वक्षता बनाये रखने के लिए चार सदनों में छात्राओं को बॉटा गया है। सभी सदन अपना-अपना कार्य कुशलता पूर्वक करते हैं।

विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षक अभिभावक संघ बनाया गया है। प्रातिवर्ष इस सघ की कार्यकारिणी की सदस्यों का चुनाव होता है। वर्ष में तीन चार बार विद्यालय में बैठक होती है। विद्यालय एवं छात्राओं की प्रगति में अभिभावकों का भी सहयोग प्राप्त होता है।

बैंक के गतिविधियों की जानकारी छात्राओं को देने के लिए विद्यालय में संचायिका स्कूल बैंक है जो प्रधानाचार्या तथा दो अध्यापिकाओं के निरीक्षण में सचालित होती है।[3]

---

1 कालेज पत्रिका पृ0 6
2 कालेज पत्रिका पृ0 7
3 कालेज पत्रिका पृ0 8

विद्यालय की छात्राएँ खेलकूद तथा व्यायाम प्रतियोगिता तथा प्रदर्शन में भाग लेती रहती हैं। यद्यपि खेल के लिए प्रांगण अपर्याप्त है। फिर भी छात्राएँ जनपदीन क्रीड़ा समारोह मे प्रतिभागिता करती रहती हैं।[1]

विद्यालय की अपनी एक बैंडपार्टी है, जिसमें 28 बच्चे हैं जो जनपद के अनेक कार्यक्रमो मे उत्साह पूर्वक अपना सुन्दर प्रदर्शन करती रहती हैं।[2]

वर्तमान समय में 10 तक कला वर्ग-विज्ञान वर्ग दोनो की शिक्षा तथा इण्टर स्तर पर केवल कला वर्ग की शिक्षा दी जाती है। विद्यालय को हाईस्कूल की मान्यता 1948 मे तथा इण्टर की 1973 मे मिली। वर्तमान समय मे 24 अध्यापिकाये हैं। प्राचार्या श्रीमती माया मुखर्जी हैं।

राजकीय बालिका इण्टर कालेज

इलाहाबाद

राजकीय बालिका इण्टर कालेज की स्थापना सन् 1950 मे भारतीय सरकार द्वारा की गयी थी। प्रारम्भ मे यहाँ 6 से 10 तक की शिक्षा दी जाती थी। 1953 में इण्टरमीडिएट की भी मान्यता मिली। विद्यालय भवन आवश्यकतानुसार हैं अनुशासन की अनुपम व्यवस्था होने के कारण छात्राएँ अनुशासित रहती हैं।[3]

यहाँ एक वृहद पुस्तकालय है, जिसमे हजारो पुस्तके है। इसके अतिरिक्त अनेक पत्र व पत्रिकाएँ मगायी जाती हैं। प्रयोगशाला व साइकिल स्टैण्ड की उत्तम व्यवस्था है। प्रारम्भ में. यहाँ छात्राओं की सुविधा के लिए बसें भी चलती थीं, जो 1982 के बाद बन्द हो गयी।

यह विद्यालय सिविल लाइन्स में स्थित है तथा प्रयागराज में शिक्षा के विकास मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका रहा है।[4]

वर्तमान प्राचार्या डा0 सुधारानी यादव जी हैं।

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 3-7-98
2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 3-7-98
3 प्राचार्या से साक्षात्कार 1-1-98
4 उप प्राचार्या से साक्षात्कार 1-1-98

प्रयाग महिला विद्यपीठ इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

प्रयाग महिला विद्यापीठ इण्टर कालेज की स्थापना 1922 में हुयी। 1930 में महाविद्यालय के रूप में विकास हुआ। इसके प्रथम कुलपति प0 जवाहर लाल नेहरू जी थे। बाद में डा0 कैलाशनाथ काटजू जी इसके कुलपति हुए।

इस विद्यालय को 1964 में जूनियर हाईस्कूल की मान्यता मिली। इस समय हाईस्कूल तथा इण्टर स्तर की मान्यता साहित्यिक वर्ष में क्रमश 1966, 1968 में शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त की गयी। विज्ञान वर्ग की मान्यता 1984 में प्राप्त हुयी। केवल कला वर्ग की शिक्षा इण्टरमीडिएट में दी जाती है, जिसमें प्रमुख विषय हैं-इतिहास, नागरिक शास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, सैन्य विज्ञान, संस्कृत, अग्रेजी, आलेख, कला, पी0 टी0 आदि की शिक्षा दी जाती है।[1]

वर्तमान समय में 43 कक्षाएँ 2000 छात्राएँ हैं, जो हाईस्कूल में व इण्टरमीडिएट में क्रमश निम्न वर्षो में परीक्षाफल निम्न लिखित रहा-

वर्ष	हाईस्कूल	इण्टरमीडिएट
1991	86	96
1992	60	85.
1997	44	82

यहाँ बालिकाओं को प्रयोगशाला की सुविधा हैं तथा एक वृहद पुस्तकालय भी है।[2]

वर्तमान समय में 1 प्राचाया 20 अध्यापिका 3 आफिस कर्मचारी 1 दफ्तरी 9 चतुर्थ वर्ग के कर्मचारी कार्यरत हैं। वर्तमान प्राचार्या श्रीमती निर्माला श्रीवास्तव हैं। विद्यालय के प्रबन्धक श्री चिन्तामणि पाण्डेय भूतपूर्व डी0 डी0 सी0 हैं।

इस विद्यालय में खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है, तथा बालिकाओं की सुविधा के लिए एक साइकिल स्टैण्ड भी है।

---

1 प्राचार्या स साक्षात्कार 13-9-98

2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 13-9-98

इस विद्यालय की स्थापना के बाद इस विद्यालय की सरक्षिका छायावाद की महान कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा जी के अधीनस्थ यह विद्यालय दिनो-दिन प्रगति करता गया। पहले यहाँ विद्याविनोदिनी नामक परीक्षा ली जाती थी, जो 10 के समकक्ष यू0 पी0 बोर्ड द्वारा मानी गयी थी। मई 1964 में विद्याविनोदिनी की मान्यता समाप्त कर दी गयी। विद्यालय को जूनियर हाईस्कूल से हाईस्कूल इण्टरमीडिएट तथा महाविद्यालय बनाने में महादेवी जी ने (यहाँ के कर्मचारी प्यार से गुरू जी कहते थे।) बडा योगदान दिया। महादेवी जी का साराजीवन शिक्षा तथा मानवता के कल्याण के लिए समर्पित है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना असम्भव है।[1]

हिन्दू महिला विद्यालय इण्टर कालेज,

सिविल लाइन्स,

इलाहाबाद

हिन्दू महिला विद्यालय पुराने बालिका विद्यालयों में से एक है। इस विद्यालय की स्थापना 1936 में बाबू भगवती चरण तथा श्री बेनी प्रसाद जी ने की थी। इसे 13-8-47 में हाईस्कूल तथा 1950 में इण्टर मीडिएट की मान्यता मिली। वर्तमान समय में यहाँ 1300 छात्राएँ हैं। यहाँ बालिकाओं के प्रथम से 12 तक शिक्षित किया जाता है।[2]

एक सुसज्जित पुस्तकालय के माध्यम से छात्राओं को पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की गयी है। वाचनालय भी सुलभ है। साइकिल स्टैण्ड भी विद्यमान है।[3]

यहाँ की छात्राएँ बास्केट बाल में राष्ट्रीय स्तर तक गयी हैं, जिसका नाम वार्षिका सिह है। शब्बो गुडिया ने इलाहाबाद मैराथन में पुरस्कृत की गयी थी।[4]

वर्तमान प्राचार्या श्रीमती सोमप्रभा जी के निर्देशन में सिविल लाइन्स में स्थित विद्यालय बालिका शिक्षा के विकास में नित नये आयाम के साथ अग्रसर है।

---

1 कर्मचारियों से साक्षात्कार 13-9-98
2 प्राचार्या से साक्षात्कार 13-11-98
3 बड़े बाबू से साक्षात्कार 13-11-98
4 कालेज मेगजीन पृ0 9

गौरीपाठशाला इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

यह विद्यालय विद्या के सागर महामना पं0 मदन मोहन मालवीय, राजर्षि पुरूषोत्तदास टण्डन तथा प0 बालकृष्ण भट्ट के अनवरत संघर्षो के पश्चात् 1904 ई0 मे स्थापित हुआ।[1]

प्रारम्भ में यह विद्यालय प्रथम कक्षा से पंचम् तक चलता था। सन् 1947 में इसे हाईस्कूल की तथा 1951 में इण्टरमीडिएट की मान्यता मिली।

यहाँ हाईस्कूल में कलावर्ग, विज्ञानवर्ग की शिक्षा दी जाती है, किन्तु इण्टरमीडिएट में केवल कला वर्ग की शिक्षा दी जाती है।[2]

यहाँ एक वृहद पुस्तकालय की व्यवस्था है। सब्जीमडी में स्थित यह विद्यालय समाज को शिक्षित करने में अपनी सराहनीय भूमिका निभा रहा है।

यहाँ प्रारम्भ में छात्राओ की सख्या बहुत थोडी थी किन्तु आज इसमें 1800 छात्राएँ हैं तथा 1997 में इनका परीक्षा फल हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट में क्रमश. 95 तथा 90 रहा है।

रमादेवी बालिका इण्टर कालेज,

इलाहाबाद

रमादेवी बालिका इण्टर कालेज, इलाहाबाद के दक्षिण में यमुना के तट पर स्थापित है तथा शहर की बालिकाओं को शिक्षित करने में अवर्णनीय भूमिका निभा रहा है।

इसकी स्थापना 1945 ई0 में श्रीमती रमा देवी टण्डन ने की इसको। 1950-51 में जू0 हा0 की मान्यता मिली तथा 1960-61 में हाईस्कूल व 1968-69 में इण्टरमीडिएट की भी मान्यता मिल गयी। यहाँ कला वर्ग व विज्ञान

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 13-1-98

2 अध्यापिकाओं से साक्षात्कार 14-2-98

वर्ग सहित प्रथम से 12वीं कक्षा तक पढाया जाता है। यहाँ गृहविज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीवविज्ञान आदि विषय पढाये जाते हैं। विज्ञानवर्ग की छात्राओं के लिए प्रयोगशाला की व्यवस्था है। यहाँ कुल मिलाकार 2600 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। पुस्तकालय समेत वाचनालय तथा खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। वर्ष 1997 में हाईस्कूल में छात्राओं का परीक्षाफल 90 तथा इण्टरमीडिएट का 95% है।[1]

इस विद्यालय की प्रथम प्राचार्या श्रीमती सरला दरबारी तथा वर्तमान प्राचार्या कु0 मनोकामना भटनागर जी है। विद्यालय में सुन्दर अनुशासन देखने को मिलता है, जिसके कारण विद्यालय का एक अलग महत्व समाज में बना हुआ है।[2]

विद्यावती दरबारी गर्ल्स इण्टर कालेज

लूकर गंज

इलाहाबाद

विद्यावती दरबारी बालिका विद्यालय शहर के पुराने बालिका विद्यालयों में से एक हैं। इसकी स्थापना 26 जनवरी 1963 ई0 को कुछ शिक्षा के0 प्रेमी महानुभावों जिनमें श्री ए0 एस0 दरबारी, श्री रूद्रदरबारी श्री आर0 के0 बातल के द्वारा हुयी थी। यहॉ प्रथम से लेकर इण्टरमीडिएट तक शिक्षा दी जाती है। प्रारम्भ में बहुत थोडी छात्राएँ थीं, किन्तु आज 1500 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

इस विद्यालय को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की मान्यता क्रमश 1967, 1974 में मिली। यहॉ हाईस्कूल में कला व विज्ञान दोनां वर्गो में शिक्षित किया जाता है तथा इण्टरमीडिएट में केवल कला वर्ग में शिक्षा दी जाती है।[3] यहॉ छात्राओं को प्रयोगशालाा, पुस्तकालय साइकिल स्टैण्ड के अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। वर्तमान प्राचार्या डा0 (कु0) आशा सक्सेना जी हैं।[4]

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 11-12-98
2 अध्यापिकाओं से साक्षात्कार 11-2-98
3 कालेज मैगजीन पृ0 3
4 प्राचार्या से साक्षात्कार 12-5-98

क्रास्थवेट गर्ल्स इण्टर कालेज

बाई का बाग,

इलाहाबाद

क्रास्थवेट गर्ल्स इण्टर कालेज का एक रोचक इतिहास है। 23 फरवरी 1894 को लखनऊ मे सयुक्तप्रांत के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर चार्ल्स क्रास्थवेट महोदय की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया, जिसे इस प्रांत में कन्याओं की शिक्षा के लिए लखनऊ मे एक विद्यालय की स्थापना पर विचार करना था। प्रांत के बडे हो जाने माने हिन्दुओ और मुश्लिम सज्जन इस समिति के सदस्य बनाये गये।[1] फरवरी 1895 मे लखनऊ नगर मे क्रास्थवेट बालिका विद्यालय के नाम से एक विद्यालय की स्थापना हुयी जिसमे कन्याओ की पंजीकृत संख्या केवल 12 थी। चार्ल्स क्रास्थवेट महोदय ने विद्यालय की स्थापना में बडी रूचि थी और अपना कार्यकाल समाप्त करने के पश्चात् भी उनकी रूचि इस विद्यालय के संचालन में बनी रही।[2] लखनऊ मे इस विद्यालय का सही विकास नहीं हो सका वहाँ पर पर्दा प्रथा बडी विकट थी और लोगो के विचार कुछ पुरातनपंथी व संकीर्ण थे। बालिकाओ की शिक्षा का वहाँ अधिक स्वागत नहीं हुआ। कन्याये पर्दानसीन होकर आती थीं और न छात्राएँ विद्यालय में पढ़ना चाहती थीं और न उन्हे पढ़ाने के लिए शिक्षिकाएँ उपलब्ध होती थी। जब कि व्यवस्थापक मण्डल इस विद्यालय के माध्यम से समाज और देश की समुचित सेवा करता था।[3]

8 जुलाई 1898 को संचालक मंडल ने विद्यालय को लखनऊ से इलाहाबाद स्थानान्तरित करने का निर्णय ले लिया। फलस्वरूप 2 अक्टूबर 1898 को विद्यालय इलाहाबाद नगर मे महाजनी टोला नामक मुहल्ले में एक किराये के भवन में चलने लगा। छात्राओं की संख्या केवल 25 थी। धीरे-धीरे विद्यालय में छात्राओं की संख्या बढ़ी और इसके विकास में लोग रूचि लेने लगे।[4]

---

1 क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज परिचायिका पृ0 2
2 वही पृ0 3
3 वही पृ0 5
4 वही पृ0 12

सन् 1906 में करीब 10 एकड भूमि लोक-निर्माण विभाग के सहमति से प्राप्त की गयी। सन् 1908 मे लोनिपा वाला बगले मे विद्यालय में अपना कार्य प्रारम्भ किया और बालिकाओ के लिए एक छात्रावास भी बनाया गया। 1920-21 में प्राचार्य-आवास, दफ्तर और आगन्तुक कक्ष का निर्माण हुआ। सन् 1918 मे इस विद्यालय का छात्राओ की मैट्रिक परीक्षा मे बैठने की अनुमति प्राप्त हुयी। इसके उपरान्त 1920 मे विद्यालय मे इण्टर कक्षओ का प्रारम्भ हुआ और छात्रावास के निर्माण की आवश्यकता महसूस हुयी।[1] उन दिनों इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बी0 ए0 और एम0 ए0 की कक्षाएँ इस विद्यालय भवन मे लगती थीं यहाँ तक कि विश्व विद्यालय की छात्राएँ इसी विद्यालय के छात्रावास मे भी रहा करती थीं। 1922 मे जब विश्वविद्यालय का पुनर्गठन हुआ तब यह व्यवस्था बन्द कर दी गयी इस विद्यालय का पं0 मोतीलाल नेहरू, श्री तेज बहादुर सप्रू, पुरूषोत्तम दास टण्डन के परिवार से लम्बा संबन्ध बना रहा है।[2]

विद्यालय एन0 सी0 सी0, खेलकूद, गर्ल्स गाइड, वाद-विवाद, सास्कृतिक गति विधियाँ इत्यादि को विशेष प्रोत्साहन देता रहा। नगर में स्त्रीशिक्षा का यह प्रमुख केन्द्र रहा है। 100 वर्ष से अधिक समय से शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान कर रहा है।

विद्यालय मे पुस्तकालय प्रयोगशाला के अतिरिक्त वाचनालय भी विद्यमान है, जिसमे, अनेक पत्र पत्रिकाएँ मगायी जाती हैं। विद्यालय में 1 से 12 तक विज्ञान, कला, वर्ग में शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार एक लंबे अर्से से विद्यालय शहर की कन्याओं के शिक्षण कार्य में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।[3]

इस विद्यालय की कुछ पुरानी अति महत्वपूर्ण छात्राओं के नाम अंकित हैं, जिन्होंने शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् विद्यालय के नाम को उपर उठाया तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे ख्याति अर्जित की। इनमे प्रमुख निम्न लिखित है।[4]

---

1 क्रास्थवेट गर्ल्स कालेज परिचायिका पृ0 12
2 वही पृ0 14
3 वही पृ0 20
4 वही पृ0 23

1- मिस चन्द्रावती त्रिपाठी।

2- मिस शान्ति लता दवाय

3- मिस राजदुलारी सपरू

4- मिस सीमा मिश्रा

5- मिस श्याम कुमारी नेहरू

6- मिस एस0 डी0 अग्रवाल

7- मिस एल0 भट्टाचार्य

इस प्रकार क्रास्थवेट गर्ल्स इण्टरमीडिएट कालेज नारी शिक्षा में हिन्दीमाध्यम से अपना अमिट योगदान प्रदान कर रहा है।[1]

के0 पी0 बालिका इण्टर कालेज, इलाहाबाद

के0 पी0 ट्रस्ट द्वारा संचालित विद्यालयों में लबे समय तक छात्राओं की शिक्षा के लिए कोई विद्यालय नही था। डा0 प्यारे लाल श्रीवास्तव के0 पी0 ट्रस्ट के 1960 के दशक में अध्यक्ष थे। और बालिकाओं का विद्यालय खोलने में उनकी बडी रूचि थी। डा0 प्यारे लाल एवं श्री मोहन श्रीवास्तव ने मिलकर बालिकाओं के विद्यालय के शुभारम्भ की योजना बनाई और 21 अगस्त 1964 को के0 पी0 नर्सरी स्कूल का शुभारम्भ हुआ और यही बालिकाओं के विद्यालय की आधार शिला बना, धीरे-धीरे विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या बढने लगी 1966 में श्री बी0 एल0 गौंड को बालिका विद्यालय का निदेशक बनाया गया।[2] 1967 में विद्यालय को हाईस्कूल बना दिया गया। 1973 में इण्टर की मान्यता भी माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा प्राप्त हुयी। इस प्रकार स्थापना वर्ष के नौ वर्ष के अन्दर में विद्यालय इण्टर कालेज बन गया। इस विद्यालय का निरंतर विकास हो रहा है और पढाये जाने वाले विषयों की वृद्धि हो रही है।[3]

इस प्रकार विद्यालय में प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय इत्यादि सभी आवश्यक चीजें छात्राओं को उपलब्ध हैं।[4]

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 12-7-98
2 के0 पी0 ट्रस्ट मैगजीन पृ0 47
3 वही पृ0 48
4 वही पृ0 49

अध्याय- 5

उच्च शिक्षा

इलाहाबाद विश्व विद्यालय

इलाहाबाद

सन् 1857 में जब भारत के कई क्षेत्रों में ब्रिटिश प्रशासन के विरूद्ध विद्रोह की ज्वाला प्रज्वलित हुयी लगभग उसी समय कलकत्ता, बम्बई, मद्रास। इन 3 स्थानों पर विश्व विद्यालयो की स्थापना भी हुयी। करीब 30 वर्ष पूर्व इग्लैण्ड में एक विश्वविद्यालय लंदन में स्थापित हुआ, जिससे देश के विभिन्न महाविद्यालय सम्बद्ध थे। यह विश्वविद्यालय आक्सफर्ड और कैम्ब्रिज के समान आवासीय नहीं था।[1] शिक्षण कार्य महाविद्यालयों में होता था। विश्वविद्यालय सभी विद्यार्थियों की परीक्षा आयोजित करता था एवं पाठ्यक्रम निर्धारित करता था। भारत में भी ब्रिटिश शासकों ने लंदन विश्व विद्यालय के समान ही तीनों विश्वविद्यालय स्थापित किये। कलकत्ता विश्वविद्यालय पूर्व बम्बई, पश्चिम और मद्रास दक्षिण भारत में, उच्च शिक्षा की व्यवसथा में लग गये। केवल उत्तर-भारतीय क्षेत्र ऐसा बचा कि जहाँ के महाविद्यालय सामान्य तौर पर कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गये। करीब दो दशकों में सरकार को यह लगा कि कलकत्ता विश्वविद्यालय का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत है और इससे सम्बद्ध महाविद्यालयों की सख्या बहुत अधिक है। यह विचारणीय प्रश्न हो गया कि क्या उत्तर भारत में भी एक विश्व विद्यालय स्थापित किया जाए। इस प्रश्न का समाधान लार्ड रिपन के कार्य काल में हुआ। और 1882 में एक विश्वविद्यालय लाहौर में स्थापित कर दिया गया। इस प्रकार पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण भारत के चारो क्षेत्रों में विश्वविद्यालय हो गया। लाहौर विश्वविद्यालय के बन जाने पर भी उत्तर भारत में उच्च शिक्षा की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित नहीं हो सकी। महाविद्यालयों की संख्या बढ रही थी। इलाहाबाद नगर में जो पश्चिमोत्तर प्रांत की राजधानी था। सन् 1872 में, "म्योर सेण्ट्रल कालेज" की स्थापना हो चुकी थी और यह महसूस किया गया कि उत्तर भारत में एक और विश्वविद्यालय की आवश्यकता थी। इस स्थिति में 22 सितम्बर 1887 को वायसराय की कौंसिल में किण्टन (Quinton) महोदय ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय बिल शिमला में प्रस्तुत किया। 22 सितम्बर का दिन पश्चिमोत्तर प्रान्त और अवध के इतिहास में एक गौरव का दिन माना जाता है।[2] पश्चिमोत्तर प्रान्त का लेफ्टिनेण्ट, गवर्नर इस समय सर एल्फ्रेड लायल था। 8 अप्रैल 1886 को भारत के

---

1 हण्ड्रेड इयर आफ एलाहाबाद यूनिवर्सीटी पृ0 12

2 वही पृ0 16

वायसराय लार्ड डफरिन ने म्योर कालेज के नये भवन का उद्घाटन किया। और उस समय इस बात की ओर सकेत किया कि इलाहाबाद नगर में एक विश्व विद्यालय की आवश्यकता थी। सन् 1886-87 में विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध में इस बिन्दु पर अधिक बल दिया गया कि इलाहाबाद प्रान्त की राजधानी थी।[1]

गवर्नर जनरल की परिषद ने 1887 के 18 वें विधेयक के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना की स्वीकृति प्रदान कर दी। इस समय गवर्नर जनरल के पद पर लार्ड डफरिन आसीन थे। इस विश्व विद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सर जान एज की नियुक्ति हुयी। 1886-87 में पश्चिमोत्तर प्रांत में कुल 12 महाविद्यालय आते थे। विद्यार्थियों की कुल सख्या 478 थी। कालान्तर में विद्यार्थियों की संख्या बढती गयी और 1891-92 में बढ्कर 1311 हो गयी। इस विश्वविद्यालय में विज्ञान के पाठ्यक्रम के छात्रों की संख्या कम होती थी, जबकि कलकत्ता विश्व विद्यालय में विज्ञान के विद्यार्थियों की संख्या ज्यादा होती थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय का पहला दीक्षान्त समारोह 15 नवम्बर 1887 को हुआ। इस समय कुलपति सर एल्फ्रेड लायल थे, जो पश्चिमोत्तर प्रांत के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर भी थे।

इलाहाबाद विश्व विद्यालय में विभिन्न संकायों में अगले 10-12 वर्षो में उत्तरोत्तर विकास होता गया। इस युग में अधिकतर प्राध्यापक अंग्रेज होते थे। किन्तु धीरे-2 भारतीय प्राध्यापक भी नियुक्त होने लगे। भारतीय प्राध्यापकों में अधिक संख्या बंगाली विद्धानों की होती थी। पश्चिमोत्तर प्रान्त में धीरे-2 महाविद्यालयों भी संख्या बढने लगी। वैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अन्तर्गत इस प्रांत के अतिरिक्त मध्यभारत एव राजपूताना के क्षेत्र भी आते थे। जबलपुर का राबर्टसन कालेज आगरा का आगरा कालेज और सेण्ट जान्स कालेज, लखनऊ का कैंनिग कालेज, इलाहाबाद का म्योर कालेज इत्यादि इस विश्वविद्यालय के काफी पुराने महाविद्यालय थे, जिनकी पठन-पाठन में अपनी परम्परायें बन चुकी थीं। 19वीं शताब्दी में महाविद्यालयों में छात्रों की सख्या कम होती थी। छात्राओं की संख्या बहुत ही कम रहती थी। स्नातक स्तर पर

---

1 हण्ड्रेड इयर आफ एलाहाबाद यूनिवर्सीटी पृ0 13

बिल्कुल घट जाती थी। उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों को कहीं न कहीं नौकरी तो अवश्य मिल जाती थी। किन्तु वे और ऊँची नौकरी की प्रत्याशा में रहते थे। और इससे असन्तोष उत्पन्न होता था।

19वीं शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश में एक अत्यन्त निराशा और असन्तोष का कारण यह था कि आई0 ए0 एस0 की परीक्षा केवल इग्लैण्ड में होती थी और इस परीक्षा को भारत में भी आयोजित किया जाए। इसके लिए बराबर आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जनता में जागृति उत्पन्न करने के लिए और आन्दोलन को सशक्त बनाने के लिए सम्पूर्ण भारत के महत्वपूर्ण नगरों का भ्रमण किया। इसी सिलसिले में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी का आगमन प्रयाग में भी हुआ और यहाँ बुद्धिजीवियों की एक सभा का आयोजन किया गया और बनर्जी महोदय ने उस सभा को बडे ही सशक्त शब्दों में सम्बोधित किया। 19वीं शताब्दी जब समाप्त हो रही थी। उस समय भारत के वायसराय के रूप में लार्ड कर्जन की नियुक्ति हुयी। कर्जन 1899 से 1905 तक इस पदपर रहे। उन्होंने उच्च शिक्षा में सुधार हेतु रैले कमीशन नियुक्त किया और 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया इस अधिनियम के अन्तर्गत विश्वविद्यालयों की सीनेट और सिण्डीकेट पर सरकारी नियंत्रण बढा दिया गया। बहुत से विद्वानों ने सन् 1904 के इस कानून की कडी आलोचना की। सन् 1904 तक देश में केवल 5 विश्वविद्यालय थे, जिनमें अतिम इलाहाबाद विश्वविद्यालय था। इसके पश्चात् अगले 20 वर्ष में कई नये विश्वविद्यालय खुले।

1902 के दीक्षान्त समारोह में कुलाधिपति ने यह आशा व्यक्त की थी कि तकनीकी शिक्षा एव व्यावसायिक शिक्षा को समुचित प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसी संदर्भ में कुछ कार्य संयुक्त प्रांत में हुआ था, जैसे रुढकी का इन्जीनियरिंग कालेज, आगरे का मेडिकल कालेज और लखनऊ में भी एक मेडिकल कालेज की स्थापना का निर्णय ले लिया गया था। इसी प्रकार इलाहाबाद में व्यावसायिक शिक्षा का एक विद्यालय प्रारम्भ हो गया था और 1 जुलाई 1907 से विश्वविद्यालय में एक अलग से कानून की शिक्षा का केन्द्र खोला जा रहा था। सन् 1904 से कामर्स के कोर्स

पढाये जाने लगे थे। 1904 के एक्ट में देश के पाँचों विश्वविद्यालयों का क्षेत्र निश्चित कर दिया गया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अन्तर्गत निम्न क्षेत्र रखे गये थे।

1 सयुक्त प्रांत
2 मध्य भारत
3 मध्य भारत की रियासतें
4 बरार,
5 अजमेर मेरवाड
6 सेंट्रल इण्डिया एजेन्सी
7 राजपूताना एजेन्सी

विश्वविद्यालय का क्षेत्र भारतीय रियासतें भी शामिल थीं। विश्वविद्यालय का क्षेत्र साढे चार लाख वर्ग मील में फैला था और इस क्षेत्र की 81 लाख जनता विश्वविद्यालय के पठन-पाठन से आच्छादित थी। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक कठिनाई भी थी, जिसके कारण महा विद्यालय सम्बद्धता के लिए अलग-अलग विश्वविद्यालयों के समक्ष प्रतिवेदन कर सकते थे। कभी-कभी एक ही विद्यालय दो-दो विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध हो जाता था। जैसे आगरा और अलीगढ़ के कालेज, इलाहाबाद और कलकत्ता दोनों विश्व विश्व विद्यालयों से मान्यता प्राप्त थे।

प्रथम महायुद्ध से ठीक पहले इलाहाबाद में म्योर सेंट्रल कालेज सबसे प्रमुख इलाहाबाद में म्योर सेंट्रल कालेज सबसे प्रमुख था, किन्तु प्राध्पायकों के उच्च पद इस समय भी कम ही थे, सन् 1914 में आचार्य का एक पद अर्थशास्त्र व एक इतिहास मे दिया गया। अगले वर्ष अर्थात् 1915 में आचार्य का एक पद वेद (संस्कृत) के लिए निर्धारित हुआ। 1915 से 1921 तक रसब्रुक विलियम्स इतिहास के आचार्य के रूप में रहे और इतिहास विभाग का विकास विलियम्स महोदय के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ। 1917 तक विश्व विद्यालय में पाँच संकाय थे।

1 कला
2 विज्ञान
3 कानून
4 वाणिज्य
5. चिकित्सा

इस समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महा विद्यालयों की संख्या 33 पहुॅच चुकी थी। और जो विद्यार्थी विश्वविद्यालय क्षेत्र से आच्छादित थे उनकी संख्या 7807 थी। यह विश्व विद्यालय लन्दन विश्व विद्यालय के समान 1920 तक बना रहा इसका अर्थ यह है कि विश्वविद्यालय अपने संम्पूर्ण क्षेत्र के महाविद्यालयों को मान्यता प्रदान करता था। और उन्हे सम्बद्धता दिया करता था। इन सभी महाविद्यालयो की परीक्षा लेने का दायित्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय का था। अंग्रेजी में इस प्रकार के विश्वविद्यालय को एफीलिएटिंग एवं एक्जामिनिग बाडी कहा जाता था।

भारत के प्रथम पॉच विश्वविद्यालय इसी श्रेणी में आते थे। उन्नीसवी शताब्दी में भारतीय़ विश्वविद्यालयों की स्थापना के लिए लन्दन विश्वविद्यालय को माडल के रूप में स्वीकार किया गया था। जबकि इग्लैण्ड के पुराने विश्वविद्यालय अर्थात आक्सफर्ड और कैम्ब्रिज दोनों आवासीय विश्वविद्यालय थे और लन्दन विश्वविद्यालय से इनमें मूलभूत अन्तर थे। जब सैडलर आयोग ने अपनी सिफारिशों प्रस्तुत की तो उनका देशव्यापी प्रभाव पडा। सैडलर आयोग ने केवल कलकत्ता विश्व विद्यालय का ही पुर्नगठन नहीं किया बल्कि कालान्तर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय समेत अन्य विश्वविद्यालयों में भी नाना प्रकार के परिवर्तन किये गये।

सन् 1921 में एक कानून पारित हुआ, जिसमें उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भारी फेर बदल किया। इस कानून के पारित होने के पूर्व ही सन् 1920 में लखनऊ में एक विश्वविद्यालय की स्थापना कर दी गयी थी और स्वाभाविक था कि लखनऊ विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के क्षेत्र से ही निकला और सम्पूर्ण क्षेत्र दो हिस्सों में बट गया। लखनऊ नगर और विश्वविद्यालय के विकास में सरहरकोल्ट बटलर का विशेष योगदान है। उन्हीं के प्रयासों से लखनऊ विश्वविद्यालय बना और बटलर महोदय के कारण ही सयुक्त प्रांत की राजधानी इलाहाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित हुयी।

लखनऊ विश्वविद्यालय की वित्तीय स्थिति को सुदृढ बनाने के लिए ताल्लुके दारों ने 13 लाख रूपये से अधिक धनराधि एकत्र की इससे पूर्व एक विश्वविद्यालय 1916 में बनारस में खुल चुका था। और लखनऊ और बनारस के विश्वविद्यालयों में

इलाहाबाद का बहुत सा क्षेत्र ले लिया। इन दोनों विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की सख्या बढी और इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे घट गयी। म्योर सेंट्रल कालेज में 1921 से 22 मे 567 विद्यार्थी रह गये, जिलमें परास्नातक विद्यार्थी केवल 78 ही थे। इन सब के बावजूद एक विचार इस दौरान स्पष्ट रूप से उभरा यह था अंग्रेजी भाषा का अध्ययन और विकास यह स्पष्ट हो गया कि उच्च शिक्षा अग्रेजी भाषा एवं माध्यम के सहारे ही प्रगति कर सकती है और यह प्रयास न किया जाय कि उच्च शिक्षा में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग हो यही अनुभव पजाब विश्वविद्यालय में भी हुआ।

यह कहा जाता है कि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् अंग्रेजी विषय और भाषा के विकास में प्रो0 डन और रेडफोर्ड का विशिष्ट योगदान रहा। प्रो0 डन ने सन् 1917 में पं0 अमरनाथ झा को अग्रेजी का प्राध्यापक नियुक्त किया अगले 30 वर्ष तक प0 अमरनाथ झा ने विभिन्न पदो पर रहते हुए इस विश्वविद्यालय को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिलाने में अपना योगदान किया। 1938 से 1947 तक वे विश्वविद्यालय के कुलपति रहे और जब से इस विश्वविद्यालय का पुनर्गठन 1921 में हुआ था तभी से यह विश्वविद्यालय देश का अंग्रेजी विश्वविद्यालय बन गया। रसब्रुक विलियम्स पं0 अमरनाथ झा, रानाडे, प0 गंगा नाथ झा, मेघनाद साहा, नीलरत्नधर, इत्यादि विशिष्ट प्राध्यापकों वैज्ञानिकों एव कुलपतियों नें अपना-अपना अंशदान विश्वविद्यालय के विकास में दिया।[1]

सन् 1921 मं इलाहाबाद विश्वविद्यालय विधेयक पारित हुआ।, जिसने इस विश्वविद्यालय में बुनियादी संगठनात्मक परिवर्तन किये अब इलाहाबाद विश्वविद्यालय एक आवासीय शिक्षण सस्था के रूप में विकसित होने लगी। इसको आन्तरिक खण्ड कहा गया। साथ ही विश्वविद्यालय का एक वाह्य खण्ड भी बना, जिसमें इलाहाबाद के अतिरिक्त अन्य नगरों के महाविद्यालय सम्मिलित थे। 1922 से कला संकाय का कार्य प्रारम्भ हो गया, जिसमें कामर्स भी सम्मिलित था। चिकित्सा संकाय समाप्त हो गया क्योंकि मेडिकल कालेज लखनऊ में था और वहाँ पर 1920 में ही विश्वविद्यालय बन चुका था।[2] इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुनगर्ठन से पूर्व म्योर

---

1 हण्ड्रेड इयर आफ एलाहाबाद यूनिवर्सीटी पृ0 42
2 वही पृ0 77

कालेज, आगरा कालेज और लखनऊ का ट्रेनिग कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ महाविद्यालय माने जाते थे।

सन् 1921 के बाद चूँकि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के क्षेत्र से अनेक महाविद्यालय कम हो गये और इण्टरमीडिएट बोर्ड बनने से इण्टर कालेज भी उसके हाथ से निकाल गये। इस विश्वविद्यालय की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर हो गयी और इसकी आय बहुत घट गयी। 1921 में ही हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट बोर्ड का गठन हुआ था। अब अलीगढ आगरा और बाद में नागपुर में विश्वविद्यालय बनने से इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों की सख्या और भी घट गयी। सन् 1922 में सयुक्त प्रात में चार विश्वविद्यालय हो गये थे।

1 इलाहाबाद
2 बनारस
3 लखनऊ
4 अलीगढ

इन सब घटनाओं के बावजूद इलाहाबाद विश्वविद्यालय का आवासीय खण्ड 1922 से उत्तरोत्तर विकसित होता गया और कला एव विज्ञान संकाय में बहुत से विद्वान प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1916 में सरसुन्दर लाल एवं प्रमदा चन्द्र बनर्जी छात्रावासों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। लगभग इसके एक दशक पश्चात् सर गंगानाथ झा छात्रावास का निर्माण हुआ और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दूर-दूर के क्षेत्रों से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते रहे।[1]

बिहार आसाम, उडीसा, मध्यभारत, राजपूताना, पंजाब एवं कश्मीर से मेधावी छात्र सन् 20, 30 और 40 के दशकों में अध्ययन हेतु इलाहाबाद आते थे और विश्वविद्यालय के छात्रावासों में अध्ययन का अतिउत्तम वातावरण था। प्रान्तीय सेवा एवं अखिल भारतीय सेवा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र उच्च स्थान प्राप्त करते थे। उत्तर प्रदेश का कोई भी विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में इलाहाबाद से स्पर्धा करने में सक्षम न था। कला, विज्ञान और जनजीवन के विभिन्न पहलुओं में इस विश्वविद्यालय के छात्र सम्पूर्ण भारत मे और विदेश में ख्याति प्राप्त करते रहे। सन् 1938 में पं0

---

1 हण्ड्रेड इयर आफ एलाहाबाद यूनिवर्सीटी पृ0 87

अमरनाथ झा विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। उनकी अवस्था केवल 41 वर्ष थी, किन्तु बहुत कम समय में ही उन्होंने विश्वविद्यालय के कई महत्वपूर्ण पद सुशोभित किये थे और कुलपति बनने के पश्चात् अखिल भारतीय स्तर के कई पदों पर नियुक्त हुए, उनका पूरा जीवन इस विश्व विद्यालय के विकास मे समर्पित रहा। कुलपति नियुक्त होने के पश्चात् भी वे म्योर छात्रावास के सरक्षक बने रहे। उनके नौ वर्ष के कुशल निर्देशन मे विश्वविद्यालय में अध्ययन, शोध, कला, क्रीडा इत्यादि सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व विकास हुआ। द्वितीय महायुद्ध 1939 में प्रारम्भ हो गया किन्तु विश्वविद्यालय के विकास पर उसका कोयी प्रभाव न पडा और पं० अमरनाथ झा के कुलपति की अवधि में यह विश्वविद्यालय देश का सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय माना जाता था। 1947 में उनका कार्यकाल समाप्त हुआ। इसी वर्ष देश भी स्वतंत्र हुआ और शिक्षा नीति में परिवर्तन हुआ। संयुक्त प्रांत में विश्वविद्यालयों की संख्या बढने लगी। 1948 में इलाहाबाद में बी0 ए0 आनर्स कक्षाएँ समाप्त कर दी गयीं और स्वतत्रभारत की परिवर्तित शिक्षा नीति के अन्तर्गत नवीन विचार धारा का सूत्रपात हुआ।

मोती लाल नेहरू इन्स्टीट्यूट आफ रिसर्च एण्ड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन

जैसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता था। वैसे ही इस विश्वविद्यालय के कामर्श विभाग में एम0 बी0 ए0 डिग्री का प्रारम्भ ऐसे समय में किया गया जब बहुत कम विश्वविद्यालय यह सुविधा प्रदान करने की स्थिति में थे। एम0 बी0 ए0 डिग्री स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में आती है और इसका प्रारम्भ इस विश्वविद्यालय में सन् 1965 में प्रो0 अमर नारायण अग्रवाल की देखरेख में हुआ, उन्होंने मोनीर्बा का शुभारम्भ इस वर्ष किया और पिछले तीन दशकों में इस सस्थान ने अपना विशिष्ट स्थान संम्पूर्ण देश में बना लिया है। इस सस्थान के द्वारा वर्तमान समय में कई पाठ्य क्रम चलाये जाते है, जो अल्पअवधि और दीर्घ कालीन दोनों प्रकार के हैं और इस संस्थान में शोधकार्य काफी उच्च स्तरीय होता रहा है। देश के लगभग एक दर्जन

विभाग इस सस्थान की सहायता से विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं, जिनमें प्रबधकों को अत्याधुनिक प्रशिक्षण दिया जाता है। विगत कुछ वर्षो से इस सस्थान मे सामान्य अभ्यर्थियो के अतिरिक्त एन0 आर0 आई0 कोटे के विद्यार्थी भी लिए जाते है।[1] इस संस्था के छात्र देश विदेश में सम्मानित पदों पर कार्य रत हैं।[2]

मनोविज्ञान विभाग

इस विभाग की स्थापना सन् 1961 में हुयी जब इस नगर में एक इन्जीनियरिंग और एक मेडिकल कालेज खुला इस वर्ष प्रो0 दुर्गानन्द सिन्हा की नियुक्ति मनोविज्ञान के आचार्य के रूप में हुयी। और कुछ माह तक इस विभाग के एक मात्र शिक्षक थे। शीघ्र ही मनोविज्ञान विभाग का विस्तार होने लगा और अध्यापकों की संख्या बढने लगी और 1966 से 1976 के बीच में कई अध्यापक नियुक्त हुए, जो कि इस समय सभी आचार्य के पद पर आसीन हैं। 1967 में विभाग की नई इमारत बनी। सन् 1977 में मनोविज्ञान विभाग को यू0 जी0 सी0 ने डी0 एस0 ए0 डिपार्टमेण्ट आफ स्पेशल एसिस्टेन्स के रूप में मान्यता प्रदान की। इसके पश्चात् यू0 जी0 सी0 के अनुदान से शिक्षा और शोधकार्य में उत्तरोत्तर विकास होता गया।[3]

इस विभाग में बडी संख्या में शोध छात्रों को डी0 फिल0 उपाधि प्राप्त हुयी है। दो दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। दो दर्जन से अधिक रिसर्च प्रोजेक्ट तैयार हुए। बडी सख्या में राष्ट्रीय गोष्ठियों का आयोजन हुआ और विभाग के छात्रों एव अध्यापकों के सैकडों शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इस समय यह विभाग ऐक्ट आफ एडवान्स स्टडी के रूप में यू0 जी0 सी0 से मान्यता प्राप्त है।[4]

जे0 के0 इन्स्टीट्यूट आफ अप्लाइड फीजिक्स एण्ड टेक्नालाजी

1 एम0 बी0 ए0 नियमावली पृ0 6
2 वही-पृ0 7
3 विभागीय पत्रिका पृ0 3
4 वही-पृ0 6

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् तकनीकी शिक्षा के विकास हेतु इलाहाबाद विश्व विद्यालय ने एक सस्थान की स्थापना का निर्णय लिया। इस संस्था की इमारत बनाने के लिए कानपुर के उद्योगपति सर पद्मपति सिंहानिया ने 5 लाख रूपये की धनराशि उपलब्ध करायी और केन्द्र सरकार ने मशीनों एव अन्य उपकरण क्रय हेतु समुचित अनुदान दिया। इस सस्थान के भवन का शिलान्यास 14 जनवरी सन् 1949 को भार त के प्रथम प्रधानमत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी ने किया था। कालान्तर में 4 अप्रैल 1956 को श्री नेहरू ने ही जे0 के0 इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन किया।[1]

सितम्बर 1955 में एक परास्नातक कोर्स प्रारम्भ किया गया जो एम0 एस0 सी0 टेक कहा जाता था और 12 विद्यार्थी इस प्रथम बैच में लिए गये। 1961 में छात्रों की संख्या 12 से बढकर 20 हो गयी। इस परास्नातक डिग्री में केवल वही विद्यार्थी प्रवेश पा सकता था, जो गणित और भौतिक विज्ञान से बी0 एस0 सी0 की उपाधि पा चुका है।[2]

इस कोर्स के विद्यार्थियों को दूसरे और तीसरे वर्ष के अन्त में किसी अच्छी संस्था में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करना पडता था। इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र मं जे0 के0 इन्स्टीट्यूट की एम0 एस0 सी0 टेक उपाधि को अखिल भारतीय स्तर पर मान्यता प्रदान की गयी थी। सन् 1967 से एम0 एस0 सी0 टेक के स्थान पर इस संस्थान ने बी0 टेक और एम0 टेक के कोर्स प्रारमभ किये। बी0 टेक में 30 तथा एम0 टेक में 10 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता रहा।

इस संस्थान के विद्यार्थी देश-विदेश में महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं प्रारम्भिक वर्षो में डा0 एस0 एन0 घोष और प्रो0 कृष्णा जी ने इस संस्थान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जे0 के0 इन्स्टीट्यूट में दिसम्बरर 1986 में एक कम्प्यूर सेण्टर की स्थापना हुयी। यहॉ पर बडी सख्या में कम्प्यूटर हैं और अल्पअवधि कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था यहॉ पर की गयी है। यहाँ हार्डवेयर, साफ्टवेयर, दोनों प्रकार का प्रशिक्षण होता है।

---

1 वार्षिक रिपोर्ट पृ0 8
2 वही-पृ0 9

प्रशासनिक कम्प्यूटर सेण्टर

प्रशासनिक कम्प्यूटर सेण्टर विभाग की स्थापना बैंक रोड पर 25 जून 1985 को की गयी थी। प्रारम्भ से ही इस का विकास तीव्र गति से होता रहा। यहाँ प्रारम्भ में 6 स्टाफ थे तथा अब यहाॅ 12 स्टाफ है, जिनमें 4 (चार) आपरेटर व सिस्टम मैनेजर एक वरिष्ठ आचार्य तथा एक अन्य आचार्य 3 की पच आपरेटर है।[1]

यहाॅ पर विश्वविद्यालय के कार्य होते हैं जैसे परीक्षाफल, प्रवेशसूची तथा नामांकन सख्या का वितरण होता है। इस समय यहाॅ 8 कम्प्यूटर है। यहाॅ के डायरेक्टर वरिष्ठ आचार्य प्रो0 वी0 डी0 मिश्र जी हैं। इनके कुशल निदेशन में कम्प्यूटर सेण्टर का समुचित व क्रमिक विकास हो रहा है।

पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग

पत्रकारिता एव जन संचार विभाग इस विश्वविद्यालय के अत्याधुनिक प्रमुख विभागों में से एक है। विगत कई वर्षो से राजनीतिशास्त्र विभाग के अन्तर्गत इस विभाग को रखा गया था, किन्तु पत्रकारिता की आवश्यकता व महत्व को देखते हुए सन् 1987 में 1 जनवरी को पत्रकारिता एवं जनसचार विभाग की स्थापना की गयी। विभाग के दस वर्ष पूरे होने पर भी इसका समुचित विकास नहीं हुआ है। यहाॅ केवल 30 छात्र हैं दो स्टाफ है तथा यहाँ शिक्षा गेस्ट लेक्चरर के द्वारा होती है। इसकी संयोजक सुमिता परमार हैं, जों अंग्रेजी विभाग की उपाचार्य भी है।[2] सब कुछ होने के बावजूद आज समाज में पत्रकारिता का अत्यधिक महत्व है तथा यहाॅ के छात्र भारत की अनेक सेवाओं में रत हैं।

प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

प्राचीन इतिहास विभाग की स्थापना 1955 ई0 में विश्वविद्यालय परिसर में ही की गयी थी प्रारम्भ में यह विभाग इतना विकसित नहीं था, अध्यापक कम थे, बच्चों की संख्या भी कम थी तथा विभाग में सुविधाएँ भी कम थीं किन्तु इस समय, यहाँ 5 आचार्य 11 उपाचार्य तथा 13 व्याख्याता हैं। यहाॅ छात्रों की संख्या भी अत्यधिक है।[3]

1 वरिष्ठ आचार्य से साक्षात्कार-11-6-98
2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 12-7-98
3 वरिष्ठ आचार्य से साक्षात्कार 12-8-97

इस विभाग के प्रथम आचार्य प्रो0 जी0 आर0 शर्मा जी थे, जिन्होंने विभाग के विकास के लिए अनवरत संघर्ष किया, जिसका परिणाम है कि आज विभाग में सारी आवश्यक सुविधा उपलब्ध है। विभाग में एक वृहद पुस्तकायल है, जिसमें हजारों आवश्यक पुस्तके विद्यमान हैं। वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो0 विद्याधर मिश्रा हैं।

भूगर्भ विज्ञान विभाग

भूगर्भ विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक प्रमुख विभाग है। इसकी स्थापना 1985 ई0 में हुयी थी प्रारम्भ में यहाँ केवल 1 ही लेक्चरर थे किन्तु समय बीतता गया विभाग का विकास होता रहा और इस समय दो लेक्चरर एक प्रो0 हेड, एक लैबटेक्नीशियल, दो क्लर्क तथा दो चपरासी हैं।[1]

भूगर्भ विज्ञान विभाग में एम0 एस0 सी0 की शिक्षा व डिग्री दी जाती है, यहाँ कुल 10 सीट होने के कारण प्रवेश परीक्षा का प्रयोग किया जाता है। यहाँ प्रवेश लेने के लिए स्नातक स्तर पर गणित, भौतिक विज्ञान तथा भूगर्भ विज्ञान। इन तीन विषयों में से दो विषय होने आवश्यक है। यहाँ शिक्षा का कार्यक्रम दो वर्ष में चार समेस्टर के माध्यम से पूरा होता है। इस समय यहाँ प्रो0 आलोक कृष्ण गुप्ता जी विभागाध्यक्ष है, जिनके नेतृत्व में विभाग का विकास सुचारू रूप से हो रहा है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सम्माननीय पदों पर आसीन हैं।[2]

एथलेटिक्स एसोसियेसन

इलाहाबाद विश्व विद्यालय में एथलेटिक्स-एसोसियेसन की स्थापना खेल प्रशिक्षण के लिए किया गया था। इसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नियमित छात्र तथा विश्वविद्यालय की अन्य शाखाओं के छात्र भी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। यहाँ के खिलाडी राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष खिलाडी के रूप में सम्मानित हो चुके हैं। एथलेटिक्स एसोसियेसन आफ इण्डियन यूनियर्वसीटिज से सम्बद्ध हैं, सम्द्धता के लिए 30 हजार रूपये फीस दी जाती है।[3]

---

1 वरिष्ठ आचार्य से साक्षात्कार 12-8-97
2 विभागीय बाबू से साक्षात्कार 17-5-98
3 मुख्य प्रशिक्षक से साक्षात्कार 15-6-98

यहाँ प्रमुख खेल-क्रिकेट, हाकी, बैडमिण्टन, वास्कटेबाल, बाक्सिग, चेस, जूड़ों कबड्डी, खोखो, मलखम, पावर लिफ्टिग, टेनिश आदि 31 खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके निर्देशक डा0 आर0 के0 उपाध्याय जी है।[1]

मानव विज्ञान विभाग

मानव विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक प्रमुख विभाग है, जिसकी स्थापना 1985 ई0 मे हुयी। स्थापना के समय विभागाध्यक्ष डा0 ए0 आर0 एन0 श्रीवास्तव जी थे बाद में एक व्याख्याता श्री विजय सहाय की नियुक्ति हुयी। इस समय कुल दो प्राध्यापक हैं, तथा एम0 ए0 की डिग्री दी जाती है। यह विभाग अनेक प्रोजेक्ट तैयार कर चुका है यहाँ डी0 फिल्0 की उपाधि आठ विद्यालयों ने प्राप्त की है। यहाँ पुस्तकालय प्रयोगशाला की उत्तम व्यवस्था है। विभाग से 5 पाठ्य पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया है। प्रारमभ में यहाँ 10 सीट थी किन्तु आज 20 सीट हो गयी है। इस विभाग के विद्यार्थी 30 संघ व राज्य सेवायें 4 व्याख्याता तथा अनेक विद्यार्थी देश के सम्मानित पदों पर कार्य रत हैं।[2]

बायो कमेस्ट्री

बायो कमेस्ट्री विभाग की स्थापना 1968 ई0 में विज्ञान संकाय परिसर में की गयी। यहाँ बी0 एच0 एस0 सी0 तथा एम0 एस0 सी0 की उपाधि दी जाती है। यहाँ की प्रथम अध्यापिका डा0 इन्दिरामारिस हुयीं। इस समय एम0 एस0 सी0 में 15 छात्र व छात्राएँ है। यहाँ पढ़ाई गेस्ट लेक्चरर द्वारा भी करायी जाती है।[3] यहाँ, प्रयोगशाला व पुस्तकालय तथा आवश्यक सभी सुविधा उपलब्ध है।

गाँधी भवन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

इलाहाबाद

1 एक बाबू से साक्षात्कार 15-6-98
2 विभागाध्यक्ष से साक्षात्कार 17-4-97
3 वरिष्ठ आचार्य से साक्षात्कार 17-4-97

गाँधी विचार एव शाति अध्ययन सस्थान की स्थापना मदर टेरेसा के द्वारा गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर 2 अक्टूबर 1976 को हुयी थी। यहाँ पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शोध छात्र व बाहरी लोग भी गाँधी दर्शन, सामाजिक कल्याण तथा गाॅ ाी जी के विचारों पर कार्य करते हैं। वास्तव में यहाँ गाँधी जी के द्वारा तमाम विदेशी सामानो का त्याग तथा स्वदेशी अपनाओं जैसे अनेक गाँधी जी के दूर दर्शी विचारों का प्रचार किया जाता है।[1]

यहाॅ पर विश्वविद्यालय के तरफ से एक क्लर्क, एक स्वीपर, एक माली एक चपरासी है। इस सस्था के वर्तमान निर्देशक डा0 बनबारी लाल शर्मा जी हैं।

पत्राचार पाठ्यक्रम एवं सतत् शिक्षा संस्थान
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पत्राचार सस्थान को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सन् 1976 में स्वीकृति मिली थी, किन्तु उत्तर प्रदेश शासन की अनिश्चयात्मक नीति से परेशान होकर विश्वविद्यालय को सन् 1976 के बजाय 1978 से इसे प्रारम्भ करना पडा, डर यह था कि कहीं यह योजना शासन की उपेक्षा के कारण आयोग को लौटानी न पडे। दो वर्षो के उहापोह के बाद शासन की निष्क्रियता के बावजूद जुलाई 1978 में इसका श्री गणेश किया गया और आज 10 वर्ष से अधिक हो गये, शासन का शिक्षा विभाग इस संस्थान को सहायता के लिए टस से मस न हुयी।[2]

पत्राचार सस्थान की शुरूआत 279 छात्रों 10 अध्यापकों, 1 निदेशक, 3 कार्यालय सहायकों तथा एक सहायक कुल सचिव अर्थात 15 कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की एक लाख पाॅच हजार वित्तीय सहायता से शुरू की गयी थी। 20 वर्ष के अन्तर्गत सस्थान ने अपने वित्तीय संसाधनों के अन्तर्गत विकास

1 बड़े बाबू से साक्षात्कार 12-9-98
2 वार्षिक पत्रिका पृ0 13

कर लिया है। यहाँ बी0 ए0 तथा बी0 काम0 वालों को ही प्रवेश दिया जाता है तथा इसमें छात्राओं के पास होने अवसत विश्व विद्यालय के बालकों से अधिक हो रहा है।[1]

इविंग क्रिश्चियन कालेज

इलाहाबाद

सन् 1902 में इविग क्रिश्चियन कालेज की स्थापना डा0 आर्थर एच0 इविंग ने की थी। उस समय कालेज में 3 अध्यापक और पाँच छात्र थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की बी0 ए0 की परीक्षा में छात्रों का पहला बैंच 1906 में सम्मिलित हुआ। 1908 में बी0 एस0 सी0 तथा एम0 ए0 की कक्षाएँ प्रारम्भ हुयीं। कालेज का मुख्य भवन और टूकर हाल 1910 में बनकर तैयार हुआ और इसके दो वर्ष बाद 1910 में दिया छात्रावास बना 1910 में फिलाडेल्फिया छात्रावास 1915 में कालेज की डिस्पेंसरी और प्रिसिटन छात्रावास तथा 1928 में टर्नर छात्रावास बनकर तैयार हुआ।[2]

रसायन विभाग का प्रथम तल तथा दृश्यश्रव्य शिक्षा विभाग की स्थापना 1932 में हुयी तथा 1935 ई0 में कालेज में सहशिक्षा का प्रारम्भ हुआ। 1942 ई0 में कालेज के पहले भारतीय प्राचार्य डा0 बी0 बी0 मालवीय हुए। 1923 के बाद बी0 एस0 सी0 तथा बी0 ए0 की परीक्षाओं की 1951 में पुन. शुरूआत हुयी तथा 1957 में कालेज का कैफेटेरिया वनस्पति विज्ञान विभाग का भवन बना। सन् 1923 ई0 से 1961 ई0 तक 11 व 12 की कक्षाएँ भी डिग्री के साथ चलती रहीं 1961 में इण्टर की कक्षाएँ जमुना क्रिश्चियन हाईस्कूल में स्थानान्तरित कर दी गयीं। जो अब इण्टर कालेज है।[3]

1966 में भौतिकी विभाग का भवन बनकर तैयार हुआ कालेज में 1977 ई0 में प्लेटिनम जुबली मनाई गयी। 1902 ई0 में यू0 जी0 सी0 से अनुदान प्राप्त हुआ, जिससे वनस्पति विज्ञान विभाग का भवन, प्राचार्य कार्यालय कांफ्रेंस हाल व

---

1 वही पृ0 14
2 ई0 सी0 सी0 वार्षिक पत्रिका पृ0 7
3 वही पृ0 8

कम्प्यूटर शिक्षण सस्थान निर्माण कराया गया। कालेज को सन् 1994–95 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य सरकार एवं यू0 जी0 सी0 के सहयोग से स्वायत्तता मिलने के बाद यह उत्तर प्रदेश का दूसरा स्वायत्तशासी मह विद्यालय हो गया। यहाँ खेलकूद प्रयोगशाला, वाचनालय, पुस्तकालय, साइकिल स्टैण्ड आदि की उत्तम व्यवस्था है। आज यह विद्यालय शहर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के बाद महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

ईश्वरशरण डिग्री कालेज

इलाहाबाद

इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध इस महाविद्यालय की स्थापना 1970 मे ईश्वर शरण आश्रम (हरिजन सेवक संघ) की एक इकाई के रूप मे हुयी थी। यह विकासोन्मुख संस्था नगर के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में प्रयाग रेलवे स्टेशन से उत्तर दिशा मे लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।[1]

प्रारम्भ मे महाविद्यालय मे मात्र कला संकाय की कक्षाओं की व्यवस्था थी। कालान्तर मे वाणिज्य सकाय प्रारम्भ हुआ। रजत जयन्ती वर्ष 1994–95 से विज्ञान संकाय के विषयों (कम्प्यूटर विज्ञान, कम्प्यूटर-एप्लीकेशन, भौतिक विज्ञान, गणित, सांख्यिकी और रक्षा तथा स्रातजिक अध्ययन का पठन-पाठन प्रारम्भ किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रथम उपाधि स्तर पर शिक्षा को रोजगार परक बनाने की योजना के तहत अब बी0 एस0 सी0 कम्प्यूटर एप्लीकेशन विषय भी पढाया जा रहा है।[2]

महाविद्यालय मे स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारम्भ करने के लिए प्रस्ताव विश्वविद्यालय के विचाराधीन है। अगले सत्र में एम0 ए0 का अध्यापन प्रारम्भ करने के लिए महाविद्यालय प्रयास रत है। बी0 एस0 सी0 जीव विज्ञान प्रारम्भ करने की दिशा में कदम उठाया जा चुका है। महाविद्यालय में काफी संख्या विदेशी छात्रों की भी है।

---

1 छात्र निर्देशिका पृ0 1
2 वही पृ0 2

महाविद्यालय में एम0 सी0 ए0 (मास्टर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन) एम0 बी0 ए0-(मास्टर आफ बिजनेश एडमिनिस्ट्रेशन), बी0 सी0 ए0 (बैचलर आफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन) तथा बी0 बी0 ए0 (बैचलर आफ बिजनेश एडमिनिस्ट्रेशन) एव इन्ही पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा तथ सर्टिफिकेट कोर्स के अध्यापन की भी व्यवस्था हैं मध्यप्रदेश भोज ओपेन यूनिवर्सिटी ने उक्त पाठ्यक्रमों के लिए महाविद्यालय को अपना अध्ययन केन्द्र बनाया है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा जून-जुलाई में होती है। बी0 ए0, बी0 एस0 सी0 एव बी0 काम में प्रवेश परीक्षा के आधार पर किया जाता है। महाविद्यालय में एन0 सी0 सी0, एन0 एस0 एस0 रोजर रैंजर काउसिल, प्रयोगशाला, साइकिल स्टैण्ड, बैंक खेलकूद आदि की उचित सुविधा है।

महाविद्यालय का पुस्तकालय पर्याप्त समृद्ध है, जिसमें अधुनातन संदर्भग्रन्थ एवं पाठ्य पुस्तकें हैं। महाविद्यालय से सम्बद्ध एक छात्रावास भी हे तथा महाविद्यालय में कठोर अनुशासन का उदाहरण देखने की मिलता है। महाविद्यालय के प्राचार्य डा0 जे0 एस0 एल0 श्रीवास्तव हैं, जिनके निर्देशन में महाविद्यालय निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है।[1]

सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज

इलाहाबाद

इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय (Constitument College) के रूप में हुयी थी। महाविद्यालय के संस्थापक चौधरी महादेव प्रसाद जी थे। कायस्थ पाठशाला ट्रस्ट के अंगभूत चौधरी बाबू महादेव प्रसाद ट्रस्ट के द्वारा दूसरा संचालन होता है। इस संस्था का नाम करण उपर्युक्त ट्रस्ट के संस्थापक चौ0 बाबू महादेव प्रसाद के नाम पर है। अब यह कालेज इलाहाबाद विश्वविद्यालय का सहयुक्त महाविद्यालय है, जिसमें प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय और जाति के विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। यह महाविद्यालय जार्ज टाउन में महात्मा गाँधी मार्गपर स्थित है। महाविद्यालय की महिला शाखा सिविल लाइन्स में स्थित है, जिसमें कला वर्ग की छात्राओं को शिक्षा दी जाती है, किन्तु विज्ञान वर्ग की छात्राओं को सह शिक्षा दी जाती है।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार पृ0 6-3-98

2 वार्षिक पत्रिका 'मनीषा' पृ0 3

इसमें विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए आधुनिक उपकरणों से युक्त प्रयोग शाखाएँ हैं। विद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय एव वाचनालय है, जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकें पर्याप्त सख्या में उपलब्ध है। वाचनालय में हिन्दी और अग्रेजी के साप्ताहिक, पाक्षिक और मानसिक पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त विविध दैनिक समाचार पत्र भी उपलब्ध रहते हैं। छात्राओं एव छात्रो के लिए अलग-अलग पुस्तकालयों व वाचनालओं की व्यवस्था है।

विद्यार्थियो के मनोरजन व शारीरिक विकास के लिए महाविद्यालय क्षेत्र में एक छात्रसदन व्यायामशाला तथा एक विशाल क्रीडा स्थल है।

महाविद्यालय क्षेत्र में स्थित डा0 सम्पूर्णानन्द छात्रावास की आवासीय सुविधा आवश्यकता के अनुरूप केवल उन विद्यार्थियों को योग्यता क्रम में दिया जाता है। इस महाविद्यालय में साइकिल स्टैण्ड की भी व्यवस्था है, जहाँ पर छात्र एवं कर्मचारी अपनी साइकिलो तथावाहनों को रखते हैं।[1]

वर्तमान प्रभारी प्राचार्य डा0 आर0 पी0 श्रीवास्तव जी हैं, जिनके निर्देशन में महाविद्यालय आज इलाहाबाद में शिक्षा का प्रचार व ज्ञान का प्रसार करने में अविश्मरणीय योगदान एव प्रयास कर रहा है।[2]

इलाहाबाद डिग्री कालेज

इलाहाबाद

इलाहाबाद डिग्री कालेज की स्थापना कलासंकाय के साथ 1956 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सहयुक्त महाविद्यालय के रूप में हुयी थी। यह यमुना के तट पर मुख्य ऐतिहासिक मिण्टो पार्क के सामने कीडगंज में स्थित है। किसी जैविक समवाय की प्रकृति के अनुरूप यह स्थापना दिवस से ही लगातार प्रगति कर रहा है विशिष्टता यह रही है कि इसकी सरचना में क्रमश नवीन अवयव जुड़े हैं। यहाँ 1971 में ज़ाणिज्य सकाय 1972 में विधि संकाय की कक्षाएँ प्रारम्भ हुयीं। महाविद्यालय के

---

1 वार्षिक पत्रिका 'मनीषा' पृष्ठ 4
2 वही पृ0 3

मानक शैक्षिक स्तर अनुपूरक और अवस्थापनागत शुविधाओं का आकलन कर इन्दिरागाँधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, नयी दिल्ली ने 1987 में इसे अपने नार्दन जोन का एक अध्ययन केन्द्र बनाया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नयी दिल्ली द्वारा 1988 में इस महाविद्यालय का चयन, 'कालेज आफ ह्यूमैनिटीज एण्डसोसल साइस इम्प्रूवमेण्ट प्रोग्रैम' के अर्न्तगत किया गया। यह महाविद्यालय के लिए अत्यन्त सम्मान का विषय है।[1]

विद्यार्थी को अधुनातन प्रवृत्तियों से अवगत कराने के लिए और शैक्षिक स्तर में सुधार की यह एक प्रमुख योजना है। 1989 से महाविद्यालय में विज्ञान के नवीनतम वर्ग भौतिकी, कम्प्यूटर साइस, सांख्यिकी और प्रतिरक्षा अध्ययन एवं गणित की स्नातक स्तर की कक्षाएँ चल रही हैं।[2] अक्टूबर 1990 में राज्य सरकार ने महाविद्यालय को भारतीय भाषा केन्द्र खोलने की अनुभति दी, जिसके फलस्वरूप तमिल, मलयालम, तेलगू, कन्नड, उडिया, बगला, गुजराती, मराठी, असमिया, सिन्धी, पजाबी तथा कश्मीरी भाषाओं की डिप्लोमास्टर की कक्षाएँ चल रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों में रोजगार अवसर की प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखकर महाविद्यालय में जुलाई 1992 से 'द स्कूल आफ चार्टर्ड-एकाउण्टेण्टस आफ इण्डिया' द्वारा संचालित 'इन्स्टीट्यूट आफ एफ्रेडीटेशन आफ फाउण्डेसन कोर्स खोला गया। इस समस्त उपलब्धियों के निष्पादन स्तर के प्रति कटि बद्धता और प्रेरक अवधारण रही है-

न कि ज्ञानेन संदृशंष वित्रमिहविद्यते।

इस विद्यालय में तीन पृथक-पृथक सुसज्जित और व्यवस्थित परिसरों में अध्ययन-अध्यापन कार्य होताा है। कीडगंज परिसर में छात्रों के कला वाणिज्य तथा विज्ञान संकाय की कक्षाऐं (विज्ञान संकाय में छात्राओं के भी अध्ययन की सुविधा है)। आयोजित की जाती है। बेनीगज परिसर में छात्रों के लिए विधि सकाय की कक्षाएँ आयोजित की जाती है। छात्राओं के लिए कला, वाणिज्य और विधि संकाय की कक्षाएँ नगर के केन्द्र में जीरो रोड पर स्थित परिसर में चलती हैं। पाठ्यक्रम के

1 छात्र निर्देशिका पृ0 3
2 वही पृ0 5

अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था के साथ महाविद्यालय पाठ्येत्तर आयामों के माध्यम से विद्यार्थियो की प्रतिभा को विकसित किया है ताकि वे अपने भावी जीवन में किसी भी उत्तरदायित्व का सफलता पूर्वक निर्वाह कर सकें।

महाविद्यालय मे एक वृहद पुस्तकालय, एन0 सी0 सी0, एन0 एस0 एस0, आदि की व्यवस्था है। महाविद्यालय में भारत–स्काउट एण्ड गाइड्स संस्था के अन्तर्गत इलाहाबाद विश्ववद्यालय जिला सघ से सम्बन्धित रोवर्स रेंजर्स टीम का गठन किया जाता है, जिसमें चुने हुए छात्र छात्राओं को ट्रेनिग, कैम्पिंग सर्विस तथा हाईकिंग के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

कुलभास्कर आश्रम डिग्री कालेज

इलाहाबाद

यह महाविद्यालय कुलभास्कर परिवार में से एक है। इसकी स्थापना सन् 1960 ई0 में तत्कालीन प्राचार्य्र बाबू बृजबिहारी सहाय एवं उनके सहयोगियों द्वारा हुयी और कृषि सकाय में आगरा विश्वविद्यालय से इसे स्नातक की उपाधि की मान्यता प्राप्त है। 1965 ई0 में आगरा विश्वविद्यालय से इसे स्नातकोत्तर कक्षा में कृषि अर्यशास्त्र, कृषि प्रसार और कृषि उद्यान विज्ञान विषयों में मान्यता प्राप्त हुयी और कानपुर विश्वविद्यालय के द्वारा विज्ञान सकाय को सन् 1970 ई0 में मान्यता प्राप्त हुयी।[1] फ्रासीसी भाषा पढाने का कार्यक्रम भी इस विद्यालय में चल रहा है और इसको फ्रैंन्च एकेन्डमी द्वारा मान्यता प्राप्त है। लाइब्रेरी साइंस डिप्लोमा की मान्यता डिपार्टमेंटल इक्जामिनेशन विभाग से प्राप्त है।

विद्यार्थियों में खेलकूद, स्वस्थ्य, चिकित्सा एव एन0 सी0 सी0 का उत्तम प्रबन्ध है। विद्यालय का परीक्षा फल उकृष्ट रहता है। पुस्तकालय, वाचनालय व प्रयोगशाला भी सुलभ है।[2] विद्यार्थियों के समुचित विकास के लिए आवश्यक सभी अवयव विद्यालय में विद्यमान है। तथा महाविद्यालय भवन विशाल व भव्य है तथा अनुशासन का अनुपम उदाहरण देखने को मिलता है।[3]

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 6

2 वही पृ0 5

3 वही पृ0 9

हेमवती नन्दन बहगुणा राजकीय महाविद्यालय, इलाहाबाद

हेमवती नन्दन बहगुणा राजकीय महाविद्यालय का शुभारम्भ सन् 1993 में हुआ। यह महाविद्यालय जमुना पार नैनी क्षेत्र में स्थित है। इलाहाबाद नगर क्षेत्र में कई महाविद्यालय हैं और विश्वविद्यालय भी है। इस कारण गगापार और जमुना पार के इलाकों के विद्यार्थी अध्ययन हेतु नगर ही में आते रहे हैं। विशेष तौर से नगर में प्रवेश के लिए कर्जन पुल, शास्त्रीय पुल और नैनी वाले पुल का प्रयोग करना पड़ता है, जिनमें नैनी की ओर से आने वाले लोगों को बडी कठिनाई का सामना करना होता है। यमुना पार के क्षेत्र के लिए वहीं पर महाविद्यालय स्थापित हो, जिससे आवागमन की कठिनाई दूर हो जाए। इस विचार से यह महाविद्यालय स्थापित हुआ। इसका समुचित विकास तो नहीं हो पाया है, किन्तु इसक्षेत्र के निवासियों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का कार्य यह महाविद्यालय विगत कुछ वर्षो से कर रहा है।[1]

श्यामा प्रसाद मुकर्जी प्रशासकीय महाविद्यालय, इलाहाबाद

इस महाविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश सरकार ने 1998 ई0 में की हैं। यह बालिकाओं की शिक्षा में प्रोत्साहन देने के लिए ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित किया गया है। विद्यालय के पास अपना भवन न होने के कारण इसका प्रारम्भ नगर के तेलियर गंज मोहल्ले में हुआ, किन्तु फाफामऊ में इसके भवन का निर्माण बडी तेजी से किया गया है और 1999 में नव निर्मित भवन का उद्घाटन हुआ। गंगापार के क्षेत्र की कन्याएँ इस महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही है और राजकीय होने के कारण यहाँ पर सुविधाएँ भी प्रचुर मात्रा में हैं। फिर भी विद्यार्थियों की संख्या यहाँ पर बहुत कम है।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-4-98
2 प्राचार्या से साक्षात्कार 13-7-98

आर्य कन्या डिग्री कालेज

इलाहाबाद

आर्य कन्या डिग्री कालेज की स्थापना का तथा विकास का एक लम्बा इतिहास है, जो अविश्मरणीय है। 13 नवम्बर 1904 को आर्य समाज चौक की सभा में 9 व्यक्तियों की एक उपसभा का गठन किया गया। इसमे लाला जसवन्त राय जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री रामदीन जी वैश्य, डा0 गनपत राय, श्री राम जी दास भार्गव, प्रो0 कृष्ण चन्द्र जी प्रमुख थे। उस समय आर्य समाज चौक के प्रधान थे।[1]

13 नवम्बर 1905 ई0 को प्रयाग के उत्साही आर्य बन्धुओं द्वारा आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गयी। और धीरे इस विद्यालय में छात्राओं की सख्या बढने लगी। 1908-9 में 110, 1912-13 में 158 बालिकाएँ थी। पाठशाला का आरम्भ जानसेन गंज में स्थित किराये के मकान में किया गया कुछ समय पश्चात् विद्यालय को स्थानान्तरित कर के मुट्ठीगंज लाया गया। यहाँ पर विद्यालय दिनों दिन विकास करता गया और सन् 1975 ई0 में महाविद्यालय की भी मान्यता प्राप्त हो गयी और बी0 ए0 प्रथम वर्ष की कक्षाऐं खुल गयी। इस समय विद्यालय में प्रथम से बी0 ए0 तक शिक्षा अनुभवी व योग्य अध्यापकों द्वारा दी जा रही है। विद्यालय पुस्तकालय सम्मिलित रूप से है, जिसमें 11167 पुस्तकें हैं। लगभग सभी समाचार पत्र व पत्रिकाएँ आती हैं।[2] विद्यालय की वर्तमान प्राचार्या डॉ0 कोमल भटनागर हैं।

जगत तारन महिला डिग्री कालेज

इलाहाबाद

इस महाविद्यालय की स्थापना जे0 टी0 एजूकेशनल सोसाइटी के द्वारा सन् 1972 ई0 में की गयी थी। यहॉ कला वर्ग में छात्राओं को शिक्षा दी जाती है। महाविद्यालय भवन आवश्यकतानुसार दिव्य अव्य तथा विशाल है। महाविद्यालय में एक पुस्तकालय है जो अत्यन्त समृद्ध है। वाचनलाय भी है, जिसमें अनेक पत्र प्रत्रिकाऐं आती है। प्रयोगशाला अत्याधुनिक उपकर्णो से समृद्ध है। यह महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है। वर्तमान प्राचार्या श्रीमती रत्ना चटर्जी हैं।[3]

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 3

2 वही पृ0 4

3 प्राचार्या से साक्षात्कार 24-3-98

प्रयाग महिला विद्यालय डिग्री कालेज

इलाहाबाद

प्रयाग महिला विद्यालय डिग्री कालेज की स्थापना छायावाद की महान कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा जी ने सन् 1970 ई0 में की थी। इस समय अनेक विषयों में कलावर्ग (बी0 ए0) की शिक्षा दी जाती है। महाविद्यालय कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।[1]

यहाँ एक विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था है, जिसमें हजारों पुस्तकें हैं, वाचनालय की भी उत्तम व्यवस्था है, जिसमे अनेक समाचार पत्र व पत्रिकाएँ आती हैं। साइकिल स्टैण्ड भी है। इस समय यहाँ 300 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। परीक्षाफल उत्तम रहता है। वर्तमान विद्यालय भवन विशाल है। प्राचार्या डा0 मीरा कुमार जी हैं।

राजर्षि टण्डन महिला

महाविद्यालय,

इलाहाबाद

इस महाविद्यालय की स्थापना 1975 ई0 में पुरूषोत्तमदास टण्डन की स्मृति में "गौरी पाठशाला न्यास" द्वारा अंचल की छात्राओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु की गयी थी। यहाँ केवल स्नातक स्तर पर कलावर्ग की शिक्षा दी जाती है और महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।[2]

महाविद्यालय भवन छोटा किन्तु पर्याप्त है। महाविद्यालय में कुल 160 छात्राएँ हैं, जिन्हें योग्य प्राध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित किया जाता है। यहाँ एक पुस्तकालय तथा वाचनालय भी विद्यमान है, जिसमें अनेक ज्ञान विषयक पुस्तकें तथा पत्र व पत्रिकाएँ हैं। इस महाविद्यालय की प्रथम प्राचार्या श्रीमती रानी टण्डन तथा वर्तमान प्राचार्या डा0 श्रीमती प्रमिला टण्डन तथा प्रबन्धक डा0 श्रीमती शशी टण्डन जी हैं। जिनके निर्देशन में महाविद्यालय दिनों-दिन विकास के पथ पर अग्रसर है।

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 8-3-98
2 प्राचार्या से साक्षात्कार 9-3-98

सदनलाल साँवलदास खन्ना महाविद्यालय

इलाहाबाद

सदनलाल सॉवलदास खन्ना महाविद्यालय शहर की एक प्रमुख शिक्षण संस्था, ''सारश्वत खत्री पाठशाला'' द्वारा 1975 ई0 में बालिकाओं की उच्च शिक्षार्थ स्थापित किया गया था। यहॉ स्नातक की शिक्षा विज्ञान तथा कलावर्ग दोनों में अनुभवी व सुयोग्य अध्यापिकाओ द्वारा दी जाती है। लगभग 1000 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। पुस्तकालय प्रयोगशाला, वाचनालय के अतिरिक्त खेलकूद की उत्तम व्यवस्था है। प्रथभव वर्तमान प्राचार्या डा0 आशा सेठ जी हैं।[1]

मोतीलाल नेहरू रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज, इलाहाबाद

मोती लाल नेहरू रीजनल इन्जीनियरिंग कालेज सयुक्त रूप से भारत सरकार एव उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा 1961 में स्थापित किया गया। यह विद्यालय रीजनल इन्जीनियरिंग महाविद्यालयों की शृंखला में एक महत्वपूर्ण ईकाई हैं इस महाविद्यालय के कार्यकलापों का प्रबन्ध एवं प्रशासन तथा खर्च की व्यवस्था प्रशासकीय परिषद द्वारा किया जाता हैं। इस महाविद्यालय को प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त है।[2] इस कारण महाविद्यालय के विकास एवं दक्षता में वृद्धि आसानी से होती रही है। महाविद्यालय के लिए परिसर विशेषतौर से शहर से हट्कर चुना गया। महाविद्यालय इलाहाबाद जंग्सन से लगभग 8 किमी की दूरी पर स्थित है।[3] महाविद्यालय के शहर से दूर रखने का प्रधान कारण यही था कि यह नगर के कोलाहल से और वाहनों के प्रदूषण से बचा रहे। साथ ही विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताएँ परिसर में पूरी हो जाएँ और उन्हें शहर से न्यूनतम सम्पर्क रखना पड़े। इस समय भी यद्यपि नगर का फैलाव तेजी से हो रहा है। इन्जीनियरिंग कालेज नगर से दूर ही माना जाता है। यह महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।

---

1 प्राचार्या से साक्षात्कार 3-5-98

2 वार्षिक प्रतिवेदन पृ0 3

3 वही पृ0 4

किन्तु विश्वविद्यालय मे यह एकमात्र इन्जीनियरिंग कालेज है। इस कारण से इसे शैक्षिक मामलो है। इस कारण से इसे शैक्षिक मामलो मे काफी स्वतंत्रता प्राप्त है। जब महाविद्यालय की स्थापना हुयी उस समय केवल परम्परागत पढाये जाने वाले विषय ही खोले गये। अर्थात सिविल-इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल। अन्य प्रान्तो मे भी अधिकतर ऐसे महाविद्यालयो में यहीं विषय पढाये जाते थे। स्थापना के 15 वर्ष बाद इसके पाठ्यक्रम मे नवीनता लाने का प्रयास हुआ। और सगणक विज्ञान (कम्प्यूटर साइस) प्रारम्भ किया गया और कालान्तर में इलेन्ट्रानिक्स, प्रोडक्सन और औद्योगिक इन्जीनियरिंग आरम्भ किये गये।[1] स्नातकोत्तर कक्षाओ का शुभारम्भ 1970 ई0 में हुआ। इस महाविद्यालय में 1100 से अधिक विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। चूँकि महाविद्यालय एक आवासीय सस्था है। इसलिए सभी विद्यार्थियो के रहने की व्यवस्था और भोजन इस परिसर मे उपलब्ध है। महाविद्यालय में छात्रो की संख्या भी निरन्तर बढ़ रही है।[2] स्थापना के साथ ही महाविद्यालय ने प्रगति की नीति का अनुशरण किया। अध्यापकों एव कर्मचारियो के उच्च उपाधि प्राप्त करने की दिशा में प्रोत्साहन दिया। विशिष्ट प्रशिक्षण के लिए सहायता दी। फलस्वरूप इस महाविद्यालय के अधिकाश अध्यापक शोध उपाधियो से विभूषित हैं। 1972 में महाविद्यालय ने एक विशिष्ट कदम उठाया और उद्यामियो में रोजगार की सम्भावना की वृद्धि के लिए 68 सेड का औद्योगिक आस्थान बनावाया। बाद में विकास एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना भी महाविद्यालय में हुयी।

महाविद्यालय के पुस्तकायल में 60 हजार से अधिक पुस्तकें हैं। विद्यार्थियो के लिए पाँच छात्रावासा है, जिनमे एक छात्राओ का है। देश के विभिन्न भागो से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन हेतु आते हैं। कुछ पडोसी देशो से भी अध्ययन हेतु विद्यार्थी आते हैं, जिनमें लंका व नेपाल और कुछ अफ्रीकी देश शामिल हैं। महाविद्यालय में राष्ट्रीय कैडेट कोर और राष्ट्रीय सेवा योजना दोनों सुचारू रूप से चल रहे हैं।

---

1 वार्षिक प्रतिवेदन पृ0 5

2 वही पृ0 6

मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज

इलाहाबाद

इलाहाबाद नगर मे आयुर्विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना एक विशिष्ट स्थान रखती है। उत्तर प्रदेश के मेडिकल कालेजों में इलाहाबाद के कालेज का स्थान महत्वपूर्ण है। जब तक भारत परतन्त्र था। पूरे देश में ऐसे महाविद्यालयों की सख्या कम थी। ब्रिटिश सरकार ने विलियम बैंटिक के समय में देश का पहला मेडिकल कालेज सन् 1835 में कलकत्ते मे खोला। और अगले 100 वर्षो में ब्रिटिश चिकित्सा पद्धति पर आधारित अस्पताल और महाविद्यालय समय-समय पर स्थापित हुए। बहुत से चिकित्सालयों का नाम डफरिन अस्पताल रखा गया। उत्तर प्रदेश में लखनऊ में एक मेडिकल कालेज खुला चूँकि 1930 में राजधानी इलाहाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित हो गयी और इस नगर का महत्व लखनऊ की अपेक्षा कम हो गया। लखनऊ में मेडिकल कालेज की स्थापना का मूल कारण यही था कि प्रान्त की राजधानी वहॉ पर थी। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् तकनीकी शिक्षा का विकास किया गया और इन्जीनियरिंग और मेडिकल कालेज खुलने लगे। मुख्यमंत्री चन्द्रभान गुप्त के प्रयास से सन् 1961 ई0 में इलाहाबाद मेडिकल कालेज की स्थापना हुयी। 5 मई 1961 को इस महाविद्यालय का शिलान्यास भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने किया।[1] चूँकि मेडिकल कालेज इलाहाबाद में खुला और पं0 मोतीलाल नेहरू इस प्रान्त और इलाहाबाद नगर से जुडे हुये थे और देश के स्वाधीनता संग्राम में उनकी विशिष्ट भूमिका थी। इसलिए उनकी याद को ताजा रखने के लिए महाविद्यालय का "नामकरण मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय" रखा गया। जिस परिसर में विद्यालय बना वहाँ पर पहले गवर्नमेण्ट हाउस था। इसका अर्थ यह है कि जब इलाहाबाद प्रान्त की राजधानी थी। उस समय गवर्नर का मुख्यालय यहीं पर था। 1963 में गवर्नमेण्ट हाउस की तमाम इमारतें महाविद्यालय को उपलब्ध करा दी गयीं और धीरे-धीरे नये भवनों को निर्माण होने लगा। यह महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है और यहाँ के विद्यार्थियों को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डिग्री दी जाती है।

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 4

इस महाविद्यालय में सी0 पी0 एम0 टी0 के माध्यम से विद्यार्थियों का चयन किया जाता है। प्रतिवर्ष 102 विद्यार्थी लिए जाते हैं। एम0 बी0 बी0 एस0 में पढने वाले 550 विद्यार्थी हैं। छात्रों व छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास है। और परास्नातक छात्रों के लिए एक अन्य छात्रावास है।[1] महाविद्यालय में कई विषयों में परास्नातक के कोर्स चलते हैं। एक तीन वर्ष का कोर्स नर्सों के लिए चलाया जाता हैं। इसके अतिरिक्त एक्सरें, दन्त विभाग, एव अन्य संम्बन्धित विभागों में प्रशिक्षण दिया जाता है। महाविद्यालय के पास एक अच्छा पुस्तकालय है, जिसमें प्रतिवर्ष नई पुस्तकें मगाई जाती है। इस समय पुस्तकालय में लगभग 10000 पुस्तकें हैं।

इस महाविद्यालय से सम्बद्ध कई अस्पताल हैं, जिनमें प्रमुख हैं,-स्वरूपरानी नेहरू अस्पताल. सरोजनी नायडू बाल चिकित्सालय, एम0 डी0 आई0 हास्पिटल, कमला नेहरू हास्पिटल हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में इस महाविद्यालय का नगर में महत्वपूर्ण स्थान है।

इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट
नैनी, इलाहाबाद

इलाहाबाद कृषि संस्थान की स्थापना 1910 में की गयी और उस समय इसे वर्तमान यूईंग-क्रिश्चियन कालेज के एक विभाग के रूप में प्रारम्भ किया गया। सन् 1911 में महाविद्यालय के कृषि और तकनीकी विभाग नैनी क्षेत्र में स्थानान्तरित कर दिये गये। सन् 1913 में कृषि और तकनीकी विभाग कला और विज्ञान संकाय से पूरी तौर से अलग-अलग हो गये सन् 1916 में कृषि संकाय के संचालन के लिए एक अलग से समिति का गठन कर दिया गया।[2] नवम्बर 1918 में कृषि और तकनीकी विभाग का यूईंग क्रिश्चियन कालेज से पूर्ण रूपेण संन्धि विच्छेद कर दिया गया और इन विभागों को एक नया नाम दिया गया। जो था-"इलाहाबाद स्कूल आफ एग्रीकल्चर" किन्तु थोडे ही समय पश्चात् सन् 1919 में इसका नाम फिर परिवर्तित किया गया और "इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट" रखा गया।[3] उस

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 9
2 वार्षिक पत्रिका पृ0 6
3 वार्षिक पत्रिका पृ0 7

समय के सचालक मडल का विचार यह था कि भारतीय कृषि का विकास और उसमे सुध.र देश के चतुर्मुखी विकास के लिए अत्यावश्यक था। साथ ही साथ इस विद्यालय ने कृषि शिक्षा के अक्तिरिक्त, जिनगुणों के विकास पर बल दिया जाता था। वे थे- ईमानदारी, सत्चरित्रता, और नि स्वार्थ आदर्शवादिता। इस विद्यालय में प्रभू ईशू के सदेश और उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में डालने पर समुचित बल दिया जाता है।

इस विद्यालय का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 600 एकड है। जिसमें प्रशासकीय भवन, विभिन्न विभाग, शोधकार्य हेतु, खेत, छात्र और छात्राओं के लिए छात्रावास और अध्यापकों के आवास बने हुए हैं। इस विद्यालय से जो छात्र निकलते हैं, उन्होंने इस शताब्दी में देश के कृषि क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। विद्यालय में पूरे देश से विद्यार्थी पढने आते हैं। यहॉ तक कि विदेशी छात्र भी यहॉं अध्ययन करने आ.े रहे हैं, जिनमें एशिया और अफ्रीका के छात्र अधिक होते हैं। वस्तुत यह महाविद्यालय एक राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय सस्था मानी जा सकती है।[1]

इस महाविद्यालय को अल्पसख्यक शिक्षण सस्था उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान लिया गया है। यह स्थिति में पिछले 20 वर्ष से चल रही है। महाविद्यालय में पठन-पाठन के अतिरिक्त विभिन्न विषयों में शोध कार्य बडे पैमाने पर होता रहा है।

आई0 ई0 आर0 टी0, इलाहाबाद

इस विद्यालय की स्थापना 1955 में हुयी थी। प्रारम्भ में इसे सिविल इन्जीनियरिंग स्कूल कहा गया और रूढकी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध था। और केवल सिविल इन्जीनियरिंग में डिप्लोमा कोर्स की शिक्षा दी जाती थी। 1962 में इसका न।म बदल दिया गया और "इलाहाबाद पालीटेक्निक" रखा गया। और सरकार ने इसके प्रशासन और व्यवस्था में भाग लेना प्रारमभ किया। सन् 1978 में भारत सरकार ने इसे कम्यूनिटी पालिटेक्निक का दर्जा दिया। विशेष तौर से इस विद्यालय से अपेक्षा की गयी कि ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान का प्रचार-प्रसार करें।[2] इस

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 9
2 वार्षिक पत्रिका पृ0 13

विद्यालय में विभिन्नविषयों में डिप्लोमा कोर्स के शिक्षण की व्यवस्था है और देश में इसका विशिष्ट स्थान है। इस विद्यालय को राज्यसरकार और केन्द्र सरकार दोनों का अनुदान प्राप्त होता है। प्रयाग स्टेशन के निकट चैथम लाहन क्षेत्र में यह विद्यालय स्थित है और इसका प्रागण करीब 50 एकड मे फैला हुआ है।

इलाहाबाद पालीटेक्निक को कालान्तर में नया नाम आई0 ई0 आर0 टी0 दिया गया। आजकल यहाँ कम्प्यूटर, मैनेजमेण्ट के साथ अनेक डिप्लोमा की शिक्षा दी जाती है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त छात्र देश के कोने-कोने में विभिन्न पदो पर देश को प्रगति के शिखर पर ले जाने में प्रयत्न रत हैं।

राजकीय यूनानी मेडिकल कालेज

इलाहाबाद

राजकीय यूनानी मेडिकल कालेज की स्थापना 1904 में श्री हकीम अहमद हुसैन साहब ने की थी। प्रारम्भ मे यह स्कूल के रूप में चलता था। 1950 में मेडिकल कालेज बना तथा 1982 ई0 में उत्तर प्रदेश सरकार ने इसे अपना सरक्षण प्रदान किया इस विद्यालय में यूनानी पद्धति (हक़ीमी) द्वारा छात्रों को उपचार का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कालेज द्वारा बी0 यू0 एम0 एस0 (बैचलर आफ यूनानी मेडिकल सर्जरी) की उपाधि प्रदान की जाती है। छात्रों का प्रवेश सी0 पी0 एम0 टी0 के द्वारा होता है। महाविद्यालय में कुल 18 प्रध्यापक हैं जब कि 260 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे है। महाविद्यालय के प्रध्यापकों के मत से 79 प्राध्यापक होने चाहिए। महाविद्यालय को स्नातकोत्तर (एम0 एस0) कक्षाओं की मान्यता 1993 से मिली है लेकिन अभी कक्षाएँ नही चल रही है। डिग्री की परीक्षा बाडी कानपुर विश्वविद्यालय है।[1]

मेडिकल कालेज में एक अस्पताल विद्यार्थियों के प्रयोग के लिये बना है, जिसकी स्थापना श्री हक़ीम अहमद हुसैन ने 26 जनवरी 1950 को की थी इसीलिए अस्पताल का नाम "रिपब्लिक डे मेमोरियल हास्पिटल" रखा है। इस पद्धिति का जन्म यूनान में हुआ था। किन्तु इस का विकास अरब देशों में हुआ था। अरबों के साथ यह कला भारत में प्रविष्ट हुयी, जिसे जीवित व विकसित करने के लिए प्रयास रत विद्यालय पुष्पित व पल्लवित हो रहा है।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-3-98

2 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 13-3-98

राजकीय काष्ठकला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, कटरा इलाहाबाद

यह विद्यालय शहर के अनोखे व महत्वपूर्ण विद्यालयों में से एक है। यहाँ छात्रों को काष्ठ शिल्प की शिक्षा दी जाती हैं, जिसमें प्रवेश के लिए विद्यार्थी को आठ पास होना आवश्यक है। यहाँ विद्यार्थियों को पाँचवर्ष में काष्ठशिल्प में दक्ष किया जाता है जो निम्न है।

सामान्य शिक्षा–दो वर्ष

डिप्लोमा (एडवास)–दो वर्ष

टीचर ट्रेनिग–, एक वर्ष

यहाँ प्रवेश के लिए छात्र को 14 से 25 वर्ष का होना आवश्यक है। इस प्रकार विद्यालय मे काष्ठ शिल्प की शिक्षा के द्वारा निजी व्यवसाय या सरकारी सस्थाओं में जोने के योग्य बनाया जाता है।[1]

उत्तर रेलवे कोरल क्लब हैण्डीक्राफ्ट सेण्टर मान्यता प्राप्त सिलाई स्कूल, इलाहाबाद

इस सिलाई स्कूल की स्थापना 'कोरल क्लब' द्वारा 1957 ई0 की गयी थी। इस विद्यालय में सिलाई, कढ़ाई, कढाई, हस्त एवं यन्त्र कढ़ाई की शिक्षा दी जाती है। यहाँ प्रवेशार्थी की न्यूनतम योग्यता हाईस्कूल पास होनी चाहिए तथा एक वर्ष का डिप्लोमा है, जिसकें बाद छात्रा को पूरी तरह सक्षम मान लिया जाता है। यहाँ अनुदान केन्द्रीय सरकार से तथा डिप्लोमा सम्बद्धता उषामशीन कम्पनी से है, जहाँ बाद में रोजगार की सम्भावना भी रहती है। फीस केवल 1 रूपया है। प्रारम्भ में लगभग 100 छात्राएँ थीं किन्तु आज इसमें 39 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इस विद्यालय में एक प्राचार्य व एक अध्यापिका है। प्रथम व वर्तमान प्राचार्य श्रीमती आई0 जोजब हैं।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 7-5-98

2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-4-98

उत्तर प्रदेश मूक
बधिर विद्यालय,
इलाहाबाद

जार्जटाउन में स्थित यह विद्यालय अनोखा व शिक्षा के क्षेत्र में चमत्कार है, क्यों कि यहाँ पर मूक एव बधिरों को शिक्षा दी जाती है। अपने ढ्ग का शहर में अकेला विद्यालय है। इस विद्यालय की स्थापना श्री पदम् नारायण मिश्र जी ने 29 नवम्बर 1929 को की थी प्रारंम्भ में अत्यल्प छात्रों की संख्या तथा तमाम कठिनाइयों से जुझने के बाद आज अपने युवावस्था में है इस समय यहाँ 213 छात्र व छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ पर यह बताया गया कि बच्चे जन्म से या गर्भ से बधिर होते हैं, जिसके कारण ये बोल भी नहीं पाते। इस समय विद्यालय दो पाली में चलता है। प्रथमा पाली में छोटे बच्चों (प्रेप–टू–अपर के0जी0) तथा द्वितीय पाली में प्रथम से आठ तक चलता है।[1]

विद्यालय को 1978 ई0 में प्राइमरी तथा 5–8–1995 को जू0 हाईस्कूल की मान्यता प्राप्त हो गयी। यहाँ पर बच्चों को पढाई के अतिरिक्त काष्ट शिल्प, सिलाई इत्यादि की शिक्षा दी जाती है। यहाँ एक पुस्तकालय है, जिसमें सभी सुलभ पुस्तकें आवश्यक एवं गुणकारी हैं।

यहाँ पर अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान भी है जहाँ पर (डी0 एस0 ई0) डिप्लोमा एण्ड सोसलएजुकेशन ट्रेनिंग के अन्तर्गत अध्यापकों को मूक–बधिर बच्चों को शिक्षित करने की ट्रेनिंग दी जाती है। अध्यापकों को प्रशिक्षण सायकालीन कक्षाओं के माध्यम से दी जाती है। जानने योग्य बात यह है कि ये बच्चे भी अन्य बच्चों की तरह मानसिक क्षमता की दृष्टि से समान होते हैं यदि इन्हें शिशु अवस्था से ही प्रयत्न किया जाय तो ये बोला भी सकते हैं। इस विद्यालय के प्रथम प्राचार्य प0 शुकदेव मिश्राजी तथा वर्तमान प्राचार्य श्री रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव जी हैं।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 6–5–98

2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 6–5–98

विकलांग केन्द्र

इलाहाबाद

विकलांगता समाज का कलक है, विकलागता को दूर करने तथा विकलांग व्यक्तियों की सेवा करने के उद्देश्य से महामना डा0 जे0 बी0 बनर्जी ने अपनी लगभग 6000 रूपये प्रतिदिन की आमदनी त्याग कर भारद्वाज आश्रम के सामने कुछ विकलांग लोगों को टीन के हाथ पैर बना कर देने लगे व सेवा करने लगे, कई लोगों ने इसका विरोध भी किया कई लोगों ने मदद भी की इसी प्रकार जब यह सूचना मदरटेरेसा के पास पहुँची तो उन्होंने स्वयं आकर 1973 ई0 में विकलांग केन्द्र की स्थापना की तब से यह केन्द्र विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर हुआ और 1993 में सरकार से सहायता भी मिलने लगी और आज यहाँ पर एक अस्पताल तथा एक विकलांग प्रशिक्षण केन्द्र है, जिसका नाम है, "विविध पुनर्वास कार्यकर्ता" यहाँ 12 पास विकलांग व्यक्ति को जीविका कमाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है यह कोर्स डेढ वर्ष का है। तथा पास होने पर प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।[1] यह संस्था का एक ट्रस्ट है, जिसका नाम, "रोटरी स्पान्सर्ड कृपिल्ड एण्ड यूथ वेलफेयर सोसाइटी" है। यहाँ अत्याधुनिक प्रकार के हाथ, पैर, बैसाखी, साइकिल व शरीर के अनेक अंग बनाये जाते हैं तथा विकलागों को प्रदान किय जाते है। वर्तमान डायरेक्टर डा0 जे0 बी0 बनर्जी के निर्देशन में विकलांग केन्द्र दिनों दिन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है।[2]

राजकीय शिशु प्रशिक्षण महिला

महाविद्यालय,

इलाहाबाद

इस महाविद्यालय की स्थापना 1949 में हुयी थी इसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा महिला अध्यापकों को शिशुओं को शिक्षित करने का प्रशिक्षण देने के लिये किया गया था। विद्यालय अपने उद्देश्य में पूर्णत सफल है यहाँ स्थापित शिशुमंदिर के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने का शिक्षिकाएँ अभ्यास करती है। यहाँ इस समय 150 बच्चें हैं।[3]

1 निर्देशक से साक्षात्कार 14-5-98
2 बड़े बाबू से साक्षात्कार 14-5-98
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 3-5-97

टी0 सी0 (शिशुशिक्षा) प्रशिक्षण यह दो वर्ष का होता है। इसमें प्रवेश प्रवेशपरीक्षा के माध्यम से लिया जाता है। इस समय विद्यालय में प्रत्येक वर्ष में 34 टीचर अनु.भव प्राप्त कर रही हैं। तथा दोनों वर्ष का मिला कर कुल 68 नवशिक्षिकाएँ शिक्षण अनुभव प्राप्त कर रही हैं। यहाँ अत्याधुनिक तरीके से शुशुओं को प्रशिक्षित करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्तमान प्राचार्या श्रीमती चित्रलेखा गुप्ता जी हैं।

काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय

सिविल लाइन्स

इलाहाबाद

कायस्थ पाठशाला के कुछ वरिष्ठ सदस्यों की चेष्टाओं के फलस्वरूप 1951 ई0 में उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग की अनुमति से स्थापित, काली प्रसाद प्रशिक्षण महाविद्यालय अपने 58 वर्ष के जीवन में शिक्षण प्रशिक्षण क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्रा त कर लिया है।[1]

इलाहाबाद नगर के बीचोबीच स्थित यह शिक्षण संस्था स्नातकोत्तर स्तर पर एल0 टी0 डिप्लोमा के लिए युवक और युवतियों को प्रशिक्षण प्रदान करती है। इस महाविद्यालय में लगभग 900 प्रार्थी प्रवेश पाते हैं और उन्हें ग्यारह अनुभवी अध्यापकों द्वारा एक वर्ष तक प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिलता है।[2]

यूँ तो विद्यालय की अनेक उपलब्धियाँ हैं परन्तु इसकी प्रमुख विशेषता यहाँ की प्रशिक्षण-प्रणाली है। वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षार्थियों में उचित रूप से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक सौर्यबोध क्षमता तथा आध्यात्मिक तथ्यों का विकास मानलिया गया है। निर्धारित पाठ्य क्रम के अतिरिक्त शिक्षा की वर्तमान सार्वव्यावकता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में एसे कार्यक्रमों का समावेश किया गया है जो कि अभी तक अधिकतर प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रचलित नहीं है। उदाहरण के लिए-

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 6
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 3-8-97

1 विभिन्न स्कूलों विषयों के पाठ्य वितरणों का आलोचनात्मक अध्ययन और उनकी लिखित व्याख्या है।

2 वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का आलोचनात्मक अध्ययन और विभिन्न स्कूलों विषयों में वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं की रचना।

3 पंजिका, अधिलेख दैनन्दिनी का उचित प्रयोग।

4 विभिन्न सहपाठ्यगामी-क्रियाओं का आयोजन तथा सचालन जैसे वाद-विवाद, तात्कालिक व्यक्तृता, कविदरबार, संगीत एवं सास्कृतिक अनुष्ठान सामान्यज्ञान प्रतियोगिता, शैक्षिक प्रदर्शनी इत्यादि।

5 शिक्षक-विद्यार्थी सहयोग अनुष्ठान तथा अभिभावक दिवस।

6 मूल्यांकन और सामथिक परीक्षाएँ।

7 विद्वानों तथा विशेषज्ञों द्वारा भाषण।

8 नैतिक जागरण कार्य।

इन सभी कार्यों के पीछे एक ही उद्देश्य निहित है. वह यह कि छात्र-अध्यापकों के शिक्षण कार्य भी व्यापकता और इसके महत्व का पूरा ज्ञान हो वे इस कार्य में प्रेरित हों, इनमें उचित नेतृत्व, भाईचारा, स्वस्थ अभिवृत्तियों तथा सामाजिकता का संचार है और उनके व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास हो सके, जिससे वे निपुण शिक्षक बन सकें। इतने महत्वपूर्ण उतरदायित्व को निभाने में यहाँ के छात्रों तथा शिक्षकों का बडा सराहनीय सहयोग रहा है। इस संस्थान के छात्र व अध्यापक देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, बहुतों ने तो ख्याति भी प्राप्त की है और देश के विभिन्न भागों में वरिष्ठ पदों पर नियुक्त भी हैं। यहाँ के शिक्षकों ने भी राष्ट्रीय संस्थाओं व क्षेत्रीय महाविद्यालयों में अपनी विद्वत्ता और कार्य निपुणता का परिचय दिया हैं।

इस महाविद्यालय का वार्षिक परीक्षाफल गत कई वर्षो से उत्कृष्ट रहा है और इस वर्ष तो इस संस्था के परीक्षाफल ने राज्य में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। यह अतिशयोक्ति नहीं है कि यह शिक्षण संस्था संम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में उच्च शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र बन गया है। विद्यालय में वाचनालय, पुस्तकालय तथा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है'

प्रयोगात्मक मनोविज्ञानशाला महाविद्यालय के लिए अति आवश्यक है, जिसे लगभग 50 विद्यार्थी एक ही समय में प्रयोग कर सकते है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में अनुशासन का अनुपम उदाहरण देखने को मिलता है।

राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान और सामाजिक विज्ञान विभाग, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान परिषद इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

ऐतिहासिक परिदृश्यः- यह संस्थान देश में स्थापित अपने ढंग का पहला संस्थान है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में इसके गौरवशाली इतिहास का सूत्रपात सन् 1996 से होता है जब इसकी स्थापना लखनऊ में राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में हुयी थी। कालान्तर में स्थानान्तरित होकर यह इलाहाबाद आ गया। विश्वविद्यालय आयोग 1902 की सस्तुति एव 11 मार्च 1904 के प्रस्ताव के अनुसार इसका उन्नयन उच्चस्तरीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में हो गया और यहाँ आई0 ई0 एस0 श्रेणी के योग्य प्रशिक्षित प्राध्यापकों की व्यवस्था की गयी।

एल0 टी0 डिप्लोमा प्रदान करने के लिए सन् 1927 तक यह इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रहा। इसी वर्ष विश्वविद्यालय से असम्बद्ध कर इसे प्रान्तीय शासन के शिक्षा विभाग नियत्रण में कर दिया गया तथा इसकी परीक्षा व्यवस्था रजिस्टर शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, उत्तर.प्रदेश द्वारा सम्पन्न होने लगीं।[1]

प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा के पुनर्गठन के संदर्भ में गठित आचार्य नरेन्द्र देव समिति 1939 की सस्तुति के परिणामस्वरूप सन् 1948 में उक्त राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय का स्तरोन्नयन राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान के वर्तमान स्वरूप में हुआ और तभी से यह प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षा तथा पाठ्यक्रमशोध की परामशीदात्री समिति के रूप में शिक्षकों के अध्यापन की नवीनतम पद्धतियों और अद्यतन शैक्षिक अवधारणाओं को अवगत कराने हेतु एक केन्द्र के रूप में शैक्षिक

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 4

साहित्य के सृजन पाठ्य पुस्तकों के निर्माण एवं नवीनी करण शैक्षिक मूल्यों के विकास एव संम्बर्द्धन पर आधारित उपयोगी साहित्य के प्रकाशन के बहुआयामी कार्यकलाप निष्पादित करता चला आ रहा है। सन् 1981 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की स्थापना के समय से ही इसके संरक्षण में यह संस्थान मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के रूप में कार्यरत है।

लक्ष्य एवं उद्देश्यः-

(I) एक उच्च स्तरीय अध्यापक प्रशिक्षण योजना प्रस्तुत करना।

(II) सेवारत अध्यापकों के लिए पुनर्बोधात्मक पाठ्यक्रमों का संयोजन करना।

(III) शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष परियोजनाओं का सूत्रपात करना यथा विज्ञान शिक्षा में सुधार, विद्यालयों के विकास के लिए सघन कार्यक्रम परिचालित करना तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए पाठ्य-सामग्री का विकास करना आदि।[1]

(IV) शैक्षिक अनुसन्धान का क्रियान्वयन।

(V) निदेशक राशैप्राय के मार्गदर्शन में शिक्षकों को शैक्षिक व्यवसाय के लिए तैयार करना।

संगठन और कार्य :- यह बी0 एड0 के समकक्ष एल0 टी0 डिप्लोमा के लिए सेवापूर्व प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है। सेवारत माध्यामिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षा अधिकारियों को एल0 टी0 डिप्लोमा के लिए तैयार रहता है। लोक सेवा आयोग द्वारा चयनित शिक्षा अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करता है।

सेवारत शिक्षकों के लिए सतत् एव पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है। विद्यालयीय विषयों के शिक्षण के विशिष्ट शिक्षण एव उपचारात्मक शिक्षा का संयोजन करता है।

शैक्षिक पाठ्य पुस्तक एवं पाठ्य क्रमीय अनुसंधान इकाई :- इसके अन्तर्गत शैक्षिक समस्याओं पर शोधकार्य सम्पन्न होता है तथा पाठन विधियों

---

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 8

पाठ्यक्रम-निकष-सरचना, शैक्षिक उपकरण और सहायक सामग्री पाठ्य-पुस्तक निर्माण, शिक्षण सदर्शिका मूल्याकन प्रविधि मदगामी अल्पार्जक और मेधावी छात्रों की समस्याएँ आदि हैं। सम्पूर्ण शोध का स्वरूप तथा कार्यक्षेत्र व्यावहारिक और क्रियापरक होता है।

उपचारात्मक शिक्षा इकाई :- सस्थान धीमी गति से सीखने वाले एवं अल्पार्जक छात्रों के लिए निदात्मक शिक्षा की व्यवस्था करता है। पाठशाला के अन्तर्गत उपचारात्मक कार्यक्रम सुनियोजित कर उन्हें क्रियान्वित करता है। सेवापूर्व एव सेवारत शिक्षकों को उपचारात्मक शिक्षण की तकनीकी से अवगत कराता है। मेधावी छात्रों की प्रतिभा के संम्बर्द्धन के लिए नवीन योजनाओं की संभावना करता है।

श्रव्य-दृश्य इकाई :- छात्राध्यापकों को तकनीकी सामग्री यथा-फिल्म, फिल्म स्ट्रिप, प्रोजेक्टर एपीडायस्कोप, ओवर हेड प्रोजेक्टर, टेपरिकार्डर के माध्यम से श्रव्य-दृश्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। एक सुसज्जित, काष्ठ-शिल्प कार्यशाला में सहायक सामग्रियों के निर्माण का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

प्रायोगिक विद्यालय :- संस्थान के प्रशासनिक नियंत्रण में दो विद्यालय सलग्न है।

- राजकीय इण्टर कालेज, इलाहाबाद (6-12) तक
- बेशिक डिमांस्ट्रेशन स्कूल (1-8) तक

कक्षा शिक्षण के अभ्यास की सुविधा के अतिरिक्त उपर्युक्त दोनों विद्यालय शैक्षिक अनुसधान के लिए शोधशाला के रूप में उपलब्ध है।

पुस्तकालय :- संस्थान में विविध शैक्षिक पक्षों पर लगभग हजारों पुस्तकों से युक्त एक पुस्तकालय है। यहाँ अनेक प्रकार के समाचार पत्र एवं शैक्षिक पत्रिकाएँ भी मँगाई जाती हैं।

परामर्शी कार्य एवं अन्य विशिष्ट संस्थानों से सहयोग :- यह संस्थान राज्य सरकार, शिक्षा विभाग एवं माध्यमिक शिक्षापरिषद की शैक्षिक नीतियों एवं कार्यक्रमों के नियोजन आदि की समस्याओं के निवारण हेतु परामर्श अभिकरण के रूप में कार्य करता है।

इस संस्थान के विशेषज्ञों का राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद तथा अन्य ख्याति प्राप्त शैक्षिक अभिकरणों द्वारा प्रायोजित शैक्षिक कार्यक्रम विचार गोष्ठियों एव कार्य गोष्ठियों में प्रतिभाग हेतु आह्वान किया जाता है।

यह संस्थान राज्यस्तरीय तथा राष्ट्र स्तरीय विभिन्न विशिष्ट शैक्षिक अभिकरणों यथा राज्य शिक्षा संस्थान राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली आदि को पाठ्यक्रम निर्माण विचार विनिमय तथा विविध कार्य योजनाओं के क्रियान्वयन में सक्रिय सहयोग अर्पित करता है।

प्रकाशन :– संस्थान के पास वृहद अध्ययन एवं शोधकार्य पर आधारिता 255 प्रकाशनों का अपना विपुल भडार है।

कुछ अन्य विशेषोल्लेशनीय कार्य कलाप :– प्रारम्भिक चरण में जूनियर हाईस्कूल का राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों का निर्माण।

- शिक्षक संदर्शिका का निर्माण
- अभिक्रमायोजित अधिगम पर प्रयोग
- सूक्ष्म क्शिशण (माईक्रो टीचिंग) पर प्रयोग
- शिक्षण सामग्री का निर्माण
- मूल्यांकन पद्धति पर सुधार
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उद्भावित अनेक परियोजनाओं का संचारक्षण।
- विद्यालयीय विषयों एव अध्यापक शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम का विकास।
- विद्यालयीय विषयों के शिक्षण की अभिनव पद्धतियों की खोज।
- निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

सह पाठ्क्रमीय क्रिया–कलाप :– शिक्षा संसद के तत्वविधान में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक क्रिया कलाप आयोजित किये जाते हैं। समय–समय पर शिक्षा विदों एवं विख्यात विद्वान भाषण देने हेतु आमन्त्रित किये जाते हैं। अध्ययनकृत के अन्तर्गत

विभिन्न सामान्य विषय के रूचियों पर पत्रक-पठन के नियमित कार्य सचालित किये जाते हैं।

प्रभाव :- आरम्भ से ही यह संस्थान प्रदेशीय शिक्षा व्यवस्था के पुननिर्माण के संदर्भ में प्रभावी रहा है। संस्थान के विचार एवं परामर्श शैक्षिक जगत में समादृत हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक सगठनों और अभिकरणों में प्रतिभाग के माध्यम से यह सस्थान राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रभावित करता है। प्रदेश भर में अध्यापक शिक्षा के उच्च स्तर का अनुरक्षण करता है।

अपनी शोध परियोजनाओं, विचार गोष्ठियों कार्यशालाओं एवं अनुसंधानों की व्याख्याओं के रूप में प्रकाशनों द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों एवं प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्यापक, प्राध्यापकों में शिक्षा के अभिनव विचारों का प्रसार करता है।[1]

राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय का जन्म वर्तमान महाविद्यालय के प्रांगण में सन् 1944 में हुआ। राजकीय सी0 टी0 महिला विद्यालय बरेली से ई0 टी0 सी0 द्वितीय वर्ष की छात्राध्यापिकाओं को इलाहाबाद स्थानान्तरित कर सी0 टी0 प्रथम वर्ष प्रारम्भ कर, इस महाविद्यालय का शुभारम्भ हुआ। उस समय की प्रधानाचार्या, जिन्होंने इस संस्था का बीजारोपण किया, श्रीमती ई0 वी0 जोशी थीं।

कालान्तर में इस सस्था की प्रगति हुयी और 1948-49 के सत्र में इसे स्नातकोत्तर प्रशिक्षण के प्रवेश में, सर्वप्रथम संस्था होने का गौरव प्राप्त हुआ। प्रदेश स्तर पर यही एक ऐसा राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय है, जो स्नातक तथा, स्नातकोत्तर महिलाओं को शिक्षिकाओं में श्री जोशी ही इस महाविद्यालय की प्रधानाचार्या थीं। उनके अनवरत प्रयास अथक परिश्रम तथा दूर दर्शिता के फलस्वरूप इस प्रशिक्षण संस्था का विकास एवम् विस्तार होता गया। उस समय विद्यालय प्रांगण में ही, छात्रावास, प्रवक्ताओं तथा प्रधानाचार्य के आवास की व्यवस्था थी।[2]

1 वार्षिक पत्रिका पृ0 9
2 वार्षिक रिपोर्ट पृ0 12

समय की गतिविधियाँ सदैव नया रूप लेती रहती हैं, जिसका प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों पर पडता रहता है। यह भी इससे अछूता न रह सका। परिणामत इसे अपने लाव-लश्कर के साथ 1950 में आगरा जाना पडा। यह वहाँ दो सत्रों तक कार्य करता रहा।

जुलाई सन् 1952 में इसके प्रयाग प्रत्यावर्तन के आदेश प्राप्त हुए और यह पुन· अपने जन्म भूमि लौट आया। उस समय इसे वर्तमान केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (ई0 पी0 आई0) के छात्रावास में स्थान मिला। वहाँ से इसे शिक्षा प्रसार विभाग के कार्यालय में आश्रम मिला उस समय छात्राध्यापिकाओं को प्रवचनों के लिए केन्द्रीय पुस्तकालय जाना पडता था। सौभाग्य की बात थी। शिक्षा विभाग ने इन असुविधाओं की ओर ध्यान में रखकर इसे पुन पुरानी कार्य स्थली प्रदान की। विस्थापित एवं आश्रयहीन तथा भटकता हुआ, प्रदेश का यह प्रशिक्षण महाविद्यालय अपना अस्तित्व बनाये रहा। इसने अपने उद्देश्य शिक्षण स्तर तथा कार्य क्षमता पर किसी प्रकार भी आँच न आने दी।

भवन में आदर्श विद्यालय का प्रावधान किया गया जो 1948 में हाईस्कूल तथा सन् 1951 में इण्टर विद्यालय हो गया। 1952-53 में इसे किराये के भवन में स्थापित कर दिया गया। सन् 1954 से 1970 तक राजकीय महिला शारीरिक प्रशिक्षण विद्यालय इससे संलग्न रहा जो कि 1970 में महाविद्यालय से पृथक हो गया।[1]

यह संस्था प्रदेश की एकमात्र स्नातकोत्तरी राजकीय प्रशिक्षण महिला संस्था है। इसके शिक्षण प्रशिक्षण के मूल कार्यक्रमों में विस्तार आता गया। तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत इस महाविद्यालय में सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्राविधान किया गया। क्षेत्र में कार्य करने वाली प्राध्यापिकाओं को शिक्षा की नवीनतम प्रणालियों से अवगत करना, इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य रहा। सन् 1969 में दो वर्षो के लिए इस महाविद्यालय से महिला मगल योजना के अन्तर्गत सहायक विकास अधिकारियों (महिला) प्रशिक्षार्थियों ने एल0 टी0 सेवारत प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।[2]

---

1 वार्षिक रिपोर्ट पृ0 4
2 प्राचार्या से साक्षात्कार 7-5-98

अपनी कार्यक्षमता एव प्रगतिवादी दृष्टिकोण के कारण सन् 1962 में एक विस्तार सेवा विभाग भी सन्निहित किया गया, जिसके संचालन हेतु एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 के डी0 एफ0 एस0 विभाग द्वारा तथा राज्य द्वारा प्राप्त होता है। मार्च 1963 से राज्य सरकार ने उक्त विभाग द्वारा दिये गये अनुदान को खर्च करने की आज्ञा प्रदान की गयी। फलस्वरूप इस विभाग ने मार्च 1963 से राज्य करने की आज्ञा प्रदान की। फलस्वरूप इस विभाग ने मार्च 1964 से अपना कार्य करना प्रारम्भ किया। सन् 1965 से तीसरा विशिष्ट अंग शोध सस्थान विभाग भी इस सस्थान में प्रारम्भ हो गया। आज इस महाविद्यालय की तीनों विशिष्ट शाखाएँ-

(1) एल0 टी0 प्रशिक्षण

(2) शोध विभाग

(3) शिक्षाविस्तार सेवा विभाग अपने-अपने क्षेत्र में प्रगति कर रहे हैं।

निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर देख सन् 1970 के प्रारम्भ में इस महाविद्यालय को शासन के आदेशानुसार सुदृढीकरण का सम्मान प्राप्त हुआ। गत पच्चीस वर्षों से स्त्री शिक्षा में इस महाविद्यालय का विशिष्ट योगदान रहा है। छात्राध्यापिकाओं का बौद्धिक विकास करते हुए उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाया उनकी सामाजिक मूल्यों में आस्था उत्पन्न रहा है। यह महाविद्यालय निरन्तर प्रगति के पथ पर बढता रहे तथा समाज एव राष्ट्र की सेवा करता रहे यही हमारी कामना है।

मदन मोहन मालवीय स्टेडियम

इलाहाबाद

मदन मोहन मालवीय स्टेडियम इलाहाबाद का सबसे बडा खेल प्रशिक्षण केन्द्र हैं। इसकी स्थापना डा0 वी0 रामकृष्ण राय उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल के कर कमलों द्वारा 25 अक्टूबर 1960 ई0 को मगलवार के दिन हुयी थी। इस समय यहाँ लगभग 450 युवा खिलाडी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, जिन्हें 13 अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यहाँ, जिन खेलों का प्रशिक्षण सुलभ है वे हैं,-फुटबाल, हैण्डबाल, हाकी, एथलेटिक्स, बाली बाल, बाक्सिंग, जिमनास्टिक,

वेटलिफ्टिंग, क्रिकेट।[1] यहाँ पर 12 से 16 वर्ष के बीच प्रशिक्षार्थियों का प्रवेश होता है। यहाँ क्रिकेट में लगभग 100 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है, जो अन्य खेलों से कहीं अधिक हैं।

यहाँ छात्रावास भी है जिसमें रहने वाले प्रशिक्षार्थी से 1000 लिया जाता है, बाकी अन्य से 30 रूपये फीस के रूप में लिया जाता है। इस स्टेडियम में अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं, जिनसे खिलाडी अपनी क्षमतानुसार लाभ उठा रहे है। वर्तमान क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी श्री एम0 पी0 सिह है, जिनके निर्देशक में स्टेडिम एवं प्रशिक्षार्थी दिनों दिन प्रगति कर रहे हैं।[2]

अमिताभ बच्चन स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स

इलाहाबाद

अमिताभ बच्चन स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स की स्थापना उ0 प्र0 शासन द्वारा शहर में खेलसुविधा देने व खेलों का विकास करने के उद्देश्य से 13 जून 1975 ई0 में की थी। यहाँ बालकों को 8 से 16 वर्ष की उम्र में प्रवेश दिया जाता है।[3] हर लडके से 30 रूपये फीस ली जाती है। इस समय यहाँ पर लगभग 300 छात्र हैं जिन्हें प्रशिक्षण देने के लिए 8 अनुभवी प्रशिक्षक है। यहाँ आठ खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जो निम्नलिखित है-

(1) बास्केटबाल

(2) बालीवाल, स्क्वैस, टेनिश, जिमनास्टिक, बैडमिण्टन, टेबलटेनिश, हाकी।[4]

यहाँ पर खिलाडियों को अनेक सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता है। यहाँ से निकले अनेक खिलाडी विभिन्न खेलों में विशेष ख्याति अर्जित कर चुके हैं।[5]

---

1 आर0 एस0 ओ0 से साक्षात्कार 13-9-98
2 एक क्लर्क से साक्षात्कार 13-9-98
3 प्रशीक्षक से साक्षात्कार 6-5-98
4 प्रशिक्षार्थियों से साक्षात्कार 6-5-98
5 एक क्लर्क से साक्षात्कार 6-5-98

अध्याय- 6

संस्कृत, ईसाई व मुस्लिम शिक्षा

भारत में सस्कृत भाषा की शिक्षा प्राचीन काल से ही दी जा रही है। भारत देश जहाँ जनमन को पवित्र करने वाली, श्रेष्ठ भावों को उत्पन्न करने वाली, शब्द समूह को जन्म देने वाली देव-वाणी (सस्कृत) सुशोभित हो रही है। सभी वर्तमान साहित्यों में इसका साहित्य सर्वश्रेष्ठ और बडा समृद्ध है। यही भाषा संसार में संस्कृत नाम से भी प्रसिद्ध है। हमारे रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक ग्रन्थ, चारों वेद, सभी उपनिषदें, अठारह पुराण और अन्य महाकाव्य तथा नाटक आदि इसी भाषा में लिखित हैं। यही भाषा भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा सभी आर्य-भाषाओं की जननी मानी जाती है। संस्कृत का गौरव बहुत प्रकार के ज्ञान से युक्त है और उसकी व्यापकता किसी भी दृष्टि से ओझल नहीं है। सस्कृत के गौरव को ही दृष्टि में लाकर आचार्य-प्रवर दण्डी ने ठीक ही कहा था।[1]

'संस्कृत नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभि.।'

अर्थात-'सस्कृत को महर्षियों ने देववाणी कहा है।'

संस्कृत का साहित्य सरल एव व्याकरण सुनिश्चित है। उसके गद्य और पद्य में मनोहारिता, भाव का बोध कराने की सामर्थ्य और अनुपम श्रुति-मधुरता विद्यमान है। चरित्र निर्माण के लिए जैसी विवेचना संस्कृत-साहित्य में प्राप्त है वैसी अन्यत्र नहीं है। दया, दान पवित्रता, उदारता, ईर्ष्या न करना, श्रम और अन्य अनेक गुण इसके साहित्य के अध्ययन से उत्पन्न हो जाते हैं।[2]

सस्कृत साहित्य के आदि कवि बाल्मीकि, महर्षि व्यास, कवि कुलगुरू कालिदास और अन्य भास, भारति, भवभूति आदि महाकवि अपने श्रेष्ठ, ग्रन्थ-रूपी रत्नों से आज भी पाठकों के हृदय में विराजते हैं। यह भाषा हमारे लिए माता के समान सम्माननीय और वन्दनीय है। क्योंकि भारत माता की स्वतंत्रता, गौरव, अखण्डता और सास्कृतिक एकता को संस्कृत द्वारा ही सुरक्षित किया जा सकता है। यह संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में प्राचीनतम और श्रेष्ठ है। तो यह ठीक ही कहा गया है कि देवभाषा संस्कृत सभी भाषाओं में मुख्य, मधुर और दिव्य है।

---

1 सस्कृत के विद्वानों से साक्षात्कार 12-7-97

2 सस्कृत महाविद्यालयों प्राचार्यों से साक्षात्कार 12-7-97

प्राचीन काल से ही प्रयाग सामाजिक, राजनीतिक तथा सस्कृत शिक्षा में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जहाँ तक इलाहाबाद में सस्कृत शिक्षा के उद्‌भव का प्रश्न है, उसमें प्रामाणिक दृष्टान्त के रूप में सस्कृत का लिखित पहला महाकाव्य ऋषि बाल्मीकि जी ने जिसे पहली एव दूसरी शताब्दी के दौरान संस्कृत भाषा में रचा था। क्योकि ऋषि बाल्मीकि का आश्रम भी प्रयागराज के सिरसा घाट पर आज भी स्थित है। इससे सस्कृत भाषा की शिक्षा प्रामाणिक रूप से पहली एवं दूसरी शताब्दी में उदाहरण मिलता है।

कुछ किम्‌वदन्तियो के अनुसार भगवान श्रीराम बन जाते समय ऋषि भरद्वाज के आश्रम में आये थे तथा उनसे आज्ञा लेकर चित्रकूट जाते समय ऋंगबेर पुर में संस्कृत भाषा के विकास व शिक्षा के लिए एक आश्रम स्थापित किया था। सत्य कुछ भी हो।

गोस्वामी तुलसी दास जी के अनुसार माद्य मास के पूर्व से ही अनेक संत महात्मा ऋषि भारद्वाज के आश्रम में आया करते थे तथा कुम्भ व अर्धकुम्भ के अवसर पर देश विदेश से बडे-2 ऋषि आते थे और महीनों शिक्षण प्रवचन होता है। इस प्रकार ऋषि भारद्वाज के आश्रम में भी सस्कृत शिक्षा का प्रमाण मिलता है।

वास्तव में संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी होने के साथ अत्यन्त प्राचीन भाषा है, जिसे प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। उत्तर प्राचीन तथा मध्यकाल में उपेक्षा का पात्र होने के बावजूद भी थोड़ा बहुत राजाश्रय मिलता रहा। आधुनिक काल में भी कुछ राजाओं ने इसके शिक्षा पर ध्यान दिया, जिनके माध्यम से आज के अत्याधुनिक युग में संस्कृत शिक्षा अनेक बाधाओं से जूझते हुए पल्लवित और पुष्पित हो रही है।[1] संस्कृत विद्यालय में हिन्दी विद्यालयों से कुछ नियम भिन्न हैं, जिसमें कुछ प्रमुख हैं। संस्कृत आचार्यो के अनुसार।

अष्टमी च गुरूम् हन्ती, शिष्यम च चतुर्दशी।
अमापूर्णा द्वर्योहन्ति, प्रतिपदा पाठ वर्जएत्।।

अर्थात् प्रथमा को शास्त्रों के अनुसार पाठ नहीं करता चाहिए अष्टमी को शिक्षा देने से गुरू को क्षति होती है, चतुर्दशी को शिष्य को क्षति होती है, अमावस्या को

1 प्राचार्यो से साक्षात्कार 12-11-98

दोनों को क्षति होती है। इस प्रकार सस्कृत विद्यालय प्रथमा, अष्टमी, चतुर्दशी तथा अमावस्या को विद्यालय बद रहता है रविवार को शिक्षण कार्य चलता है।[1]

प्रथमा के अन्तर्गत 6 से 8 तक पूर्वमध्यमा में 9 व 10 उत्तर माध्यम में 11 व 12 की शिक्षा दी जाती है या समकक्ष है। शास्त्री बी0 ए0 के समकक्ष है, जिसे 3 वर्ष में पढाया जाता है, आचार्य एम0 ए0 के समकक्ष होता है, जो दो वर्ष का होता है। विद्यावारिधि–डी0 फिल0 के तथा विद्यावाचस्पति–डी0 लिट0 के समकक्ष होता है।

श्री धर्मज्ञानोपदेशः संस्कृत महाविद्यालय
महामना मालवीयनगर, प्रयाग

श्री धर्मज्ञानोपदेश· संस्कृत महाविद्यालय प्रयाग, के सस्कृत विद्यालयों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस विद्यालय में देववाणी संस्कृत की शिक्षा योग्य व कुशल अध्यापकों द्वारा प्रदान की जाती है। इस विद्यालय की स्थापना 1810 ई0 में श्री हरदेव गुरू ब्रह्मचारी जी ने की थी। यह 'क' वर्गीय विद्यालय है। महाविद्यालय को 1925 ई0 में मान्यता प्राप्त हुयी तथा डा0 संम्पूर्णनन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है। यहाँ प्रथमा से आचार्य तक छात्रों को शिक्षा प्रदान की जाती है।[2] यहाँ पर ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, वेदान्त की शिक्षा शास्त्री के अन्तर्गत तथा, व्याकरण, साहित्य तथा ज्योतिष की शिक्षा आचार्य में दी जाती है।

यहाँ विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय है तथा छात्रावास की सुविधा है, जिसमें विद्यार्थियों को आवासीय सुविधा प्रदान की जाती है। विद्यालय में कठोर अनुशासन देखने को मिलता है तथा छात्र गुरूजनों की मनसे सेवा करते हैं। महाविद्यालय को राज्य सरकार से अनुदान प्राप्त होता है। परीक्षाफल लगभग 90% रहता है। पं0 मदन मोहन मालवीय जी ने भी यही पर शिक्षा प्राप्त की थी। वर्तमान कार्यकारी प्राचार्या श्री रामखुशी त्रिपाठी जी हैं।[3]

---

1 किम्वदन्तियों के अनुसार
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-5-98
3 वही 13-5-98

श्रीसर्वार्य आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,

230, बहादुरगंज, प्रयाग

श्री सर्वाय आदर्श सस्कृत महाविद्यालय, प्रयाग, के जानेमाने पुराने व उत्कृष्ट सस्कृत शिक्षण सस्थाओं में से एक है। इसकी स्थापना 1890 ई0 में श्री नर्मदेश्वर प्रसाद उपाध्याय जी ने की थी यहॉ प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है। यह 'क' वर्गीय महाविद्यालय है। यहाँ प्रधान विषय शास्त्री के लिए साहित्य, व्याकरण तथा आचार्य के लिए साहित्य व्याकरण ही है। यहाँ 8 प्राध्यापक तथा 150 विद्यार्थी हैं, जिनमें से 40 विद्यार्थियों को नि शुल्क आवासीय सुविधा सहित छात्रावास मिला है। विद्यालय में देश के विभिन्न प्रान्तों से विद्यार्थी संस्कृत शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। विद्यालय में छात्रों को कठोर अनुशासन में रखा जाता है तथा विद्यार्थियों के हृदय में गुरूजनों के प्रति असीम श्रद्धा देखने को मिलती है। विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय है, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं, जिनसे छात्र लाभान्वित होते हैं। विद्यार्थियों को अच्छे अक प्राप्त करने पर छात्रवृत्ति भी राज्यसरकार द्वारा मिलती है।[1] महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य श्री सीताराम पाठक तथा वर्तमान प्राचार्य श्री मार्कण्डेय नारायण शुक्ल हैं।[2]

श्री हरिराम गोपालकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, प्रयाग

श्री हरिराम गोपालकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, सस्कृत महाविद्यालय, संस्कृत शिक्ष के क्षेत्र में प्रमुख स्थान प्राप्त कर चुका है। इस महाविद्यालय की स्थापना राजागणेश प्रसाद ने 1818 ई0 में की थी। यहाँ प्रथमा से आचार्य तक शिक्षा दी जाती है मुख्य विषय के रूप में व्याकरण साहित्य, पुराण, न्याय की शिक्षा दी जाती महाविद्यालय को 1955 ई0 में मान्यता प्राप्त हुई। इस समय कुल 250 छात्र शिक्ष ग्रहण कर रहे हैं। जिसमें 40 को आवासीय सुविधा विद्यालय कर रहे हैं। जिसमें 4(को आवासीय सुविधा विद्यालय की ओर से मुफ्त दी जाती हैं। ये प्रायः 85%

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 14-5-98

2 उप प्राचार्य से साक्षात्कार 14-5-98

परीक्षाफल प्राप्त करते हैं।[1] महाविद्यालय में समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें हजारों पुस्तकें विद्यमान है। मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति भी मिलती है। यह विद्यालय भी डा0 संम्पूर्णनन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध है।[2] वर्तमान कार्यवाहक प्राचार्य श्री वेदमणि मिश्र जी हैं।

श्री रामदेशिक संस्कृत महाविद्यालय,
श्री वैष्णवाश्रम, दारागंज,
प्रयाग

भगवान श्री वेंकटेश जी के अनुग्रह से आषाढ शुक्ल 6 संवत् 1991 तदनुसार दिनाक 18 जुलाई सन् 1934 को "परमार्थ भूषण" श्री 108 महन्थ गोविन्दाचार्य जी महाराज महन्थ देवराज नगर रीवाँ, सतना तथा संस्थापक एवं संचालक श्री वैष्णवाश्रम, दारागंज, प्रयाग ने बैकुण्ठवासी श्री 108 श्री स्वामी रामप्रपन्नचार्य, श्री महन्त जी महाराज देवरा रींवाँ की पुण्य स्मृति में संस्कृत सांहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से अपने आश्रम में ही श्री रामदेशिक संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की थी, जो सम्प्रतिराज मान्यता प्राप्त प्रथम श्रेणी 'क' वर्ग का विद्यालय है।[3] इस समय इसमें न्याय, व्याकरण, साहित्य, वेद, वेदान्त, ज्योतिष-कर्मकाण्ड की आचार्य तक पढाने एव परीक्षाओं को दिलाने की मान्यता प्राप्त है और आयुर्वेद पढ़ाने की भी व्यवस्था है। सभी छात्रों को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है और 60 को छात्रवृत्ति एवं निवास स्थान श्री वैष्णवाश्रम की ओर से दिया जाता है।

विद्यालय भवन अतिविशाल है, जो श्री वैष्णवाश्रम से मिला तथा निर्मित है। सरकार ने भी समय-समय पर भवन हेतु अनुदान दिया है।[4] अभी भी वैष्णवाश्रम में ही छात्रवृत्ति तथा भोजन पाने वाले छात्रों के निवास की व्यवस्था है, किन्तु अब वह भी पर्याप्त नहीं है। अत· वृहत् छात्रावास बनाने की योजना है। छात्रावास का अनुमानित व्यय लगभग 10,0000 रु0 है। सरकार व दानी ट्रस्टों के ध्यान देने से

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 3-6-97
2 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 3-3-97
3 श्री रामदेशिक सस्कृत महाविद्यालय पत्रिका पृ0 3
4 वही पृ0 5

यह कार्य पूर्ण होगा। पुस्तकालय महाविद्यालय का एक अभिन्न अग है जिसमें अधिकाश संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी की पुस्तकें हैं। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकार से समय-समय पर अब तक 5875 रूपये का अनुदान पुस्तकों के लिए प्राप्त हुआ है। सन् 1971 ई0 में भी केन्द्रीय सरकार ने 2000, प्रातीय सरकार से 250 रूपये पुस्तकालय के निमित्त प्राप्त हुआ था। सम्प्रति पुस्तकालय में लगभग 5000 पुस्तकें हैं।

प्रथम राजकीय सस्कृत कालेज परीक्षा बनारस तथा सन् 1958 ई0 से वाराणसेय सस्कृतविश्वविद्यालय वाराणसी से निम्नलिखित विषयों तथा परीक्षाओं के लिए मान्यता प्राप्त है। प्रथमा, मध्यमा परीक्षा-स्वी0 दिन-18-8-1934 निरीक्षक संस्कृत पाठशालाएँ उत्तर प्रदेश बनारस।

व्याकरणा-चार्य परीक्षा	- स्वीकृत सं0 आर0 245/2 4 दिसम्बर
साहित्यशास्त्री परीक्षा	- बनारस अक्टूबर 7 सन् 1950 ई0
वेदान्तशास्त्री	- रजिस्टार गनर्वमेण्ट संस्कृत कालेज परीक्षाएँ बनारस
ज्योतिष शास्त्री परीक्षा	- स्वी0 सं0-आर0 1676 दो 2/4 दिसम्बर 3-10-1953 ई0।
साहित्याचार्य परीक्षा	- स्वीकृत संख्या जी0 1672/1720, 63 दिसम्बर 22-12-1973 ई0
वेदान्ताचार्य परीक्षा	- 3085/1720/61 दिसम्बर-25-11-68

आरम्भ से ही मध्यमा तथा परीक्षाओं की मान्यता एवं सम्बन्ध गवर्नमेंट संस्कृत कालेज परीक्षा बनारस से रहा और सन् 1958 में जब वह वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में परिणित हो गया। तब महाविद्यालय का सम्बन्ध एवं परीक्षाओं की मान्यताएँ विश्व विद्यालय के साथ है।[1] प्रारम्भ में यहाँ केवल 150 छात्र थे। आज यहाँ 200 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रान्तीय छात्रवृत्ति 15, 30, 40, 50 है। छात्रों के भोजन की व्यवस्था मुख्य सचालक देवरा-प्रयाग न्यास परिषद द्वारा संचालित श्री वैष्णवाश्रम, दारागंज प्रयाग छात्रों के भोजन की व्यवस्था करता है।

वर्तमान प्राचार्य श्री भागवत प्रसाद शर्मा जी हैं तथा वर्तमान संचालक-महन्त हरिप्रयन्नचार्य वेदान्ती तथा श्री देवनारायण शोकहा जी प्रबन्धक है।[2]

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-5-98
2 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 13-5-98

श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय,

दारागंज,

प्रयाग

महर्षि भरद्वाज की तपोभूमि प्रयाग नगरी में वर्तमान संस्कृत शिक्षा के विकास में सलग्न श्री त्रिवेणी सस्कृत-महाविद्यालय की स्थापना श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय के सदस्यों द्वारा 1907 में की गयी थी। 1981 से यह 'क' वर्गीय महाविद्यालय है, यहाँ प्रथमा से आयार्च पर्यन्त शिक्षा दी जाती है। छात्रों के लिए आवासीय सुविधा के साथ छात्रावास की सुविधा भी प्रदान की जाती है। इस समय महाविद्यालय में 150 छात्र है, जिन्हें 6 अनुभवी अध्याकों द्वारा शिक्षा दी जाती है। यहाँ प्रमुख विषय के रूप में साहित्य और व्याकरण की शिक्षा दी जाती है। यह महाविद्यालय 1927 ई0 से डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है। 1927 से ही मान्यताा मिली और राज्य सरकार से अनुदान मिलना प्रारम्भ हो गया।[1]

महाविद्यालय भवन छात्रों अध्यापकों के लिए पर्याप्त है, किन्तु भवन को जो जीर्णोद्धार की आवश्यकता है, किन्तु पैसे की कोपी व्यवस्था नहीं है। विद्यालय पुस्तकालय भवन अत्यन्त छोटा है, पुस्तकालय समृद्ध है लेकिन छत के कमजोर होने से पुस्तकों की सुरक्षा संदिग्ध है। विद्यालय के बगल निवास करने वाले व्यक्तियों ने विद्यालय की थोडी बहुत जमींने भी कब्जा कर ली हैं, किन्तु विषम परिस्यिति में भी संस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सलग्न है। श्री त्रिवेणी संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री गंगा प्रसाद शुल्क व उपप्राचार्य श्री रमेश चन्द्र शुक्ल जी हैं।[2]

सौदामिनी संस्कृत महाविद्यालय

149, विवेकानन्द मार्ग

प्रयाग

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 3-5-98

2 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 3-5-98

सौदामिनी सस्कृत महाविद्यालय प्रयाग के सस्कृत महाविद्यालयों में अपना अलग-अलग स्थान रखता है। यह महाविद्यालय 1925 ई0 में श्रीमती सौदामिनी देवी के द्वारा सस्कृत शिक्षा के विकास के लिए स्थापित किया गया था, जो अपने उद्देश्य में पूरी तरह से सफल हुआ। प्रारम्भ में यहाँ छात्रों की संख्या अधिक थी, किन्तु आज के वातारण में रोजगार के अवसर की कमी के कारण सस्कृत शिक्षा ग्रहण करने वालों की सख्या भी घटी है। वर्तमान समय में विद्यालय में 125 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिसमें से 35 छात्रों को छात्रावास की सुविधा प्राप्त है, जो नि शुल्क है। यहाँ प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है, जिसमें प्रमुख विषय, व्याकरण और साहित्य है। इस समय 6 अध्यापक शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

प्रारम्भ में महाविद्यालय में मुख्य रूप से वेद की शिक्षा दी जाती थी, किन्तु बाद में जब से महाविद्यालय डा0 सम्पूर्णा नन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध हुआ तब से यहाँ सामान्य पाठ्यक्रम पढाया जाने लगा जो विश्वविद्यालय के अनुसार है। महाविद्यालय में समृद्ध पुस्तकालय है, जिसका लाभ सभी छात्र उठाते है। विद्यालय भवन सुन्दर व विशाल है तथा प्रध्यापक छात्रों को प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा स्पष्ट व सरल ढ़ग से देते है, जिसका परिणाम है कि महाविद्यालय का परीक्षाफल लगभग 90% रहता है।[2] महाविद्यालय के प्रथम प्राचार्य पं0 जय किशोर झा तथा वर्तमान प्राचार्य पं0 दयाशंकर मिश्र श्री हैं।[3]

महानिर्वाणी संस्कृत महाविद्यालय, दारागंज, इलाहाबाद

महानिर्वाणी संस्कृत महाविद्यालय प्रयाग में अनेकों वर्षो से संस्कृत शिक्षा के प्रचार प्रसार में निरन्तर सलग्न है। इस महा विद्यालय की स्थापना प्रारम्भ में हरिद्वार में हुयी थी, किन्तु वहाँ अनुकूल परिस्थिति न होने के कारण संस्थापकों ने निर्णय लिया कि इस महाविद्यालय को त्रिवेणी के पावन तट पर स्थापित किया जाय, समयान्तराल के साथ श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी ने 1910 ई0 में इसकी

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 5-8-98
2 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 5-8-98
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 5-8-98

स्थापना प्रयागराज के पावन भूमिपर की। यह महाविद्यालय आज प्रथमा से आचार्य पर्यन्त शिक्षा प्रदान कर रहा है, तथा डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध हैं। महाविद्यालय को बहुत सघर्ष करना पडा तथा 1969 में सरकार से मान्यता मिली तथा आर्थिक सहायता भी मिलने लगी। आज यहाँ 80 छात्र तथा 8 अध्यापक हैं। परीक्षाफल लगभग 90 प्रतिशत रहता है।[2]

यहाँ छात्रों को ईधन, भोजन आवास तथा छात्रवृत्रि जो निम्न प्रकार है, उ0 म0 35, शास्त्री 40 आचार्य 45। ये छात्रवृत्ति अखाड़े की तरफ से मिलती है। भोजन इत्यादि भी अखाडे की तरफ से ही मिलता है। 1972-73 में डा0 सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बन्ध होने से पहले वाराणसी सस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध था। महाविद्यालय में वृहद पुस्तकालय है, जहाँ विभिन्न भाषाओं की हजारों पुस्तकें हैं, जिससे छात्र लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यालय की विशेषता है कि यहाँ जर्मन विद्वानश्री पोलथीमी ने 1933-34-35 में अध्यापन कार्य किया। तथा श्री क्षेमेद्र चट्टोपध्याय भी इससे सम्बद्ध रहे है। वर्तमान प्राचार्य डाँ0 सुन्दरलाल द्विवेदी जी है, जो अनुशासन पर विशेष ध्यान देते हैं तथा पसन्द करते हैं।[3]

श्री ज्योतिष्पीठ संस्कृत महाविद्यालय
शंकराचार्य आश्रम, अलोपीबाग,
प्रयाग

श्री ज्योतिष्पीठ संस्कृत महाविद्यालय प्रयाग के संस्कृत महाविद्यालयों में अपना सर्वोच्च स्थान बनाये हुए है। इस विद्यालय की स्थापना 1944 में श्री ज्योतिष्पीठोद्धारक, जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी बह्मानन्द सरस्वती महाराज ज्योतिर्मठ बद्रिकाश्रम (हिलालय) संस्था द्वारा ज्योतिर्मठ में संस्कृत शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए हुयी थी किन्तु अनुकूल स्थिति न होने के कारण बाद में प्रयाग राज श्री शंकराचार्य आश्रम में स्थापित किया गया। इस समय यह 'क' वर्गीय महाविद्यालय है। यहाँ प्रथमा से आचार्य पर्यन्त शिक्षा प्रदान की जाती है, जिसमें प्रमुख विषय न्याय,

---

1 महाविद्यालय विवरण पत्रिका पृ0-8
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-5-98
3 एक प्रध्यापक से साक्षात्कार 14-5-98

व्याकरण, ज्योतिष, वेदान्त की शिक्षा दी जाती है। इस समय 85 छात्र तथा 11 अध्यापक है, जो अत्यन्त विद्वान व अनुभवी हैं। छात्रों को छात्रावास की सुविधा है साथ में भोजन, चिकित्सा की सुविधा आश्रम की तरफ से है तथा मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति की भी सुविधा है। विद्यालय में अनुशासन का अनुपम उदाहरण देखने को मिलता है।[1]

महाविद्यालय में पुस्तकालय कक्ष में विभिन्न भाषाओं की हजारों पुस्तकें हैं, जिनसे छात्र लाभान्वित होते है। महाविद्यालय भवन शकराचार्य आश्रम के अन्दर है, जो अत्यन्त विशाल है तथा छात्रों की आवश्यकता से अधिक है। बाबा विश्वनाथ जी की कृपा से छात्रों का परीक्षा फल अच्छा व संतोष जनक न होकर सर्वश्रेष्ठ रहता है। वर्तमान प्राचार्य श्री रामफेर शुक्ल जी हैं।

शिवशर्मा संस्कृत महाविद्यालय दारागंज, प्रयाग

शिवशर्मा संस्कृत महाविद्यालय दारागज में स्थित है तथा 'ख' वर्गीय विद्यालय होते हुए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रयाग की पावन भूमि पर संस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार में समर्पित इस महाविद्यालय की स्थापना 12 जुलाई, 1925 ई0 में स्व0 उदारमना महामहोपाध्याय पं0 आदित्य राम भट्टाचार्य जी ने की थी ये पं0 महामना मदन मोहन मालवीय जी महाराज के गुरूदेव थे।

वर्ष 1981-1982 में प्रथमा से आचार्य तक की मान्यता मिली। प्रारम्भ में यहाँ केवल उत्तर मध्यमा तक शिक्षा दी जाती थी, किन्तु बाद में यहाँ आचार्य तक शिक्षा दी जाने लगी। वर्तमान समय में यहाँ प्रथमा से आचार्य तक शिक्षा दी जाती है। सन् 1925-26 में व्याकरण से आचार्य 1931-32 में साहित्य में शास्त्री की स्थाई मान्यता प्राप्त हुयी इसके अतिरिक्त इस महाविद्यालय को पुराण, इतिहास में आचार्य की मान्यता प्राप्त हुयी है।[2]

---

1 विद्यालय नियमावली पृ0 7

2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-6-97

यह 'ख' वर्गीय महाविद्यालय है। यहाँ के प्रथम प्राचार्य पं0 शेषमणि मिश्र व्याकरण साहित्याचार्य थे। वर्तमान प्राचार्य राष्ट्रपति पुरस्कृत डा0 जगत् श्याम ब्रह्मचारी, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, आचार्य गौडीय वस्नव, दर्शनाचार्य, विद्यावारिधि जी हैं।

इस महाविद्यालय का परीक्षा से सम्बन्ध डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से है तथा स्वर्गीय भट्टाचार्य जी के सकल्प के अनुसार इस महाविद्यालय का ट्रस्ट है। अत इसलिए यहाँ के प्रधान अध्यक्ष हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति जी हैं। वर्तमान प्रबन्धक श्री हरिमोहन दास टण्डन जी हैं।[1]

प्रारम्भ में महाविद्यालय में छात्रों की संख्या अत्यधिक थी, किन्तु आज 95 छात्र यहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिनको दो अध्यापक शिक्षा दे रहे हैं। महाविद्यालय में कुल 5 पद हैं तीन पद रिक्त हैं। महाविद्यालय को अनुदान उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राप्त होता है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ही 45 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वाले छात्रों को छात्र वृत्ति प्रदान की जाती है जो निम्नलिखित है-

प्रथमा उत्तीर्ण-10 रू0

पू0 म0 उत्तीर्ण- 16 रू0

उ0 म0 उत्तीर्ण- 30 रू0

शास्त्री उत्तीर्ण- 40 रू0

1997 ई0 में 14 छात्रों को छात्रवृत्ति मिलती है तथा इस छात्रावास में उड़ीसा, (उत्कल) बिहार, मध्य प्रदेश, नेपाल तथा आसाम के छात्र, तथा सुदुरवर्ती छात्र शिक्षा ले रहें। हैं। परीक्षा फल 1997 का 94 प्रतिशत है। महाविद्यालय में एक उत्कृष्ट पुस्तकालय भी विद्यमान है तथा अनुशासन में छात्रों को रखा जाता है। इसके अतिरिक्त प्रबन्धक कमेटी द्वारा संचालित प्रवेशिका कक्षाएँ 1-7 तक के लिए श्री श्यामागिनी देवी स्मारक बालिका विद्यालय 1965 में स्थापित हुआ, जो संस्कृत भाषा की प्रचार प्रसार की दृष्टि से आचरण एवं भारतीय संस्कृति के पोषक स्वरूप अध्यापकों द्वारा अध्ययन व अध्यापन कार्य होता है।

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-7-98

वेदभवन संस्कृत महाविद्यालय,
श्रृंगेरीमठ, अलोपीबाग, प्रयाग

संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार तथा वेदपाठ को नवजीवन प्रदान करने के उद्देश्य से हिन्दू धर्म तथा शिक्षा के कर्णधार श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, श्री कन्हैयालाल मिश्रा जो गीतावाटिका तथा कल्याण पत्रिका के सम्पादक हैं। तथा भूतपूर्व राज्यपाल उड़ीसा श्री विश्वनाथ दास, आय्यंगार मन्तूराम जयपुरिया आदि महा पुरूषों ने बद्रीनाथ में ट्रस्ट स्थापित किया, जिसका नाम, ''भारतीय चतुर्धाम वेदभवन न्यास'' रखा।

प्रारम्भ में बद्रीनाथ में संस्कृत वेद विद्यालय खोलने की योजना थी, किन्तु बाद में यह इलाहाबाद में आयी। भारत के अनेक शहरों में आदि शंकराचार्य जी द्वारा वेद विद्यालयों की स्थापना की गयी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भी संस्कृत शिक्षा तथा वेद प्रचार के लिए, ''महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान,'' की स्थापना की, जिसका अनुदान मानव संसाधन मंत्रालय से आता है।[1]

इस महाविद्यालय की स्थापना 1971 ई0 में 'भारतीय चतुर्धाम वेदभवन व्यास' द्वारा हुयी। इस समय यहाँ प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है, जिसमें प्रमुख विषय, साहित्य, व्याकरण, तथा देव है। आचार्य स्तर पर वेद की शिक्षा जाती है, जिसमें उच्चारण पर विशेष बल दिया जाता है।[2] यह विद्यालय 'घ' वर्गीय है तथा इसमें 90 छात्र हैं, जिनमें 26 को आवास तथा 25 को भोजन पानी आवास सारी सुविधा मुफ्त दी जाती है।

पूरे इलाहाबाद में यहीं ऐसा विद्यालय है, जहाँ चारों वेदों की शिक्षा दी जाती है। यहाँ वेद ऋचाओं के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता है यही कारण है कि परीक्षाफल 90 प्रतिशत से 95 प्रतिशत तक रहता है। परीक्षा के लिए यह महाविद्यालय डा0 संस्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध है। इस महाविद्यालय में एक पाठशाला भी है, जो वेद की शिक्षा के लिए योग्य नये छात्रों को तैयार करती है, जिसका नाम,– ''भारतीय चतुर्धाम वेदभवन् वेद पाठशाला'' है।

---

1. प्राचार्य से साक्षात्कार 13-5-98.
2. विद्यालय नियमावली पृ0 3.

इसमे छात्रो को प्रथमा के योग्य बनाया जाता है। वेदभवन महाविद्यालय 10 से 4 तथा प्रात कालीन 7 से साढे 11 तक चलता है यह दोपाली में चलता है। यहाॅ देश के अनेक भागो नेपाल, समेत समस्त भागों से अध्यापक व विद्यार्थी आते है, जिनका ब्राह्मण होना अनिवार्य है।[1] इस महाविद्यालय में एक वृहद पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न भाषाओं की हजारो पुस्तकें विद्यामान है। विद्यालय भवन सुन्दर व उत्कृष्ट है। विद्यार्थियों को अनुसासन मे रखते हुए खेलकूद के लिए पर्याप्त मैदान हैं महा विद्यालय के प्रथम प्राचार्य श्री राम जी पाण्डेय दूसरे श्री रामेन्द्रनाथ त्रिपाठी तथा तीसरे व वर्तमान प्राचार्य श्रीराजाराम घुले जी है।[2]

श्री हर्ष सावित्री संस्कृत महाविद्यालय
11, बक्शी कला,
दारागंज, प्रयाग

इस महाविद्यालय की स्थापना श्री हर्ष जीब्रह्मचारी ने संवत् 1981 भाद्रकृष्ण पक्ष 5 मंगलवार को की थी। यह 'घ' वर्गीय विद्यालय हैं इस समय यहाँ प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती है।[3] यहाँ मुख्य विषय साहित्य व व्याकरण है। यहाँ छात्रावास की सुविधा है। इस महाविद्यालय में कुल 150 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ छात्रों को छात्रवृत्ति योग्यता के आधार पर दी जाती है। इस समय 2 प्राध्यापक है तथा 3 पद रिक्त है। महाविद्यालय भवन अत्यन्त जीर्ण शीर्णव जर्जर अवस्था में है, जिसे जीर्णोद्धार या पुनर्निमाण की आवश्यकता है।[4]

वर्तमान कार्यकारी प्राचार्य श्री रामगोपाल त्रिपाठी जी है, जो महाविद्यालय के पुस्तकालय की देखरेख बड़ी सजगता से कर रहे हैं, विद्यालय में पुस्तकें अधिक हैं किन्तु सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है।

---

1 विद्यालय नियमावली पृ0 13
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 15-5-98
3 प्राचार्य से साक्षात्कार 17-7-97
4 प्रध्यापकों से साक्षात्कार 17-7-97

श्री किशोरी लाल वेणीमाधव संस्कृत महाविद्यालय, नया बैरहना प्रयाग

श्री किशोरी लाल बेणीमाधव संस्कृत महाविद्यालय प्रयाग के प्राचीनतम् संस्कृत महाविद्यालयों में से एक है, किन्तु इस समय यहाँ का भवन गिर चुका है लगभग दो कक्षा बची हुयी है पढाई की व्यवस्था अस्तव्यस्त है, किसी तरह विद्यालय चलरहा है। छात्रावास की व्यवस्था न होने के कारण छात्रों की संख्या अत्यल्प है। इस विद्यालय की स्थापना 1905 ई0 में हुयी थी। यह 'घ' वर्गीय विद्यालय है। यहाँ प्रथमा से आचार्य तक की शिक्षा दी जाती हैं इसकी परीक्षा सम्बद्धता डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय, वाराणसी से है। यहाँ मुख्य विषय के रूप में, व्याकरण साहित्य शास्त्र तथा ज्योतिष की शिक्षा दी जाती है।[1]

इस समय यहाँ 40 छात्र है तथा अध्यापक के लिये 5 पद है, जिनमें 2 अध्यापक कार्यरत व 3 रिक्त हैं। यहाँ परीक्षाफल 1997 में 90 प्रतिशत रहा है। विद्यालय पुस्तकालय भी अत्यन्त दयनीय दशा में है।[2] वर्तमान प्राचार्य डा0 कृष्णमोहन शुक्ल जी हैं।

बैकुण्ठ संस्कृत विद्यापीठ–श्री बैकुण्ठधाम अलोपीबाग, प्रयाग

यह विद्यालय संस्कृत शिक्षा के प्रचार प्रसार में वर्षो से संलग्न है, जिसकी स्थापना 1969 ई0 में श्री निवासाचार्य विद्वान जी ने की थी, इस विद्यालय की परीक्षा संम्बद्धता डा0 सस्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से है तथा 1979 ई0 में मान्यता प्राप्त हुयी थी।[1] इस समय महा विद्यालय में 50 छात्र है। जिसमें से 15 को भोजनपानी छात्रावास नि:शुल्क प्रदान की जाती है। छात्रों को शिक्षा दे रहे अध्यापकों की संख्या 4 है।

---

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-7-98

2 प्राध्यपकों से साक्षात्कार 13-7-98

ˆ प्राचार्य से साक्षात्कार 12-3-98

विद्यालय में पुस्तकालय की सुविधा है तथा यहाँ प्रथमा से उत्तरमध्यमा तक शिक्षा दी जाती है परीक्षाफल 1997 में 95 प्रतिशत रहा है। वर्तमान प्राचार्य श्री दयाशकरर पाण्डेय जी हैं।[1]

श्री महन्थ विचारानन्द गिरि संस्कृत महाविद्यालय, दारागंज, प्रयाग

इस महाविद्यालय की स्थापना 1963 ई0 में श्री विचारानन्द गिरि के कमलवत् हाथों से हुयी। इस विद्यालय के कार्यकर्ताओं के सतत् सघर्ष एवं परिश्रम के परिणामस्वरूप सन् 1964-65 में मान्यता प्राप्त कर सका। यह विद्यालय प्रथमा से उत्तर मध्यमा तक चलता है। इसमें प्राचीन गुरूकुल पद्धति से शिक्षा दी जाती है तथा वह सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं। विद्यार्थी को भोजन तथा शिक्षा निःशुल्क मिलती है। इस समय कुल 50 विद्यार्थी हैं, जिन्हें छात्रावास की भी सुविधा है।[2]

यह विद्यालय डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है। इस विद्यालय के वर्तमान प्रधानाचार्य श्री रामसुन्दर पाण्डेय जी हैं। यहाँ एक वृहद पुस्तकालय भी है। यहाँ अनुशासन का अति सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है। छात्र गुरूदेव की आज्ञा का पालन करते हैं तथा गुरूदेव का सम्मान प्राचीन भारतीय मर्यादा के अनुसार करते हैं। इस प्रकार अंग्रेजी भाषा की आधुनिकता के युग में संस्कृत के प्रचार में संघर्ष करता हुआ विद्यालय, "श्री महन्थ विचारानन्द गिरि संस्कृत महाविद्यालय, दारागंज, प्रयाग।[3]

श्री भागवत देशिक संस्कृत महाविद्यालय दारागंज, प्रयाग

इस विद्यालय की स्थापना 1964 ई0 में स्व0 श्री विष्णुदत्त गर्ग जी थे तथा सरक्षक श्री स्वामी रघुनाथाचार्य जी हैं। प्रथम प्राचार्य श्री शम्भूनाथ त्रिपाठी जी थे। इस विद्यालय में प्रथमा से उत्तर मध्यमा तक शिक्षा दी जाती है। यह 'घ' वर्गीय विद्यालय

---

1 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 12-3-98

2 प्राचार्य से साक्षात्कार 6-3-98

3 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 6-3-98

है इसमे 60 छात्र हैं, जिसमें से 20 को आवास, भोजन नि शुल्क मिलता है तथा 1976 मे मान्यता उत्तर मध्यमा तक की मिली है। परीक्षाफल 80 प्रतिशत से 85 प्रतिशत तक रहता है।[1]

श्री हनुमत् संस्कृत महाविद्यालय,
श्री रामबाग, प्रयाग

श्री हनुमत् सस्कृत महाविद्यालय प्रयाग के 'घ' वर्गीय सस्कृत महाविद्यालयों में अपना उत्कृष्ट स्थान रखता है। इस विद्यालय की स्थापना श्री गजाधर प्रसाद भार्गव ने सितम्बर 1969 में की थी। इसके प्रथम प्राचार्य प0 बाबूराम उपाध्याय थे एवं वर्तमान प्राचार्य प0 दयाशंकर त्रिपाठी जी हैं। इस समय यहाँ 108 छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिनमें से 50 छात्र आवासीय सुविधा के साथ छात्रावास में रहते हैं।[2] यहाॅ प्रथमा से शास्त्री तक की शिक्षा दी जाती है। 28 फरवरी 1976 को इसे डा0 संम्पूर्णनन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से मान्यता तथा राज्य सरकार से अनुदान भी मिलने लगा। फरवरी 1970 को साहित्यशास्त्र तथा व्याकरण की मान्यता प्रथमा से शास्त्री तक की है। पुस्तकालय की सुविधा के साथ-2 अनुशासन की दृष्टि से अतिउत्तम महाविद्यालय है तथा परीक्षा 90 प्रतिशत से 95 प्रतिशत तक रहता है।[3]

महर्षि वेद विज्ञान विद्यापीठ
इलाहाबाद

यह विद्यालय अपने में अनुपम, अद्वितीय व अलौकिक है। यह पूर्णरूप से संस्कृत महाविद्यालय है। यहाँ पर छात्रों को पाँचवीं कक्षा के बाद शिक्षित किया जाता है। इसकी स्थापना 1989 में कुम्भमेला के अवसर पर जनवरी में पूज्यपाद श्री महेशयोगी द्वारा किया गया था। यह 'महर्षिवेद विज्ञान विद्यापीठ, महार्षिनगर (नोवेडा) गाजिया बाद से सम्बद्ध है। इलाहाबाद के अरैल तहसील में इसका प्रधान विश्वविद्यालय है।

1 प्राचार्य से साक्षात्कार 2-4-98
2 प्राचार्य से साक्षात्कार 13-2-98
3 प्राध्यापकों से साक्षात्कार 13-2-98

यहाँ प्रधान विषय के रूप मे में वेद की शिक्षा दी जाती है। इस महाविद्यालय मे छात्रो को गुरूकुल पद्धति से वेद का सम्यक ज्ञान दिया जाता है। यहाँ केवल ब्राह्मण छात्रो को ही प्रवेश मिलता है तथा वैदिक रीति से छात्रों को वेद की शिक्षा दी जाती है।[1]

अनुपनीत कक्षाएँ-यह महाविद्यालय अपने नियम के अनुसार अनुपनीत कक्षा के द्वारा एक वर्ष में बच्चों को सामान्य जानकारी तथा वेद पाठ से पहले ब्राह्मण बालक का उपनयन सस्कार किया जाता है। यह एक वर्ष का होता है।[2] रूद्री कक्षाएँ-इस कक्षा के द्वारा विद्यार्थी को चारों वेदों के पॉच-पाँच सूक्त पढने होते हैं। तथा इससे यह ज्ञात किया जाता है, कि छात्र की रूचि किस वेद में है। यह कक्षा भी एक वर्ष की होती है।[3] संघिता कक्षाएँ-अब इस कक्षा के माध्यम से छात्रों को एक वेद में पारगत किया जाता है। तथा यह कक्षा स्नातक स्तर की होती है तथा 4 वर्ष तक चलती है।[4]

प्रयोगात्मक कक्षाएँ-अब छात्रों को पुनः एक वर्ष की प्रयोगत्मक कक्षा के माध्यम से यज्ञ अनुष्ठान तथा संकल्प सिद्धि की विधि बताई जाती है। इस प्रकार 18 वर्ष तक शिक्षा के उपरान्त विद्यार्थियों को पूरी तरह से दक्ष बनाया जाता है। इसके बाद यहीं पर रोजगार भी दे दिया जाता है।

इस समय यहाँ 70 अध्यापक तथा 1000 विद्यार्थी हैं। इन सभी को आवास, चिकित्सा, भोजन वस्त्र, छाव्रवृत्ति महाविद्यालय की ओर से प्राप्त होती हैं इस महाविद्यालय के रजिस्टार (कुलसवि) श्री गोविन्द उपाध्याय तथा प्राचार्य श्री तिलकधारी शुल्क जी हैं।[5]

---

1 विद्यालय वार्षिक पत्रिका पृ0 5
2 वही पृ0 6
3 वही पृ0 7
4 विद्यालय नियमावली पृ0 13
5 प्राचार्य से साक्षात्कार 12-8-97

इलाहाबाद मे अंग्रेजी शिक्षा का इतिहास अत्यधिक पुराना है, क्यो कि सयुक्त प्रात की राजधानी होने के कारण अंग्रेज अधिकारियो के यहाँ रहने के कारण मिशनरियो की भी स्थापना हुयी, तथा मिशनरियो के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षा हमेशा विकास के पथ पर अग्रसर रही। प्रारम्भिक समय मे अंग्रेजी शिक्षा का प्रकार केवल उच्च वर्ग मे था किन्तु धीरे-धीरे समाज के सभी वगो ने इसे प्राप्त करने व जानने का प्रयत्न किया। यही कारण है कि आज इलाहाबाद मे मिशनरियो के अलावा अनेक प्राइवेट अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय है, जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। प्राइवेट अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने वाले अनेक विद्यालयो के उदाहरण हैं, जिसमें प्रमुख रूप से, टैगोर पब्लिक स्कूल, महर्षि पतंजलि विद्या मन्दिर, एम0 एल0 कानवेण्ट तथा डायमण्ड जुबली विद्यालय का नाम लिया जा सकता है।

आज समाज मे अंग्रेजी शिक्षा अति आवश्यक है। इसलिए शहर के अधिकांशत बच्चे अंग्रेजी माध्यम से पढना चाहते हैं, अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्रदान कर रहे मिशनरियों द्वारा अनेक विद्यालय हैं, जिनमें प्रमुख रूप से बी0 एच0 एस0, जी0 एच0 एस0, विशप जासन स्कूल एण्ड कालेज तथा सेण्ट मेरीज कानवेण्ट व सेण्ट जोसेफ कालेज का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसलिए शहर के अंग्रेजी शिक्षा के विकास के बारे में जानने के लिए इन विद्यालयो के विकास की जानकरी प्राप्त कर लेना आवश्यकता है।

वास्तव मे पिछले 50 वर्षों का शिक्षा का विकास देखने से यह पता चलता है कि बदलते समय के साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा का महत्व बढ़ा है। बालक ही नहीं अंग्रेजी शिक्षा में बालिकाओं ने भी अभूतपूर्व रूचि दिखाई है। इसी कारण अनेक विद्यालयो में सह शिक्षा व्यवस्था है। अंग्रेजी शिक्षा का विकास जानने के लिए शहर के कुछ महत्वपूर्ण अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयो का सर्वेक्षण प्रस्तुत है।

अध्याय- 7

उपसंहार

शिक्षा समाज के सर्वागीण विकास का सशक्त माध्यम है, जिससे मनुष्य अपने को परिवर्तनशील वातावरण में समायोजित करने में सक्षम होता है। शिक्षा के द्वारा वह सामाजिक उत्तरदायित्वों स्वस्थ परम्पराओं का स्वीकरण तथा जीविकोयार्जन के उत्कृष्ट मूल्यों के प्रति यथार्थ दृष्टि रखने में सक्षम होता है। राष्ट्र एवं समाज के उन्नयन के लिए सभी व्यक्तियों एव वर्गो की पूरी भागीदारी आवश्यक है। राष्ट्र की उन्नति के लिए पूरे समाज का शैशिक, सामाजिक एव आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ होना आवश्यक है।

जहाँ शिक्षा समाज व राष्ट्र की उन्नति का आधार है वही शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया की आधार शिला है। किसी देश में शिक्षा रूपी तंत्र के संचालन में शिक्षक महान विशाल पहिया का कार्य करता हैं। चीन देश की प्रचलित कहावत में ठीक की कहा गया है कि अगर किसी कार्य का संपादन एक वर्ष के लिए करना चाहते हैं तो उसका बीजारोपण कीजिए, अगर दस वर्ष के लिए करना चाहते हैं तो वृक्षा रोपण कीजिए और अगर सौ साल के लिए करने की इच्छा रखते हैं तो मनुष्य का सही निर्माण करें।

मानव सभ्यता के विकास में शिक्षा का बडा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत में प्रारम्भिक काल से गुरूकुल की परम्परा चली आ रही है। व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में शिक्षा का महत्व उच्च वर्ग में सबसे अधिक समझा गया, जिसके कारण राजपरिवार के बालकों को शिक्षित करने के लिए योग्य अध्यापक चुने जाते थे। अपने जीवन काल में, जितने प्रकार के कार्य किसी राजपुत्र को करने होते थे, उन सभी का शिक्षण अनुभवी अध्यापकों द्वारा उन्हें प्रदान किया जाता था। उच्च वर्ग में भी शिक्षा के महत्व को समझा जाता था। बालकों को गुरूकुलों में अपेक्षित ज्ञानार्जन हेतु रखा जाता था। सामान्य वर्ग के लोग कालान्तर में शिक्षा का महत्व समझने लगे। और अपने बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था करने लगे। धीरे-धीरे विद्यालयों का विकास हुआ और विश्वविद्यालय भी स्थापित हुए। जिनमें तक्षशिला,

नालन्दा, विक्रमाशिला आदि अत्यधिक विख्यात हुए। विश्व स्तर पर भी शिक्षा के महत्व को पहचाना गया और इसे सामाजिक विकास का अभिन्न अंग समझा गया। ऐसे कई दृष्टान्त मिलते हैं, जिसमें किसी शासक ने अपने देश के विकास के लिए शिक्षा को महत्व दिया। पीटर, कैथरीन, फ्रेडरिक, नेपोलियन इत्यादि का नाम ऐसे शासकों में विशिष्ट स्थान रखता है। 17वीं व 18वीं शताब्दी में कुछ यूरोपीय देशों और अमेरिका में शिक्षा के महत्व को पहचाना गया और कई पुस्तकालय, शोधशालाएँ, एव सोसाइटियों की स्थापना की गयी। 19वीं शताब्दी में औद्योगिक प्रगति का विशेष स्थान है। औद्योगीकरण के लिए तकनीकी शिक्षा का कितना महत्व है। यह एहसास किया गया। साथ ही शिक्षित समाज ही सही दिशा में आर्थिक और औद्योगिक विकास कर सकता है। इस प्रकार की विचार धारा का विकास हुआ। विश्व में पाँच देश ऐसे थे, जहाँ 1870 से 1880 के दशक में एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया और प्राथमिक शिक्षा को हर बच्चे के लिए अनिवार्य कर दिया गया। ये देश थे, इग्लैण्ड फ्रांस, जर्मनी, जापान एवं अमेरिका 1 अगले 100 वर्षो में इन चारों देशों का इतिहास साक्षी है कि इन सभी ने विभिन्न क्षेत्रों में कितनी प्रगति की। जब 1772-73 में हाउस आफ कामन्स में इस्ट इण्डिया कम्पनी के आज्ञा को पुन· जारी करने के सम्बन्ध में वाद विवाद हुआ। तब विल्बरफोर्स ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमें ऐसे कदम उठाने पर बल दिया गया था, जिसने भारतीयों में उपयोगी ज्ञान की वृद्धि के लिए कुछ किया जा सके। इसी तरह समय-समय पर अनेक प्रयासों समाज सुधारकों एवं अग्रेज गवर्नर जनरलों के प्रयास से भारतीय समाज में शिक्षा का प्रसार होता रहा तथा इलाहाबाद संयुक्त प्रांत में होने के नाते शिक्षा नीतियों से विशेष रूप से प्रभावित रहा।

जब अंग्रेजी इस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के विभिन्न भागों में प्रदेशों को हस्तगत किया तब उसे पता चला कि हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों की अपनी-अपनी शिक्षण संस्थाएँ थीं, जो उनके धर्म के साथ सम्बन्धित थी। पण्डित

अपनी पाठशालाओं में हिन्दुओं को संस्कृत पढाते थे तथा मौलवी मजिस्दों में मुसलमानों को तालीम देते थे। आरम्भ में कम्पनी ने भारतीय पद्धति को निर्बाध रूप से चलने दिया तथा भारतीय नरेशों के द्वारा दिये गये धर्मस्व का समादर किया। वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की, जिससे मुसलमान नवाबजादों के लडकों को राज्य में उत्तर दायित्वपूर्ण तथा अच्छे पदों के लिए प्रशिक्षित किया जा सके। आरम्भ किये गये विषयों में धर्म, शिक्षा, तर्क, छन्द, व्याकरण, कानून, सास्कृतिक दर्शनशास्त्र, ज्योतिष रेखागणित तथा गणित थे। कुछ वर्षों के पश्चात्, जान ओवन जो बंगाल प्रेसीडेन्सी का चैपलिन था। सरकार से प्रार्थना की कि वह उन प्रान्तों के निवासियों को अग्रेजी पढाने के लिए स्कूल स्थापित करे। उसकी प्रार्थना की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया तथापि कुछ वर्षो के पश्चात् एक अन्य शिक्षण संस्था बनारस में स्थापित की गयी, जिसमें हिन्दुओं को कानून, साहित्य तथा धर्म की रक्षा तथा वृद्धि के लिए उसी प्रकार प्रशिक्षित किया जा सके, जिस प्रकार मुसलमानों के लिए पूर्वोक्त मदरसा खोला गया था। विशेष रूप से इसका उद्देश्य यूरोपीय न्यायाधीशों के लिए हिन्दू सहायकों का प्रबन्धन करता था।

आधुनिक काल में विभिन्न यूरोपीय देशों ने विश्व के अलग-अलग देशों में अपना प्रभाव स्थापित किया और अन्तत अपना साम्राज्य फैला लिया। भारत में अठरहवी शताब्दी में धीरे- धीरे ब्रिटिश शासन का विकास होने लगा। और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश तक देश में ब्रिटिश शासन की स्थापना हो गयी। धीरे-धीरे प्रशासन शैक्षिक नीति का विकास करने लगा और अपनी प्रशासकीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शैक्षिक विस्तार की योजना बनाई गयी। 1813 का चार्टर एक्ट और 1835 का निर्णय इस दिशा के महत्वपूर्ण निर्णय हैं। सन् 1854 में चार्ल्सवुड की शिक्षा योजना भारत सरकार को भेजी गयी और डलहौजी ने इसे लागू किया सन् 1857 में कलकत्ता, बम्बई व मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित किये गये। वुड की योजना के अन्तर्गत प्रांथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित

होते रहे। समय-समय पर कई शिक्षा आयोग गठित हुए, जिनमें हण्टर आयोग, रैले आयोग और सैडलर आयोग विशेष महत्व रखते हैं।

शिक्षा जगत में इलाहाबाद का विशेष महत्व रहा है। इसका मूल कारण यह था कि आधुनिक युग में इलाहाबाद का महत्व उत्तरोत्तर बढता ही गया। बक्सर के युद्ध के पश्चात् जो शान्तिवार्ता हुयी उसका पटाक्षेप इसी नगर में हुआ। शाह आलम द्वितीय ने बंगाल, बिहार, उडीसा की दीवानी इस्ट-इण्डिया कम्पनी को इलाहाबाद में ही प्रदान की। सुजाउद्दौला के साथ 1765 की संन्धि भी इलाहाबाद में ही हुयी। गगा यमुना का संगम होने के कारण जलमार्ग से व्यापार का भी यह केन्द्र था। संयुक्त प्रात की राजधानी भी आगरा से इलाहाबाद स्थानान्तरित हुयी। शिक्षण सस्थाओं में पहले म्योर सेंट्रल कालेज की स्थापना 1872 और विश्वविद्यालय की स्थापना 1887 ई0 में हुयी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय देश का पाँचवाँ विश्वविद्यालय था और प्रांत का पहला। ब्रिटिश शासन के काल में प्राइमरी, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा का केन्द्र प्रादेशिक राजधानी होने के कारण बना रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजधानी लखनऊ थी, किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद का मुख्यालय, इलाहाबाद बना रहा। नगर में कैथोलिक और प्रोटेस्टेस्ट मिशनरियों द्वारा संचालित अनेक विद्यालय विकसित हुए।

नैनी का कृषि महाविद्यालय अपनी श्रेणी का संम्पूर्ण देश में एक विशिष्ट विद्यालय हैं इस नगर में बडी सख्या में संस्कृत पाठशालाओं का भी विकास हुआ और मुश्लिम सम्प्रदाय के मकतब और मदरसे भी बडी संख्या में मेरे अध्ययन काल में विकसित हुए। सन् 1961 में एक मेडिकल कालेज और एक इन्जीनियरिंग कालेज की स्थापना नगर में हुयी। अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु बी0 एड0 एवं एल0 टी0 इत्यादि के कोर्स चलते हैं। सेण्ट्रल पैडागोजीकल इन्स्टीट्यूट, मनोविज्ञानशाला, राजकीय अभिलेखागार एवं गृह विज्ञान महाविद्यालय नगर की शिक्षण सुविधा को विविधता प्रदान करते है।

इलाहाबाद ही नहीं अपितु पूरे भारत की सम्पूर्ण शिक्षा का आधार प्राथमिक शिक्षा है, किसी भी देश में शिक्षा प्रणाली के विकास में अधिकतम महत्व प्राथमिक शिक्षा का ही है। शहर के विद्यालयों को यदि विभिन्न श्रेणियों में बाँटा जाय तो, प्राथमिक विद्यालय माध्यमिक़ विद्यालय एवं उच्च शिक्षा के केन्द्र विशेष स्थान प्राप्त करेंगे। विश्व के सभी देशों में प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा एक आम आदमी के लिए आवश्यक समझी गयी है। वस्तुत प्राथमिक शिक्षा को विश्वभर में वरीयता दी गयी है।

इलाहाबाद शहर में स्वतत्रता प्राप्ति के 50 वर्ष पूरे होने पर भी प्राथमिक शिक्षा में कहीं न कहीं ऐसी कमी बनी हुयी है, जिसके कारण सम्पूर्ण व्यवस्था कमजोर बनी हुयी है। शहर के प्राथमिक विद्यालयों का निरीक्षण करने से पता चलता है कि शहर में कई प्रकार के प्राइमरी विद्यालय चल रहे हैं, जिनमें, राजकीय सहायता प्राप्त, तथा मिशनरियों द्वारा स्थापित प्राथमिक विद्यालय तथा अनेक ट्रस्टों के द्वारा सचालित विद्यालयों का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। इसके अलावा भी मुस्लिम प्राथमिक शिक्षा मकतबों के द्वारा प्रदान की जाती है, जो शहर के लगभग हर मस्जिद में प्रदान की जा रही है। सस्कृत प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की भी कमी नहीं है। यह बात अलग है कि जो महत्व पहले संस्कृत शिक्षा का था अब वह नहीं रहा फिर भी आज संस्कृत शिक्षा प्रदान करने वाले अनेक प्राइमरी माध्यमिक व महाविद्यालय शहर में स्थित हैं, जिनमें से कुछ मान्यता प्राप्त है तथा कुछ को मान्यता भी नहीं मिली है।

शहर के प्राथमिक शिक्षा के इतिहास के बारे में जानने से यह पता चलता है कि पूरे ब्रिटिश शासनकाल में निरक्षर बच्चों की संख्या एक समस्या बनी रही। विद्यालय खुलते थे किन्तु शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों की संख्या अधिक रहती थी। यह सत्य है कि इलाहाबाद संयुक्त प्रांत की राजधानी होने के कारण एक अलग महत्व रखता था किन्तु शिक्षा का समुचित विकास नहीं हो सका और प्राथमिक

शिक्षा के क्षेत्र में अधिक ससाधन जुटाने और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता थी।

नगर का सर्वेक्षण करने से पता चलता है कि ईसाई मिशनरियों के पास वर्तमान समय में सैकडों एकड भूमि है, जहाँ उनके चर्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय, अस्पताल और अन्य धार्मिक स्थल विद्यमान हैं।

जमुना पार के इलाके में नैनी क्षेत्र में इलाहाबाद एग्रीफल्चरल इन्स्टीट्यूट का बडा विशाल प्रांगण है। यह कहा जा सकता है कि नगर में अग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने के लिए मिशनरियों ने बड़ी संख्या में विद्यालय खेले, जिसमें गर्ल्स हाईस्कूल, व्यायज हाईस्कूल, सेण्ट मेरीज कानवेण्ट, सेण्ट जोसेफ, बिशप जान्सन, मेरी लुकस और बेंथनी कानवेण्ट इत्यादि हैं। जिनकी विशेष चर्चा की जा सकती है, इन्हीं के द्वारा सचालित हिन्दी माध्यम के विद्यालय हैं, जिसमें विशेष, मेरीवाना मेकर, गर्ल्सहाईस्कूल, सेण्टएन्थनी कालेज व क्रास्थवेट गर्ल्स इण्टर कालेज आदि प्रमुख हैं।

अग्रेजी माध्यम के प्राथमिक स्कूलों के द्वारा सरकारी अनुदान नहीं लिया जाता जबकि इन्हीं के हिन्दी माध्यम वाले विद्यालय राजकीय सहायता प्राप्त है। ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित विद्यालयों में अनुशासन अन्य विद्यालयों से अच्छा रहता है। और सामान्यत शिक्षण कार्य भी सुचारू रूप से चलता है। इन विद्यालयों में ट्यूशन व कोचिंग का भी बोल बाला है। अधिकतर विद्यार्थियों को उसी स्कूल के अध्यापकों के पास ट्यूशन पढ़ना पड़ता है। चाहे वह कक्षा प्रथम का हो या इण्टर मीडिएट का।

50 वर्षो के शिक्षण की प्रक्रिया देखने पर यह आश्चर्य जनक विडम्बना लगती है कि जो विद्यालय एक ओर अनुशासन के लिए जाना जाता है वहाँ ट्यूशन पके माध्यम से धन अर्जित करना सामान्य बात हो गयी है और शिक्षण का स्तर गिर गया है। आज शहर में अंग्रेजी शिक्षा के अधिकतर विद्यालय सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड व, आई0 सी0 एस0 ई0 बोर्ड से मान्यता प्राप्त हैं। इस प्रकार शहर के

अग्रेजी विद्यालयों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि पिछले 50 वर्षों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वालों की सख्या बढी है, जहाँ मेरे अध्ययन काल के प्रारम्भ में शहर में अग्रेजी माध्यम के थोडे विद्यालय थे तथा उनमें पढने वाले विद्यार्थियों भी संख्या भी अत्यल्प थी वहीं आज शहर के हर कोने में कानवेन्ट स्कूल खुल गये हैं और वहाँ प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा ली जाती है तथा अनेक विद्यार्थी इसके बावजूद भी अग्रेजी माध्यम वाले विद्यालय से निराश होकर हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में दाखिला लेते है।

अंग्रेजी शिक्षा व आधुनिकता शहर के सभी वर्गों में खास तौर से उच्च व मध्य वर्ग में देखने को मिल सकती है। इस अंग्रेजी शिक्षा में बालिकाएँ भी पीछे नहीं हैं वे बालकों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। यह विकास का एक अनुपम उदाहरण है।

जहाँ तक संस्कृत विद्यालयों का प्रश्न है उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इलाहाबाद नगर में बहुत से सस्कृत विद्यालय थे जिनमें सामान्य स्तर से कुछ उच्च स्तर की भी शिक्षा दी जाती थी। पं0 मदन मोहन मालवीय ने प्रारम्भ में एक ऐसे ही विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की, जिसे हरदेव गुरु की पाठशाला कहते थे। सामान्य हिन्दू परिवार के बच्चे इसी प्रकार की पाठशाला में पारम्परिक शिक्षा प्राप्त करते थे। समय के साथ-साथ संस्कृत पाठशालाओं की हालत बिगड़ती गयी और बीसवीं शताब्दी में ये विद्यालय चलते तो रहे किन्तु वित्तीय संकट यहाँ पर बना रहा। जहाँ हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की संख्या में वृद्धि होती गयी वहीं यह देखने में आता है कि उर्दू व संस्कृत माध्यम के विद्यालय कम होते गये।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 50 वर्ष में संस्कृत माध्यम की पाठशाला का महत्व काफी घट गया। संस्कृत प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालय में अभी भी गुरुकुल पद्धति पर शिक्षा प्रदान की जा रही है। नाममात्र की फीस ली जाती हैं फिर भी कई विद्यालय ऐसे है जहाँ विद्यालयों में आवासीय सुविधा

के साथ भोजन कपडा भी दिया जाता है, किन्तु इनमें से कुछ विद्यालय वेद, विद्यालय हैं जहाँ ब्राह्मण बच्चों को उपनयन संस्कार के बाद ही दाखिला मिलता है फिर उन्हें सस्कृत पढाता जाता है तथा वेद का पाठ करने की विधि बताई जाती है।

आज आधुनिकता के इस युग में यह कितनी आश्चर्य जनक बात लगती है कि जहाँ शहर में कानवेण्ट स्कूलों का बोल बाला हैं। जहाँ जाति धर्म का भेद नहीं है, वहीं दूसरी तरफ केवल ब्राह्मण बच्चों को ही शिक्षा दी जाती है, जिनमें प्रमुख रूप से महर्षि वेद विज्ञान विद्यालय व वेदभवन दारागंज का नाम लिया जा सकता है। इस बदलते समय में अभी भी सस्कृत शिक्षण कार्य संघर्ष कर रहा है।

हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों की संख्या सबसे अधिक है। वास्तव में सामान्य वर्ग के नागरिकों के बच्चों के लिए शिक्षा का आधार वही विद्यालय हैं। बच्चा प्रारम्भिक शिक्षा का ज्ञान यदि अच्छे ढंग से किया है तो माध्यमिक शिक्षा के लिए भली प्रकार तैयार होता है और क्रमश· उच्च शिक्षा के लिए भारतीय शिक्षा के इतिहास में बार-बार प्राथमिक शिक्षा के महत्व पर बल दिया जाता है। हिन्दी माध्यम के. प्रा0 विद्यालय में जहाँ कक्षा प्रथम से पाँच तक पढाया जाता है, माध्यमिक विद्यालयों में इण्टरमीडिएट तक पढाया जाता है। इनमें से बहुत से मान्यता प्राप्त हैं तथा अनेक विद्यालय केवल फीस मात्र से अपना गुजारा करते हैं आज स्वाधीनता के 50 वर्ष के बाद भी कुछ विद्यालयों को छोड़कर अनेक विद्यालयों की स्थिति अच्छी नहीं है। शहर के मान्यता प्राप्त हिन्दी मान्यता के विद्यालयों में शिक्षण कार्य के स्तर में क्रमश गिरावट आ रही है, जिसके प्रमुख रूप से प्राचार्य, अध्यापक व कुछ हद तक विद्यार्थी भी, जिम्मेदार है। लेकिन कुल मिला कर शहर में सबसे अधिक छात्र इन्हीं विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बालिका विद्यालयों में भी हिन्दी माध्यम के विद्यालयों में ही अधिकतर बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। आज शहर ही नहीं गाँवों में भी बालिकाओं का परीक्षाफल अवसत में अधिक रहता है।

शहर में आज भी लगभग सभी मस्जिदों में मकतब व मदरसों के माध्यम से मुसलमान बालकों को धर्म की शिक्षा प्रदान की जा रही है, कुछ मदरसे ऐसे है जो बालकों को आवासीय सुविधा भी प्रदान करते हैं। साधारणतया सभी मुश्लिम बालक मदरसों में ही शिक्षा प्राप्त करते है। बलिकाएँ बहुत ही कम इनमें पढ्ती है। बालिकाओं को या तो घर पर माता व पिता ही शिक्षा देते हैं अथवा किसी अध्यापिका को घर पर ही शिक्षा प्रदान करने हेतु वेतन पर रख लिया जाता है।

मकतबों व मदरसों में प्राय सरकारी अनुदान नहीं मिलता न हीं यहाँ के कर्मचारी प्रयत्न ही करते हैं। यहाँ का खर्च, ईद, रमजान, आदि त्योहारों के चढावे तथा दानी मुसलमानों के द्वारा दिये गये दान से चलता है। इस प्रकार अनेक मदरसे इलाहाबाद शहर के मुसलमानों को अरबी, फारसी, उर्दू आदि विषयों का ज्ञान प्रदान कर रहें है। आज आधुनिकता के इस युग में भी इन मदरसों में बालक पैजामा, टोपी, व कुर्ता पहन कर शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

अतं में स्वाधीनता के पचास वर्ष बाद भी अनेक समस्याओं से जूझते हुए भी मजहबी शिक्षा प्रदान करने में मकतब और मदरसे महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रहे हैं यहाँ छात्र कम होते हैं लेकिन यह आश्चर्य का विषय है कि इस विज्ञान के युग में मजहबी शिक्षा के प्रति लोगों के अन्दर लगाव है। तथा उसके विकास के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

उच्च शिक्षा का मेरे अध्यनकाल में तीव्र विकास हुआ, जैसा कि विश्वविद्यालय के अलावा अनेक महाविद्यालय पहले भी स्थापित हो चुके थे लेकिन छात्र कम होते थे लेकिन आज अनेक महाविद्यालयों की स्थापना के बाद भी बहुत से लोग उच्च शिक्षा से वचित रह जाते है। इसी कमी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय के द्वारा 1978 में पत्राचार शिक्षण सस्थान की भी स्थापना की, जिसने उच्चशिक्षा प्रदान करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

शहर में मेरे अध्ययन काल में सबसे आश्चर्य जनक बात देखने को यह मिलती है कि 1961 में एक मेडिकल व इन्जीनियरिंग कालेज की स्थापना हुयी। तथा एग्रीकल्चर इन्स्टीट्यूट व आई0 ई0 आर0 टी0 समेत एम0 बी0 ए0, कम्प्यूटर आदि अनेक तकनीकी विद्यालयों के द्वारा शहर में तकनीकी शिक्षा का समुचित विकास हो रहा है।

इस प्रकार इलाहाबाद शहर के शिक्षण संस्थाओं का अध्ययन व सर्वेक्षण करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वतत्रा के 50 वर्ष बाद भी शिक्षा का स्तर व सुविधाएँ सतोष जनक नहीं है। यह बात एक अलग महत्व रखती है कि आज से 50 वर्ष पूर्व न इतने सुविधा ही विकसित थी फिर भी आज समय के अनुसार वर्तमान विकास को अच्छा नहीं कहा जा सकता है। यदि सरकार ने भी विकास विद्यालय के माध्यम से केवल हरिजनों का विद्यालय खोला है तो आज भी ऐसे संस्कृत वेद विद्यालय हैं, जहाँ केवल ब्राह्मणों को शिक्षा प्रदान की जाती है।

बहुत से कमियों के बावजूद शहर में शिक्षा के क्षेत्र में यथेष्ट विकास हुआ वर्तमान समय में अनेक संस्थाएँ शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण सुधार व विकास के लिए कृत संकल्प व संघर्ष रत हैं।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1 बी0 के0 सरकार — शुक्रनीतिसार (1914)

2 नारायण — हितोपदेश, बम्बई, (1887)

3 विष्णु शर्मन — पंचत्रत, पूना (1894)

4 वेदालकार हरिदत्त — भारत का सांसकृतिक इतिहास, दिल्ली, 1952

5 सैन, जे0 एम0 — हिस्ट्री आफ एलिमेण्टरी एजुकेशन इन इण्डिया, कलकत्ता, 1941

6 सिंह, सुरेन्द्र पाल — शिक्षा दर्शन की भूमिका, इलाहाबाद

7 बाशम, ए0 एल0 — द वडर दैटवाज इण्डिया, लण्डन, 1956

8 बायड, विलियम — हिस्ट्री आफ वैस्टर्न-एजुकेशन, लन्दन, 1964

9 दयाल, बी0 — द डेवलपमेण्ट आफ माडर्न इण्डियन एजुकेशन, 1953

10 देशमुख, सी0 डी0 — इन द पोर्टल्स आफ इण्डियन यूनिवर्सीटीज

11 मार्श मैन, जे0 सी0 — कैरी मार्शमैन एण्ड वर्ड 1864

12 मेह्यू, आर्थर — एजुकेशन इन इण्डिया 1926

13 मुकर्जी एस0 एन0 — हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया 1957

14 नूरुल्ला एण्ड नायक — हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया ड्यूरिंग द ब्रिटिश पीरियड, 1956

15 राधाकृष्णन — रिपोर्ट आफ द यूनिवर्सीटी कमीशन

16 थामस एफ0 डब्ल्यू0 — हिस्ट्री एण्ड प्रास्पेक्ट्स, आफ ब्रिटिश एजुकेशन इन इण्डिया 1891

17 ट्रेवेलियन, सी0 एफ0 — आन द एजुकेशन आफ द पीपुल्स आफ इण्डिया 1838

18 बालहेचेट — सोसल पालसी एण्ड सोसल चेन्ज इन वेस्टर्न इण्डिया, लण्डन 1987

19 वामन बेहराम, बी0 के0 — एजुकेशनल कण्ट्रोवर्सीज इन इण्डिया

20 बनर्जी, एस0 एन0 — लार्ड मैकाले एण्ड हायर एजुकेशन इन इण्डिया, कलकत्ता, 1878

21 बसु, ए0 एन0 — इण्डियन एजुकेशन इन पार्लियामेण्टरी पेपर्स, कलकत्ता 1952

22 बसु, बी0 डी0 — हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इण्डिया–अण्डर द रूल आफ इस्ट इण्डिया कम्पनी, कलकत्ता, 1935

23 बेसेण्ट, एनी — हायर एजुकेशन इन इण्डिया, मद्रास, 1932.

24 बेवन, ई0 — थाट्स आन इण्डियन डिस्कटेन्ट्स लंदन, 1929

25. बोस, सी0 एन0 — हायर एजुकेशन इन इण्डियाः एसे रेड एट द बेथुन सोसाइटी आन 25 अफ्रैल 1878, कलकत्ता, 1878.

26 बोस, राजनरायन — हिन्दू अथवा प्रेसीडेन्सी कालेजर इतिवृता (इन बंगाली) कलकत्ता 1875

27 विलग्रणी सैय्यद अमीर अली — एजुकेशन इन इण्डिया, लंदन, 1902.

28 कारपेण्टर, एम0 — सिक्स मन्थस इन इण्डिया, लंदन,

1868

29 चैपमैन, पी0 — हिन्दू फीमेल एजुकेशन, लंदन, 1839

30 कूपलैंड, सर0 आर0 — विल्वरफोर्स ए नेटिव, आक्सफोर्ड, 1923

31 डफ अलेक्जेण्डर — स्टेट आफ एजुकेशन इन बगाल एण्ड बिहार, कलकत्ता, रिव्यू 1844

32 दत्त हरचन्दर — ऐन एड्रेस आन नेटिव फीमेल एजुकेशन, कलकत्ता, 25 जुलाई, 1855

33 हावेल, ए0 — एजुकेशन इन ब्रिटिश इण्डिया प्रायर टू 1854 एण्ड इन 1870-71, कलकत्ता, 1872

हण्ड्रेड इयर्स आफ द यूनिवर्सीटी आफ कलकत्ता 1957

34 लैटिनर डब्ल्यू0 — हिस्ट्री आफ इण्डीजीनस एजुकेशन इन द पजाब, कलकत्ता,

35 लायलसर. ए0 सी0 — एस्टिक स्टडीज, लण्दन, 1907.

36 महमूद सैयद — हिस्ट्री आफ इंग्लिश एजुकेशन इन इण्डिया, 1781-1893, अलीगढ़, 1895.

37 मैथ्यू आर्थर — द एजुकेशन इन इण्डिया, लण्दन, 1929

38 मिश्रा किशोरी चन्द्र — एजुकेशन इन इण्डिया, कलकत्ता, 1857

39 पारूलेकर, आर0 बी0 — 1 सर्वे आफ इण्डीजीनस एजुकेशन इन

द प्रोविन्स आफ बाम्वे .

2 सलेक्शन आफ द रिकार्ड्स आफ द गवर्नमेण्ट आफ बाम्वे (एजुकेशन)

40 सत्यनाथन, एस0 — हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन द मद्रास प्रेसीडेण्सी, मद्रास, 1994

41 शार्प,एच0 एण्ड रिचे जे0 ए0 — सलेक्सन फ्राम द एजुकेशन रिकार्ड्स आफ द गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, टू, वालूम, कलकत्ता, 1920-22

42 थामस, एफ0 डब्ल्यू0 — द हिस्ट्री एण्ड प्रास्पेक्ट आफ ब्रिटिश एजुकेशन इन इण्डिया, लण्दन, 1891

43 ट्रेवेलियन, सी0 ई0 — 1. आन द एजुकेशन आफ द पीपुल आफ इण्डिया, लण्दन, 1838

2 सलेक्सन फ्राम एजुकेशल रिकार्ड्स आफ द गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, दो भाग

44 एफ0 टी0 विले — एजुकेशन टूडे एण्ड टूमारो

45 बी0 आर0 गेरहार्ट — एजुकेशन आफ द एक्सेप्शनल चाइल्ड

46 डान एण्डम्स — एजुकेशन इन नेशनल डेवलपमेण्ट

47 जार्ज एलेन एण्ड अविन — एजुकेशनल पालिसी मेकिंग

48 जे0 डब्ल्यू0 एरम — एजुकेशनल रिफार्म इन इण्डिया
ए0 बी0 शाह
टी0 बैंमबस

49. निकोलस जान पुस्बी — ऐन इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशनल प्लानिंग

50 गुड, सी0 बी0 — इन्ट्रोडक्शन टू एजुकेशनल रिसर्च, 1963.

51 टर मैन, बी0 डब्ल्यू0 — कण्डक्टिंग एजुकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क, 1972

52 बिशप, एल0 के0 एण्ड जार्ज जे0 आर0 — ओरिजनल स्ट्रक्चर एनालसिस आफ स्ट्रक्चरल कैरेक्टरस्टिक्स आफ पब्लिक एलिमेन्टरी एण्ड सेकेण्डरी स्कूल्स,

53 जे0 पी0 नायक — एलिमेण्टरी एजुकेशन इन इण्डिया

54 पाउला सिल्वर — एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन

55 शुक्ला, पी0 डी0 — टूवर्ड्स न्यू पैटर्न आफ एजुकेशन इन इण्डिया,

56 जेम्सन जे0 एफ0 — यूटिलाइजेशन एण्ड फारमेटिव ओरिएण्टेशन्स टूवर्ड एजुकेशन, 1966

विद्यालयों की वार्षिक पत्रिकाएँ

पत्रिका का नाम		प्रकाशन वर्ष
1 आर्यगरिमा	—	1992
2 मनीषा	—	1994
3 सुरभि	—	1993
4. पत्रिका	—	1996
5. कालेज मैगजीन	—	1990
6 नीराजन	—	1995
7 वार्षिक प्रतिवेदन	—	1987
8. मैगजीन	—	1997
9 अलमजीद	—	1994

10- भारती — 1996

11 स्मारिका — 1995

12 बी0 एच0 एस0 मैगजीन — 1996

शोध पत्रिकाएं

1 दी जनरल आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेस

2 हिस्ट्री आफ इण्डियन फिलाफसी, इलाहाबाद

3 इम्पीरियल गर्जेरियर आफ इण्डिया

4 इण्डियन हिस्टारिकल क्वाटर्ली

5 एजुकेशन कमीशन

6 रिपोर्ट आफ द कलकत्ता यूनिवर्सीटी कमीशन

7 रिपोर्ट आफ द हण्टर कमेटी

8 द पीपुल्स आफ इण्डिया

9 रिपोर्ट आफ द यूनिवर्सीटीज कमीशन, 1903

समाचार-पत्र

1 दैनिक जागरण 1985-95

2 नार्दन इण्डिया 1970-97

3 अमर उजाला 1990-97

4 आज 1985-97

5. टाइम्स आफ इण्डिया 1990-97

6. नव भारत टाइम्स 1995-97

7 हिन्दुस्तान टाइम्स 1995-97

8. स्वतंत्र चेतना 1995-97

9. नेशनल हेराल्ड 1990-97

10 आब्जर्वर 1990-97